॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गंगामहात्म्य
और
स्तुतिरत्नावली

रचयिता

स्वामी उमेश्वरानन्द तीर्थ

प्रकाशक

तीर्थ प्रकाशन

मुमुक्षुभवन-काशी

T.K.Sharma
S. S. BRIJBASI & SONS,
DELHI-6.
BAL KRISHNA
S. S. BRIJBASI & SONS,
BOMBAY.3

श्री गणेशायनमः

श्री गंगामाहात्म्य और स्तुति रत्नावली

पूर्वार्द्ध

श्री स्तुति रत्नमाला तथा श्री गंगामहात्म्यम्

उत्तरार्द्धं

श्रीकृष्ण ध्यान, जप, पूजा, हवन आदि साधना तथा श्रीराम सम्बन्धि साधनाएँ और हनुमान सम्बन्धिसाधनाएँ। परिशिष्ट सहिता।

श्री स्वामी उमेश्वरानन्द तीर्थं विरचिता (पूर्वार्द्धं) स्तुति रत्नमाला संस्कृत श्लोक मंगलाचरण सहिता, उत्तरार्द्धं में गंगामहात्म्य श्रीकृष्ण तथा राम और हनुमान सम्बन्धिसाधनाएँ तथा परिशिष्टम्।

रचयिता व संग्रह कर्ता

श्री स्वामी उमेश्वरानन्द तीर्थ

तीर्थ प्रकाशन

मुमुक्षुभवन–वाराणसी

प्राप्ति स्थान

१—श्री काशी मुमुक्षु भवन, अस्सी, वाराणसी

२—श्रीरामजानकी मन्दिर खोरिपाकड़, बलिया

प्रथम संस्करण सं० २०४२

दीपावली-१९८५

सहायता

मुद्रक

केशव मुद्रणालय

सुधाकर रोड खजुरी, वाराणसी-२

श्री गणेशायनमः

भूमिका तथा ग्रन्थ परिचय

यह छोटा-सा ग्रन्थ अमूल्य रत्न है। भगवत प्रेरणा से भक्तजनों को आनन्द प्रद तथा कल्याण कारक हो, इस दृष्टि से निर्माण किया गया है, इस छोटे से ग्रन्थ में जैसे गागर में सागर भरने का प्रयास हो, वैसे ही प्रयास किया गया है। इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम पूर्वार्द्ध में संस्कृत भाषा में विविध देवताओं की स्तुति से मंगलाचरण किया है। इसलिए स्तुति रत्नमाला नाम रखा गया है। इसके साथ सन्तवाणी भी सुशोभित है। पुनः उत्तरार्द्ध में श्री गंगाजी की महिमा का वर्णन है उसे श्री गंगा-महात्म्य नाम रखा गया है। कलियुग में श्री गंगाजी से बढ़कर पाप नाशक, रोग नाशक, स्वास्थ वर्धक और पवित्र करने वाला दूसरा कोई साधन नहीं है। कहा भी है 'कलौगंगाविशिष्यते' श्री गंगा कलिकाल में विशेष हितकारिणी हैं। गंगाजल साक्षात् ब्रह्मद्रव है, स्नान करते समय मन्त्र बोला जाता है 'विष्णु पादाब्ज सम्भूते गंगेत्रिपथगामिनी। ब्रह्म द्रवेति विख्याते पापं मे हर जान्हवी ।। भगवान् श्रीकृष्ण द्रवित होकर जलरूप होकर संसार का कल्याण कर रहे हैं। वहीं गंगा है। गीता 'स्रोतसामस्मि जान्हवी' गंगाजी को प्रणाम करने का मन्त्र इस प्रकार है। ॐ नमोभगवत्यै, दशपापहरायै, गंगायै, नारायण्यै, रेवत्यै, शिवायै, दक्षायै, अमृतायै, विश्वरूपिण्यै, नन्दिन्यै, ते नमोनमः ।। इस प्रकार मन्त्र द्वारा गंगाजी को प्रणाम करे। गंगा दशहरा को गंगास्नान करने से दश जन्म के दश प्रकार के पाप कटते हैं। इसका भी विवेचन किया गया है। गंगाजल को अमृत कहा गया है। गंगासेवन से चतुर्वर्ग पूर्ण रूप से मिल जाते हैं, इत्यादि का वर्णन है। गंगातट में गन्दा करने से महा पाप होता है, इस कारण गंगा को प्रदूषण से बचाने का प्रयास सभी को अनिवार्य है, गंगाजी देवस्वरुपिणी है, उनको परमपवित्र भाव से ही सेवन करने से पूर्ण फल मिलेगा—आदि ।।

श्री गंगामहात्म्य नारद पुराणान्तर्गत है, वहीं यहाँ उधृत है। पुनः भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान, पूजन, मन्त्रजप, हवन आदि साधनायें उत्तम रूप से उधृत हैं। पुनः श्रीराम भगवान् का ध्यान, मन्त्र, जप, पूजा, हवनादि और हनुमान जी का मन्त्र, जप, हवन, पूजाध्यान आदि का सविधि वर्णन है। उपरोक्त साधनों द्वारा अनेक प्रकार के कष्टों का निवारण बन्धनों से मुक्ति आदि का सुन्दर वर्णन है। किस कार्य की सिद्धि के लिए हनुमानजी को किस प्रकार दीपदान करना चाहिये, इसका भी वर्णन है। परिशिष्ट में दीक्षा शब्द का अर्थ वर्णन और कुमारी कन्याओं का महत्व वर्णन, तथा पूजन का फल आदि का कथन और शरीर के अन्दर होने वाली क्रियाओं की अनेक जानकारियों का वर्णन है, पुनश्च-गर्गसंहिता में वर्णित गोपी-गीत का सरल, सरस संस्कृत भाषा में स्तुति लिखा है। और श्रीकृष्ण के छवि का वर्णन श्रीराधा के सौन्दर्य का वर्णन तथा यमुनाजी की स्तुति का भी अति उत्तम संग्रह है। पुनश्च अन्तिम प्रकरण में अनेक अनुभूत आयुर्वेद के औषधियों का संग्रह भी वर्णित है। इस प्रकार ग्रन्थ की समाप्ति हुई है। इसे पढ़कर पाठकगण साधना कर लाभ उठावें।

धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो।
प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो।
गो माता की मय हो, गो वध बन्द हो।
॥ हर हर महादेव ॥
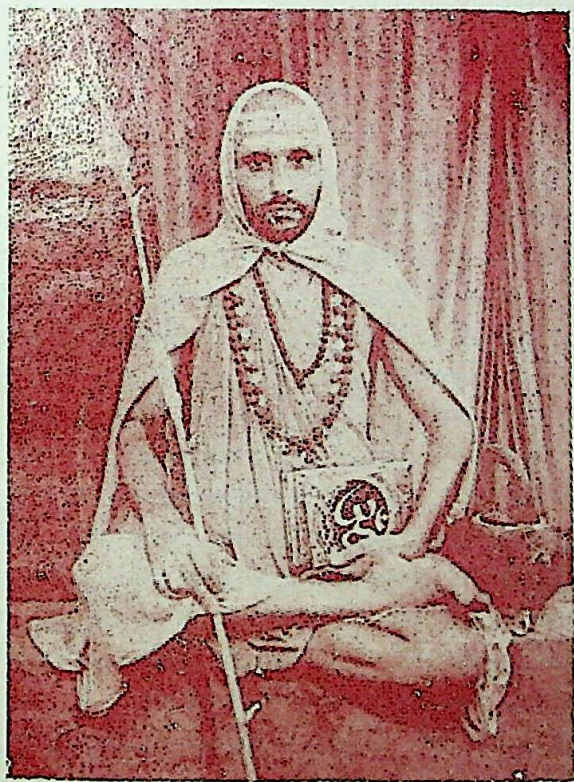
श्री स्वामी उमेश्वरानन्द तीर्थ जी महाराज

श्रीगणेशयनमः

सत्संग महिमा

सत्सङ्गसे—भगवत् कृपा, भगवत भक्ति, संसार से विरक्ति तथा ज्ञान, विज्ञान की प्राप्ति सुलभ होती है। श्रीकृष्ण ने कहा है—"नरोधयति मां योगो न धर्मं सांख्य उद्धव। न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टा पूर्तं न दक्षिणा"॥ इत्यादि-योग से, धर्मं पालन से, सांख्य से, स्वाध्याय, तप, संन्यास इत्यादि से, भी अति शीघ्र भगवत् प्राप्ति सत्संग करने से मिलता है। श्री तुलसीदास जी ने भी लिखा है—सुनिसमुझहिं जनमुदित मन, मज्जहिं अति अनुराग। लहहिं चारिफल अक्षतनु, साधुसमाज-प्रयाग॥ विनु सत्संगविवेक न होई। रामकृपा विनु सुलभ न सोई॥ सठ सुधरहि सत संगति पाई। पारस परसकुधातु सुहाई॥ इत्यादि, सत्संस की महिमा लिखी है। कथा श्रवण की महिमा भागवत् में लिखा है। "पानेनतेदेव कथा सुधायाः प्रवृद्ध भक्त्या विशदाशयाये। वैराग्य सारं प्रतिलम्यवोधं, यथाञ्जसान्वीयुरकुण्ठ-धिष्ण्यम्॥ तथापरे चात्म समाधि योग, वलेनजित्वाप्रकृति वलिष्ठां। त्वामेवधीरा पुरुषंविशान्ति, तेषां श्रमस्यान्नतु सेवयाते॥" भाव यह कि भगवान की कथा-मृत सेवन से भगवत् भक्ति प्रतिदिन बढ़ती है। बढ़ने से अन्तःकरण निर्मल होता, जिसके द्वारा वे वैराग्य सहित बोध प्राप्त कर भगवान के परम धाम को जाते हैं। ज्ञानी लोग भी आत्म समाधि योग बल से वलवती प्रकृति को जीत कर उसी परम पद को प्राप्त करते हैं। परन्तु धीर गम्भीर ज्ञानी को बहुत परिश्रम से प्राप्त होता है। आपके सेवा से सेवक भक्त, भक्ति के द्वारा अनायास ही आपको प्राप्त करता है। सत्सङ्ग लब्ध या भक्त्या। सत्सङ्ग में प्राप्त हुए भक्ति के द्वारा भगवत् प्राप्ति सहज और सुलभ है—

दान महिमा—कलियुग में दान का महत्व बहुत है। सत्य बोलनाया प्रति दिन दान देना दोनों बराबर है। अपने पास जो कुछ धन हो। उसका दसवां

भाग दान करने से धन की शुद्धि होती है। दान न करने से दोष लगता है। लिखा है जो व्यक्ति दान नहीं देता है, वह दरिद्र होता है। दरिद्र होकर पाप करता है। पाप से नरक में जाता है फिर जन्म लेकर दरिद्र होता है फिर नारकी होता है। कभी भी उसे नरक से छुटकारा नहीं मिलता है। पद्मपुराण अदत्तदानांच्चभवेद्दरिद्रो, दरिद्र, भावाच्च करोति पापम्। पाप प्रभावात् नरकं प्रयाति, पुनर्दरिद्रः पुनरेव पापी ॥ जो लोग दान धर्म करते हैं, वे परलोक में इस लोक में सुखी रहते हैं। दान का ही फल है सुख शान्ति पाप का फल है, दुःख दरिद्रता। जो लोग भगवत् अर्पण बुद्धि से निष्काम कर्म करते हैं वे भगवान की कृपा से संसार के दुःख से छूट जाते हैं। जो भगवान के अनन्य भक्त हैं, वे भगवत् धाम को प्राप्त करते हैं। यदि पूजा पाठ स्नान जप संध्या किए विना जो लोग भोजन करते हैं वे मल खाते हैं। 'अस्नात्वाश्नन् मलं भुक्ते अजप्त्वा पूय शोणितम्। अजुहाच्चकृमिम् कीटाम् अददत् च सकृत्तथा।' विना जप किए पीव और खून खाते हैं, विना हवन के कृमि कीट खाते हैं, विना दान दिए जो खाते हैं, वे विष्ठा खाते है। सूर्य को जल देकर भगवान की पूजा कर पवित्रता से भोजन बनाकर भगवत् अर्पण कर प्रसाद रूप में भोजन करे। केवल अपने उदर पूर्ति के लिए नहीं। गीता में लिखा है। 'यज्ञ शिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्व किल्विषैः भुञ्जतेतेत्वघं पापा ये पचन्त्यात्म कारणात्'। पञ्च महायज्ञ करके बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ट पुरुष सब पापों से छूट जाते हैं। जो पापी लोग अपने शरीर पोषण के लिए पकाते हैं। वे पाप ही खाते हैं। धर्म-सत्कर्म हमारा मित्र है, पाप-कर्म हमारा दुश्मन है, पुण्य परलोक तक सुख देता है। पाप नरक में डाल कर दुख देता है।

श्रीः हरिः

विषय-सूचि

क्रम सं०	कार्य विवरण	पृ० सं०

तत्सत्

विविध देवता स्तुति

ॐ परमात्मनेनमः श्रीगणेशायनमः श्रीसरस्वत्मैनमः गुरवेनमः गोविन्दायनमः व्यासायनमः नरनारायणाभ्यांनमः नमः शिवाय विष्णवेनमः नमोभगवतेवासुदेवाय दुर्गायैनमः ब्रह्मणे नमः

परमात्मनः स्तुति

यत्पादतोयं भवरोगवैद्यो, यत्पादपांशुर्विमलत्व सिद्धचै।
यन्नाम दुष्कर्मनिवारणाय, त्वमप्रमेयं पुरुषं नमामि ॥ १ ॥

श्रीगणेश स्तुति

शैलेन्द्रजादेहभवं सुमंगलं,
बुद्धिप्रदंशोक विनाशदक्षम्।
सिद्धिप्रदं ज्ञानप्रदं गजाननं,
नमामितंविघ्नहरं गणाधिपम् ॥ २ ॥

सरस्वती स्तुति

ज्ञानामृताब्धिरस सारमयीं सुनेत्रीं,
शुल्काम्बरां कनकभूषणभूषिताङ्गीम्।
वीणाञ्च पुस्तकधरांस्फटिकाख्यमालां,
वाणीं नमामि अभयां सुमुखीं पराम्बाम् ॥ ३ ॥

गोविन्दस्तुति

गोपालबालकैर्नित्यं, क्रीडन्तंयमुना तटे।
गोविन्दं सच्चिदानन्दं, नमामिसततंहरिम् ॥ ४ ॥

व्यासस्तुति

एकवेदस्यचत्त्वार शाखाकृत्वासविस्तरम्।
इतिहासपुराणानां, व्याख्यातारंनमोस्तुते ॥ ५ ॥

शिवस्तुति

मृडंधूर्जटिं सर्वदुःखाप हारिं,
शिवं शंकरं शूलपाणिंवरेण्यम्।
जगत्पूजनीयं प्रसन्नञ्च शान्तं,
नमोस्तुमहेशं सुमुक्तिप्रदंतम् ॥ ६ ॥

विष्णुस्तुति

यस्य स्मरणमात्रेण, यज्ञदानादिका क्रिया।
सद्यःसम्पूर्णतां यान्ति, तंविष्णुं प्रणमाम्यहम् ॥ ७ ॥

वासुदेवस्तुति

श्रीवासुदेवं वसुदेवपुत्रं, श्रीदेवकीनन्दनकृष्णचन्द्रम्।
श्रीरच्युतं वंशीधरं वरेण्यं, नमामितुभ्यंसुखदंसुशान्तम् ॥ ८ ॥

दुर्गास्तुति

सुशान्तिदात्रीं जननीष्टदात्रीं, सनातनी त्वां सुजनैसंपूज्याम्।
अनन्तदुःखौघविनाशदक्षां, नमामिदुर्गांजनदुःख हन्त्रीम् ॥ ९ ॥

सूर्य स्तुति

आदित्यमण्डलस्थंतं, शंखचक्रवरं प्रभुम् ।
किरीटिनं कुंडलिनं हिरण्यवपुसंभजे ॥ १० ॥

राधास्तुति

सदाषोडशवार्षिक्यां, श्रीकृष्णप्राणवल्लभाम् ।
वृषभानुसुतां राधां, नमामिसकलार्थदाम् ॥ ११ ॥

श्रीकृष्णस्तुति

अनन्तसौन्दर्यमनन्तधामं,
अनन्त आनन्द अनन्त नामम् ।
अनन्त गोपीजन सेविताङ्गं,
नमामिकृष्णं पुरुषोत्तमोत्तमम् ॥१२॥

लक्ष्मीस्तुति

स्वराज्य साम्राज्य विभूतिदायिनीं,
अनन्त आनन्द सुधा प्रदायिनीम् ।
सौभाग्य लक्ष्मीं भुवनैकपालिनीं,
नमामि नित्यं सुखदां सुशान्तिदाम् ॥१३॥

जगत्गुरुस्तुति

जगद्गुरुं जगद्वन्द्यं, जगत् पूज्यं सनातनम् ।
गोविन्दपाद शिष्यं तं शंकरं प्रणतोऽस्म्यहम् ॥ १४ ॥

गुरुवन्दना

ब्रह्माविष्णु महेशाख्यं शिष्याज्ञान विनाशकम् ।
मनोवाञ्छितदातारंतं गुरुं प्रणतोस्म्यहम् ॥ १५ ॥

गंगास्तुति

विष्णुपादोद्भवां दिव्यां त्रिलोक पावनीं शिवाम् ।
नमामि जाह्नवीं गंगा, भुक्तिमुक्ति प्रदायिनीम् ॥ १६ ॥

नारायणस्तुति

आपनार इति, प्रोक्तः तत् तस्य अयनं शुभम् ।
नारायणाख्यं तं विष्णुं, प्रणमामि निरन्तरम् ॥ १७ ॥

इन असंख्य तारों और नभ मण्डल के सिरजनहार की नजर जहाँ कहीं भी होगी वहीं रहेगी ऐसा विचार कर सदा सर्वदा सावधान रहना ।

ईश्वर के भजन पूजन में दुनियाँ की चीजों को भूल जाता है उन्हें सब चीजों में ईश्वर ही ईश्वर दिखायी देता है । (सन्तवाणी)

जो मन की मलीनता से रहित दुनियाँ के जंजाल से मुक्त और लौकिक तृष्णा से विमुख हैं वही सच्चे सन्त हैं । (सन्तवाणी)

जो मनुष्य ईश्वर में लीन रहता है और सुनने तथा देखने लायक उसी को समझा है उसने सब कुछ सुन लिया है देख लिया है और जान लिया है । (सन्तवाणी)

ईश्वर को पाने के लिये जिसका हृदय तरस रहा है उसी का जन्म धन्य उसी की माता धन्य है कारण उसका सर्वस्वतो उस ईश्वर में समाया हुआ है । (सन्तवाणी)

जो छोटे-छोटे प्राणियों से प्यार नहीं कर सकता वह ईश्वर से क्या प्यार करेगा । (सन्तवाणी)

|| श्रीगणेशायनमः ||

* श्रीगणेशस्तुतिः मङ्गलाचरणम् *

गणाधिपं तं गुण ग्रामवारिधिं, शैलेन्द्रकन्यात्मजवाञ्छितप्रदम् ।
अशेषनिर्विघ्नकरं सुमंगलं, नमामिविघ्नेश्वर पादपङ्कजम् ॥ १ ॥

गजाकृतितं गणनाथमेकं, शैलेन्द्रजायात्म समुद्भवंच ।
विद्याप्रदं बुद्धिप्रदञ्चलोकान्, विघ्नेश्वरं विघ्नहरं नमामि ॥ २ ॥

चतुर्भुजं सुन्दरमेकदन्तं, शङ्खाङ्कुशं मोदकमेक हस्तम् ।
वक्षायतं तुङ्गमहोदरं शुभं, नमामिनित्यं गणनायकं विभुम् ॥ ३ ॥

पार्वती तनयं देवं कोटि सूर्य सम प्रभाम् ।
निर्विघ्नं कुरुमेनित्यं प्रसन्नोभव सर्वदा ॥ ४ ॥

एकदन्तं वक्रतुण्डं, सर्वविघ्नविनाशकम् ।
भालचन्द्रं शान्तमूर्ति, सूपकर्णमसुशोभनम् ॥ ५ ॥

मंगलायतनं शान्तं, वाञ्छितफलदायकम् ।
कोटिसूर्य समाभासं, चन्द्रकोटि समाननम् ॥ ६ ॥

कोटिकन्दर्पलावण्यं, कोटिसद्गुणसागरम् ।
सर्वत्रानन्ददातारं, मंगलागार सर्वदा ॥ ७ ॥

सिद्धिबुद्धि समायुक्तं, क्षेमलाभसमन्वितम् ।
ज्ञानदं बुद्धिदं देवं, तं नमामि गजानम् ॥ ८ ॥

इति स्वामी उमेश्वरानन्दविरचितंगणेशाष्टकम्

•

श्रीसरस्वत्यष्टकम्

श्रीशारदाम्ब विमलाम्बरशुक्लवर्णां,
वीणाधरां सुधवलां कलहंस रूढाम् ।
ज्योतिर्मयं स्फटिकहारधरां सुकण्ठीं,
हस्तेक पुस्तकधरां प्रणमामिवाणीम् ॥ १ ॥

घोरान्धकारहृदि मे ज्वलयन् सुज्योतिं,
ज्ञानं प्रदाय सततं विपुलाञ्चनित्यम् ।
मातः प्रदातु निजभक्त जनाय मुक्तिं,
त्रायस्व मां भगवती भवताप तप्तम् ॥ २ ॥

सरस्वतीं शुक्ल सुहंसवाहिनीं,
श्वेतांम्बरां श्वेत सरोज वासिनीम् ।
श्वेतां सुदिव्यां स्फटिकाख्यमालिनीं,
सुधामयीं भारतीभास्वतीं भजे ॥ ३ ॥

आनन्ददात्रीं सुप्रकाश दात्रीं,
सौभाग्यदात्रीं जननीं सुपात्रीम् ।
सर्वेषु शास्त्रेषु सुबोधदात्रीं,
श्रीभारतीं त्वां प्रणमामिनित्यम् ॥ ४ ॥

संसार सागर समुत्तरणाय भक्त्या,
ध्यायन्तित्वां सुकवयोहृदिभावयुक्ताः ।
सम्प्राप्यज्ञान मचलं तवसुप्रसादात्,
संसारजं सकलदुःखतरन्तिपारम् ॥ ५ ॥

समुज्ज्वलां दिव्य विभूषिताम्बरां,
संसार दुःख दहनां सततं स्मरामि ।
त्वत्पादभक्त्या सुलभं सुदुर्लभं,
सर्वत्रस्वानन्द सुधांपिवाम्यहम् ।। ६ ।।

ज्ञानामृताब्धि रससारमयीं सुनेत्रीं,
शुक्लाम्बरां कनकभूषणभूषिताङ्गीम् ।
वीणां सुपुस्तकधरां स्फटिकाख्यमालां,
विद्यांनमामि सततमभयां पराम्बाम् ।। ७ ।।

सरस्वत्याष्टकं दिव्यं, भक्तिभाव समन्वितम् ।
पठनात् शारदा नित्यं, ददातिविमलामति ।। ८ ।।

श्री स्वामी उमेश्वरानन्दतीर्थं विरचितम् सरस्वत्याष्टकसंपूर्णम्

श्री सरस्वती स्तोत्रम्

श्वेताम्बरां हंस मुसेवितातां,
मृडाल पुष्पोपरि संषिशाञ्च
बीणा नदन्तीं स्वर साधयन्ती,
नमामि वाणीं जन शान्तिदात्रीम् ।।१।।

सरस्वतीं वेद विशारदां परां,
विमुक्तिदां नित्य सुधाब्धिधामदाम् ।
अलौकिकां लोकसुबुद्धिदां त्वां,
नमामि कोटीन्दु समं मुचिस्मिताम् ।।२।।

वराभय पुस्तक मालिकामयीं,
स्वरैश्चवर्णालय गान तत्पराम् ।
वेदान्त विज्ञानघनाञ्च शारदां,
नमामितां चन्द्रमुखीं समुज्ज्वलाम् ।।३।।

हारै सुंवासैश्च किरीटकुण्डले,
करद्वये वल्लकिना सुशोभिते ।
उत्तुङ्ग वक्षस्थलरत्न शोभितां,
नमामी वाणीं सकलार्थं दायिनीम् ॥४॥
ऐंकार पूर्वं च सरस्वतीञ्च,
युक्तं चतुर्थी नमः शब्द मुत्तरम् ।
कृत्वातु पञ्चायुत जापकाय,
सिद्धि प्रदात्रीं प्रणमामि वाणीम् ॥५॥
शास्त्रर्थं सारं परमार्थं सारं,
विज्ञान सारं शुभज्ञान सारम् ।
स्वरमलंकार गतं सुसारं,
तां शारदां नित्य नमामि भक्त्या ॥६॥

ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं सरस्वत्यै नमः "इति मन्त्र"

ह्रींकार रूपां सुमुखीं विशुद्धां,
ऐंकार रूपां विमलां सुबोधाम् ।
धींकार रूपां हृदये विशन्तीं,
क्लींकार रूपां प्रणमामि वाणीम् ॥७॥
सौंकार रूपां सुखदां च नित्यं,
श्रींकार रूपां सकलार्थं दाञ्च ।
सरस्वतीं शान्तिप्रदां सदात्वां,
नमामि नित्यं परमार्थ तत्त्वाम् ॥८॥

शारदाष्टकमिदं पुण्यं, सर्वं शास्त्र फल प्रदम् ।
पठनात् मननात् ध्यानात्, भवति विमला मतिः ॥

इति श्री स्वामी उमेश्वरानन्दविरचितम् सरस्वती स्तोत्रम् ।

सरस्वती स्तोत्रम्

नवार्क विम्बद्युति मुग्दलत् हलत्,
 ताटंक केयूर किरीट कङ्कणम् ।
स्फुरत्क्वणन्नूपुराव रञ्जितां,
 नमामि कोटिन्दुमुखीं सरस्वतीम् ॥१॥
वन्दे सदाऽहं कलहंस उद्वते,
 चलत्पदे चञ्चल चञ्चुसम्पुटे ।
निर्धौत मुक्ता फल हार सञ्चयं,
 संधारयन्तीं सुभगां सरस्वतीम् ॥२॥
वराभयं पुस्तक वल्लकीयुतां,
 परं दधानं विमले करद्वये ।
नमाम्यहं त्वं शुभदां सरस्वतीं,
 जगन्मयीं ब्रह्ममयीं मनोहराम् ॥ ३ ॥
तरङ्गितांक्षौमसिताम्बरे परे,
 देहि स्वरज्ञानमतीव मङ्गले ।
येनाद्वितीयोहि भवेयमक्षरे,
 सर्वोपरिस्यां पर राजमण्डले ॥ ४ ॥
शुल्कां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद् व्यापिनी,
 वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्तेस्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां,
 वन्देतां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ ५ ॥
इति सरस्वतीस्तोत्रम् ।

श्रीदुर्गास्तवनम्

महाकाली महालक्ष्मी, महासरस्वती शिवे ।
जगदम्बे महामाये, शक्तिरूपे नमोऽस्तुते ॥ १ ॥

सुमाङ्गल्ये महेशानि, सच्चिदानन्दरूपिणे ।
सर्वदुःख हरे देवि, मातर्दुर्गेनमोऽस्तुते ॥ २ ॥

सिंहस्कन्धसमारूढे, सशस्त्रैसंमलंकृते ।
अभयं कुरू मे मात, तस्यैनित्यैनमोनमः ॥ ३ ॥

सृष्टि स्थितिलय कर्त्री, परिपूर्णाच सर्वदा ।
गौराङ्गीदैत्यदमनीं, मातर्तस्यै नमोनमः ॥ ४ ॥

भक्तानां सुखदां नित्यां, योगक्षेमकरीं सदा ।
भयान्मे त्राहित्वन्नित्यं, दुर्गेदेविनमोस्तुते ॥ ५ ॥

शरणागतदीनानां, आर्तित्राण परायणे ।
संसारभयनाशिन्यै, देव्यैतस्यै नमोनमः ॥ ६ ॥

उमासती दाक्षायणी, पार्वती त्वां वरानने ।
सर्वत्रास हरे देवि, महेशानि नमोऽस्तुते ॥ ७ ॥

सच्चिदानन्दरूपायैं, धात्र्यैशान्त्यैनमोनमः ।
अनन्तभूति पूर्णायै, देव्यैतस्यै नमोनमः ॥ ८ ॥

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड, नायिके परमेश्वरि ।
सन्मतिदान शिलायै, तस्यैदेव्यै नमोनमः ॥ ९ ॥

अजरामरकारिण्यै भुक्तिमुक्तिञ्चसम्पदम् ।
अनन्त धनधान्यादि, दात्र्यैंदेव्यै नमोनमः ॥ १० ॥

इति श्रीनवदुर्गास्तोत्रम् सम्पूर्णम्

स्वामी उमेश्वरानन्दतीर्थविरचितम् दुर्गास्तवनंपूर्णम् ।

श्रीसदाशिवस्तवनम्

शिवं शंकरं ध्यानगम्यं महेशं,
चलत् कुण्डलं शेषनागाङ्कितं तम् ।
जटाजूटमध्ये लसत् वारि गांगं,
ललाटेऽर्धचन्द्रं दधानं नमामि ॥ १ ॥
त्रिनेत्रं सुवक्त्रं गले मुण्डमालं,
त्रिपुण्ड्रं च भाले सुरेखाङ्किताहि ।
चतुर्दिक् प्रकाशं रविकोटिभासं,
भयं हारिणंतं, नमामि महेशम् ॥ २ ॥
जगज्जाल संहारकं तं सुवेषं,
प्रचण्डाट्टहासं प्रकुर्वन् सुनृत्यन् ।
सुढक्कां नन्दतं जटा विस्फुरन्तं,
विभुमेकशेषं महेशं नमामि ॥ ३ ॥
गले नीलवर्णं कपाले सुगंगां,
तरङ्गावली शोभितां शुक्लवर्णाम् ।
दधानैकदेवं भुवनैकबन्धुं,
नटानां सुराजांनमामि महेशम् ॥ ४ ॥
सुमुद्रादधानं समाधौ सुध्यानं,
सुधासिन्धुमध्येनिमग्नं सदात्वम् ।

सदा निर्विकल्पं चिदानन्दरूपं,
महेशं महादेव देवं नमामि ॥ ५ ॥
शिवं शंकरं शूलपाणि वरेण्यं,
मृडं धूर्जटिं सर्वदुःखापहारिम् ।
जगत् पूजनीयं प्रशान्तं प्रसन्नं,
नमोऽस्तु महेशं सुमुक्ति प्रदन्तम् ॥ ६ ॥
महेशं सुरेशं वृषेशं परेशं,
गणेशेश देवं फणीन्द्रैकमीशम् ।
गजेन्द्रस्य चर्माम्बरं शोभिताङ्गं,
भवानीपतित्वां भजेशान्तमूर्तिम् ॥ ७ ॥
शिवं शान्तिदं ज्ञानराशिं महेशं,
जटाजूटकं शैलदेशेवसन्तम् ।
फणीन्द्रैर्सदास्वाङ्गकं लाञ्छितं तं,
करे शूलढक्कां सुसेवि नमामि ॥ ८ ॥
स्वधामेवसन्तमखण्डैक रूपं,
त्रिनेत्रैकं दिव्यंसुगाम्भीर्यसिन्धुम् ।
ललाटं सुभव्यं त्रिपुण्डं पवित्रं,
प्रशान्तं समुद्रंनिधानं सुज्ञानम् ॥ ९ ॥
विभुं विश्ववन्द्यं शिवं शम्भुमेकं,
सुशान्तं सुधानन्ददं लोकपूज्यम् ।
महेशं वरेण्यं शरण्यं च लोकं,
सदा शान्तिदंतंनमामीशमीड्यम् ॥१०॥
सदात्वं सुपूज्यं प्रशान्तं स्वरूपं,
समाधौ सदात्वं सुलग्नं प्रसन्नम् ।
परामबा भवानी सुसेवा परावा,
भजन्तं सदात्वां कृतार्थाभवित्री ॥११॥

त्रिनेत्रैर्लसन्तं जटा विद्धूनन्तं,
सुनग्न शरीरेविभूतिः लसन्तम् ।
सुभालं लसन्तं चतुर्दिक् भ्रमन्तं,
प्रचण्डाट्टहासं हसन्तं वसन्तम् ॥१२॥

नमामि महेशं शिवं विश्ववन्द्यम् ॥ १२ ॥

शिवं शूलपाणीं विभुंचन्द्र मौलिं,
महादेवदेवं प्रभुंशान्त मूर्तिम् ।
प्रसन्नाननं शुभ्रवर्णं वरेण्यं,
नमामि महेशं सदा शान्त मूर्तिम् ॥१३॥

गिरीशं महेशं विभुमम्बिकेशं,
गणेशैकमीशं शिवं कार्तिकेशम् ।
वृषस्यैकमीशं अहीन्द्रैकमीशं,
महेशं सुपूज्यं नमामि सदात्वम् ॥१४॥

शशीखण्डमौलिः शशीभासभालं,
शशीकोटि वक्त्रं शशीकाशदेहम् ।
स्वयं गौरदेहं सुगौरीश शम्भुं,
सुगौरंवृषंतं सुरूढं नमामि ॥१५॥

गले नीलीमाभं शिवं शुक्लवर्णं,
सदात्वामुदासीन वृतिप्रियोऽसि ।
विभूतिं सदात्वं निजाङ्गे दधासि,
परिधानमेकं सुव्याघ्राम्बरञ्च ॥१६॥

सदानिर्विकल्पो समाधिस्थदेहो,
सुमाङ्गल्यध्यानं सुमुद्रादधासि ।
सदाज्ञानराशि सदानन्दराशि,
नमामि महेशं सदा काशीवासीम् ॥१७॥

विश्वेश्वरो माधव ढुण्ढि राजः,
काशीगुहां जाह्नवीभैरवश्च ।
सदण्डपाणि मणिकर्णिकायै,
बन्दे सदाशंकरमबिकाञ्च ॥१८॥

इति स्वा० उ० श्व० नन्दविचरितं इति शिवस्तोत्रम् ।

श्री विश्वनाथाष्टकम् स्तोत्रम्

विश्वेश्वराय भवरोग विनाशकाय,
गंगातरङ्ग धवली कूलवासकायं ।
ज्योतिर्मय.य शिवलिङ्ग प्रकाशकाय,
काशीश्वराय सततं प्रणमामि तुभ्यम् ॥१॥
विश्वं प्रकाश सततं सकलं प्रदाय,
मोक्षैक धाम कृत दान सदा जनाय ।
आनन्द सिन्धु विलयाय सुविग्रहाय,
विश्वेश्वराय सततं प्रणमामि तुभ्यम् ॥२॥
वाराणसीपुरी निरन्तर सेविताय,
गंगाधराय शशीखण्ड शुशोभिताय ।
व्यालाधिराज निजमौलिसुवेष्ठिताय,
विश्वेश्वराय सततं प्रणमामि तुभ्यम् ॥३॥
श्री काशिकायां स्थित दिव्यलिङ्गं,
प्रकाशते लोक हिताय नित्यम् ।
श्री विश्वनाथस्तवनाम व्यापकं,
भूताधिवासं प्रणमामि नित्यम् ॥४॥

नन्द्यादि भृङ्ग्यादि गणैसुसेवितं,
देवादिमन्वादि जनैः सुपूजितम् ।
आनन्दकन्दं परमंसुमंगलं,
श्री विश्वनाथं प्रणमामिनित्यम् ।।५।।

कैवल्यनिर्माण सुशन्तिधामदं,
ऐश्वर्यमानन्द सुधाप्रदंप्रभुम् ।
श्री शंकरं सर्वजनैः सुवन्दितं,
श्री विश्वनाथं प्रणमामि नित्यम् ।।६।।

नाना विलासैः परिपूरितोऽपि,
सदाउदासीन सदाविरागी ।
त्वयैवदत्तं सकलं सुसम्पदं,
भुञ्जन्ति लोका प्रणमामि तुभ्यम् ।।७।।

महास्मशानेनिवसत् सदाशिवः,
जीवस्यस्थूलादि त्रयंशरीरम् ।
करोति भस्मं स्वप्रदत्तज्ञानात्,
नमामिशम्भोतवपादयुग्मम् ।।८।।

इत्याष्टकं शंकर नाम शोभितं,
येयेपठन्तीह सदादिनेदिने ।
श्री शंभुभक्ति हृदयेभविष्यति,
श्री विश्वनाथस्य सुदर्शनञ्च ।।९।।

श्री स्वामी उमेश्वरानन्द तीर्थ विरचितं शिवाष्टकम्

जो परमेश्वर को पाता है वह अपने रूप में न रहकर प्रभु के रूप में समा जाता है । 'सन्तवाणी'

ईश्वर का स्मरण करो तो ऐसा कि फिर दूसरी बार उसे याद ही न करना पड़े । 'सन्तवाणी'

काशी स्तुति

धन्यासिकाशी शिवधन्यकाशी, गायन्तिमर्त्या सुखदाऽसि काशी।
तवैव क्रोड़े वसतोहि जीवाः, कालात् सुभीता नभवन्ति काशी ॥१॥

धन्यासि काशी सुखशान्ति राशी, घोरान्धकारे घनज्योति राशी।
जीवान् स्वज्ञानेनप्रकाशदाऽसि, धन्याऽसि काशी शिववासदाऽसि ॥२॥

काश्यां मरण मात्रेण, जीवानां श्री सदाशिवः।
ददाति तारकं मन्त्रं, तेन जीवोविमुच्यते ॥३॥

मरणासन्न जीवानां, दक्षिणे कर्णगोलके।
ददाति विमलं ज्ञानं, निर्वाण पददायकम् ॥४॥

अस्मिन्क्षेत्रे मृताजीवा, मुक्ताएव न संशयः।
इतिशास्त्र प्रमाणानि, प्रवदन्तिमनीषिणः ॥५॥

जटा विशाला नयना विशालाः, फणीन्द्रमाला परमा विशाला।
अगाधगाम्भीर्यं विमुक्तिशालां, कालस्य कालं प्रणमामि शम्भुम् ॥६॥

इति काशीषटकम्

ज्योतिर्लिङ्गम्

दिव्यलिङ्गं ज्योतियुक्तं सुपूज्यं, शान्ति दान्ति सद्गतिदान शीलम्।
ये ये लोके सज्जनापूजयन्ति, ते ते सर्वेमोक्षभागी भवन्ति ॥१॥

अम्वान्नपूर्णास्तुतिपञ्चकम्

अम्वान्नपूर्णे जगदम्बिके शिवे, दुर्गेभवानो शिवप्राण वल्लभे।
अनाथनाथेनिजभृत्यवत्सले, मांपाहि नित्यं पतितं त्वदाश्रये ।।१।।

हे दुर्गहन्त्रीजनदुःखनाशिनी, मामुद्धराशु चरणौ प्रदाय हि।
भुक्तिञ्चमुक्तिञ्चददातुनः शिवे, पादाब्जरेणुं शिरसिनिधेहिवः ।। २ ।।

शिवस्य वामाङ्गमलंकृताङ्गी, त्वमन्नपूर्णा शुभदायिनीञ्च ।
शम्भो सदा प्राणसमप्रियात्वं, मनन्यभावां प्रणमामि नित्यम् ।। ३ ।।

मातान्नपूर्णे जनमन्नदात्रीं, सुरासुरैसर्वजनैः सुपूजिताम् ।
भिक्षान्नदत्त्वा त्रिजगत् सुपालिनीं, अम्बान्नपूर्णे प्रणमामिनित्यम् ।। ४ ।।

शिवस्य त्वं नित्य सुसेविकाऽसि, सदाशिवः सर्वजनायमुक्तिः ।
ददाति शाश्वत् मरणेन काश्यां, जीवान्त्वमन्नं प्रददासिनित्यम् ।। ५ ।।
अम्बान्नपूर्णे प्रणमामिनित्यम् ।। इति उमेश्वरानन्दरचितम् अन्नपूर्णा स्तोत्रम् ।

जो मनुष्य ईश्वर को छोड़कर दूसरों से स्नेह करता है वह क्या कभी सुखी हो सकता है ।
'सन्तवाणी'

विना ईश्वर का नाम लिए कोई भी बात विचारने अथवा करने से बड़ी विपत्ति का सामना करना पड़ता है ।
'सन्तवाणी'

जो आदमी अपना सारा संसार और अपने जीवन को भगवत् अर्पण नहीं करता वह दुनियाँ के इस भयानक जंगल को पारकर ही नहीं सकता ।

श्रीरामस्तुति रामचन्द्राष्टकम्

रामं श्यामं राजीवनेत्रं रमणीयं,
सीताकान्तंशान्तंनित्यं सुखकन्दम् ।
शोभादिव्यं मरकतवर्णं नृपतीशं,
वन्दे रामं नवनलिनाभमवधेशम् ॥ १ ॥

नानाद्रव्यैर्पूजितनित्यं शिवपूज्यं,
नानाशास्त्रैर्वन्दितनित्यं सुखकन्दम् ।
नानाभोगैर्शोभितनित्यं समसेव्यं,
वन्देरामं धरणीजायासम सेव्यम् ॥ २ ॥

रामं नित्यं सायक चापं करधारिं,
शोभा पुञ्जं रत्नकीरीटं शिरसेव्यम् ।
रामंराज्ये राजविराजं नृपश्रेष्ठं,
वन्दे रामंश्यामलकायं सुखपुञ्जम् ॥ ३ ॥

दण्डकविपिने त्राणविहीन प्रचलन्तं,
लक्ष्मण सीतासहचरनीतं विचरन्तम् ।
ना ना वृन्दै ऋषिजन सहितैर्भजनीयं,
वन्दे रामं निर्गत कामं सुखधामम् ॥ ४ ॥

रावण शत्रुं वानरमित्रप्रतिपालं,
दनुजविनाशिजनसुखराशि सुखधामम् ।
अनुज सहगमनं सीतासहरमणं,
मारुतसुतसेव्यं नाशकजन व्यसनं प्रणमामि ॥ ५ ॥

शान्तं दान्तं शोकविहीनं सकलत्रं,
मुनिजनपालक भवभय नाशक ।

सुमधुर धरणीतल अवतार धरं,
श्रीरामं दशरथ तनयं प्रणमामि ॥ ६ ॥
रामं नित्यं वाञ्छित फलदं प्रणमामि,
रामं नित्यं लक्ष्मण पूज्यं नृपश्रेष्टम् ।
मायातीतं कालातीतं त्रिगुणेशं,
निर्गुणमेकं शान्तं शुद्धं प्रणमामि ॥ ७ ॥
श्यामलकायं निर्मितमायं प्रणमामि,
जाप्यंनित्यं तवशुभ नामं सुखपूर्णम् ।
वन्दे रामं श्यामलकायं धरणीशं,
वन्दे रामं शतदलनेत्रं सततंत्वम् ॥ ८ ॥
साष्टाङ्ग प्रणाम-रामं नमामि मनसा वचसा च नित्यं,
रामं नमामि शिरशा उरसातथैव ।
रामं नमामिपदजानुभुजौदृशाच,
रामं नमामि सततं भुवनेशमीड्यम् ॥ ९ ॥

इति रामाष्टकम् स्वामी उमेश्वरानन्दरचितं सम्पूर्णम् ।

अपने सब काम भूलकर सदा ईश्वर को स्मरण करते रहो। 'सन्त वाणी'

सच्चा सन्त ईश्वर की गोद में खेलता मुस्कराता सुन्दर बालक है।
'सन्तवाणी'

अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का अपने प्रिय परमात्मा के लिए त्याग करो यही प्रभु प्रेम का लक्षण है। 'सन्तवाणी'

भक्त जब प्रभु का सब प्रकार से आश्रय लेता है तभी परमेश्वर उसकी रक्षा अपने हाथ में ले लेता है। 'सन्तवाणी'

अङ्काधिरूढं शिशुगोपगूढम्, स्तनं धयन्तं कमलैक कान्तम् ।
सम्बोधयामास मुदायशोदा, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
(स्तोत्र से०)

श्रीकृष्ण स्तुति

बंशीवादनमेव यस्य सुरूचिगोचारणं तत्परं,
वृन्दारण्यविहारणार्थं गमनं गोवंश सङ्घावृतम् ।
नानावृक्ष लतादिगुल्मषु शुभं लीलाविलाशं कृतं,
तं वन्दे यदुनन्दनं प्रतिदिनं भक्तान् सुशान्तिप्रदम् ॥१॥

एकस्मिन् समये सुचारू मुरलीं, संवादयन्तं जनान्,
स्वानन्दैकरसेन पूर्णजगतिं वंशीरवंपाययन् ।
सुस्वादुसुधया तरंग सकललोकेषु विस्तारयन्,
तं वन्दे यदुनन्दनं प्रतिदिनं स्वानन्द शान्ति प्रदम् ॥२॥

वर्हापीड सुशोभितञ्च शिरसि नृत्यंकरं सुन्दरं,
ॐ कारैकसमान रूपमधुरं वक्षस्थलेमालिकाम् ।
रूपं श्यामधरं हिरण्यपरिधिं धत्तेकरेकंकणं,
तं वन्दे यदुनन्दनं प्रतिदिनं विज्ञानदंज्ञानदम् ॥३॥

या वंशी शिवरूपकञ्च सुमुखे संयोज्य फुत्कारयन्,
ब्रह्मा यष्टि स्वरूपकं करतले शोभाकरं सुन्दरम् ।
इन्द्रोऽपि शुभरूपश्रृङ्गमभवत् श्रीकृष्णसेवारतः,
वेदस्य सुऋचाऽपि धेनु-अभवन् देव्यस्तु गोपीजनाः ।
तं वन्दे यदुनन्दनं प्रतिदिनं आनन्ददानेरतम् ॥४॥

कालीयदमनं सुचारू गमनं लीलाविलासं सदा,
नृत्यन्तमतिसुन्दरं रूचिकरं वर्हावतंशंधरम् ।
पश्यन्तंरुचिरं सुहासमधुरं भालंऽलकैर्शोभितं,
तं कृष्णं प्रणमामि नित्यमनिशं निर्वाण शान्तिप्रदम् ॥५॥

श्यामं कान्तियुतं सुकोमल तनुं नृत्यं शिवं सुन्दरं,
नाना रत्नधरं सुवक्षसि सदा कट्यां शुभां शृंखलाम् ।
पीतं वस्त्रधरं नितम्बविमले तं श्यामलं कोमलं,
वन्देऽहं सततं हि नन्दतनयं श्रीवालकृष्णंम् हरिम् ॥६॥
राधा माधव रासगोष्ठि विपुलं कृत्वा च वृन्दावने,
नाना गोपशिमन्तिनी सखिजनाः नृत्यन्ति रासोत्सुकाः ।
नाना छन्द रसाऽनुभूतिमधुरंगायन्ति स्वानन्ददम्,
तं वन्दे यदुनन्दनं प्रतिदिनं भृत्यान् सदाशान्तिदम् ॥७॥
समाकर्षयन्तं कृपावर्षयन्तं, भवभीतलोकं सुशान्ति प्रदंतम् ।
सदानन्द सिन्धौ निमग्नं रमन्तं, समास्वासयन्तं भवाभीतलोकम् ।
सदाबोधयन्तं सुधादानशीलं, नमामि सदा त्वां कृपासिन्धुदेवम् ॥८॥

श्री स्वामी उमेश्वरानन्द विरचितं श्री कृष्णस्तुति सम्पूर्णम्

श्रीकृष्ण स्तुति—"श्रीकृष्ण शरणंमम"

त्रिभङ्गललितः कृष्णः, परमेश परात्परः ।
मयूरपिच्छमुकुटगुडा,केशाच्युतव्ययः ॥ १ ॥
मणिमाणिक्यमाल्यादि, हारभूषणभूषितः ।
पीताम्बरोनटवरः , घनश्यामलविग्रहः ॥ २ ॥
श्रीधरः सच्चिदानन्दः, सर्वानन्द फलप्रदः ।
जगत्पति जगत्कर्ता, जगल्लयसतत्परः ॥ ३ ॥
सुपूर्णं परमानन्दः, नन्दनन्दन बालकः ।
लीला नरवपुहरिः, लीलाकैवल्यविग्रहः ॥ ४ ॥
धरणीधरः सर्वज्ञः, ईश्वरः परमेश्वरः ।
भूभार हारक सर्वः, सिन्धु मध्ये निवासकः ॥ ५ ॥

अनन्तगोपकन्यानां, रासलीला कर प्रभुः ।
अन्तर्यामि सर्वविच्च, कैवल्य मुक्ति दायकः ॥ ६ ॥

आदि मध्यावसानेषु, नित्य शुद्धः सनातनः ।
श्रीकृष्णमखिलाधारं, भक्तवाञ्छाफलप्रदम् ॥ ७ ॥

नमामितमहं नित्यं, भुक्तिमुक्ति फलप्रदम् ।
अनन्त शीलशोभाढ्यं, श्यामलं गरूडध्वजम् ॥ ८ ॥

नमामि तमहं भक्त्या, सदानन्दैक रूपिणम् ।
मधुरं मधुरं नादं, वंशीवादन कारकम् ।
कृपादृष्टया सुधावृष्टया, पूरयन्तं नमाम्यहम् ॥ ९ ॥

श्री स्वामी उमेश्वरानन्द विरचितं श्री कृष्णस्तोत्रम् सम्पूर्णम्

श्रीकृष्णस्तोत्राणि

दिव्यातिदिव्यं परमङ्गसुन्दरं, श्यामाङ्ग शोभा सुविकाशमुज्ज्वलम् ।
केयूरवान् कुण्डलवान् किरीटिवान्, पीताम्बरं वंशीधरं हरिं भजे ॥ १ ॥

चन्द्राननं शोभितमम्बुजेक्षणं, श्रीवत्सवक्षस्थल मालिकादिभिः ।
विभूषितं मेखलयाङ्गुलीयकैर्वृन्दावने वंशीधरं हरिं भजे ॥ २ ॥

आनन्ददं शान्तिप्रदं सुविग्रहं, आनन्दकन्दं सरसिरुहेक्षणम् ।
सुमंगलं वाञ्छितदं सनातनं, नमामि कृष्णं परमं सुदुर्लभम् ॥ ३ ॥

मध्ये निकुंज मध्येवनकान्ति शोभितं, गोपाङ्गनानां परमं सुसौख्यदम् ।
समाह्वयन्तं निकेटस्थिताञ्जनान्, सदा प्रसन्नं प्रणमामितंहरिम् ॥ ४ ॥

मधुरं मधुरं नादं, वंशीवादन कारकम् ।
समाह्वयन्तं गोपीनां, तं नमामिकृपानिधिम् ॥ ५ ॥

निकुञ्जमध्येगुप्तं च, राधया सह संयुतम् ।
रमणीयं सुरपतिं कृष्णं वन्दे दयानिधिम् ॥ ६ ॥

गोपीनां सुमुखीनाञ्च, रासहास समागमः।
परमानन्द दातारं, नमामि श्रीहरिंपरम् ॥ ७ ॥

सुमुखेमुरलीधृत्वा, वादयन् पूरयन रसान्।
त्र्यैलोक्यानन्ददंदेवं कृष्णं वन्दे सताङ्गतिम् ॥ ८ ॥

समाकर्षयन्तं सुधावर्षयन्तं, समास्वादयन्तमनुरागिणीनाम्।
सदानन्दकारिं सुमालीं मुरारीं, सदालम्बयेहं तवैव सकाशम् ॥ ९ ॥

श्रीकृष्णकृष्णभगवन् मम दीनबन्धो,
त्र्यैलोक्यरक्षक विमोकरूणानिधानः।
संसारभीतिदहन सुखरूपधारिन्,
वन्दे सदैव चरणौ तव शान्तिदायकै ॥ १० ॥

श्रीकृष्णकृष्णेतिक्षरद्वयं प्रियं, शान्तिप्रदं नाम सुमङ्गलञ्चते।
वाक्गद्गदंचित्तद्रवं च येषां, तेयान्ति सद्यंभवसिन्धु पारम् ॥ ११ ॥

श्रीकृष्ण नामं परमं सुदुर्लभं, ये ये जपान्तीह सदैवमर्त्याः।
तेधन्यभाग्यासुकृताकृतार्थाः, तरन्तिपारम्भवसागरस्य ॥ १२ ॥

श्रीकृष्णस्तोत्रम्

श्रीकृष्णचन्द्र पुरुषोत्तम केशवाय,
राधावराय वरवारिजलोचनाय।
गोपाङ्गनाजन सुशोभित विग्रहाय,
कृष्णायव्योमशदृशायनमामिनित्यम् ॥ १ ॥

तस्मै परस्मै पुरुषाय साक्षिणे, स्वभृत्य संसार विपद्विनाशिने।
अदीन लीलाकर दुःखहारिणे, नमामिसर्वान्त गुहान्तरात्मने ॥ २ ॥

शिखिपिच्छ मौलीमुकुटे सुशोभिते,
हस्ते सुदिव्यमुरली सुखदासवाते।
वृन्दावने चलसिगुल्मलतादि मध्ये,
पङ्कुचांनुपूरक्वणयन् रमणायते नमः ॥ ३ ॥

गोवर्धनाद्रि निकटे वनकुञ्ज मध्ये,
गो गोपवाल परिवेष्ठित नन्दबालम् ।
एकेन हस्त कमलेन गृहीतयष्टि,
मन्ये करेण धृतवेणु रसादि पूर्णम् ॥ ४ ॥

तं गोपवंश सुखदं वसुदेव सुनूं,
वन्दे सदैव भवपाश विनाशदक्षम् ।
आनन्दमात्रमचलं परिपूर्णकामं,
कामादि शत्रुदमनाय सदैव तत्परम् ।
संसार सागर समुत्तरणावलम्बनं,
कृष्णं नमामि सततं भवरोगभेषजम् । ५ ॥

श्रीराधिकाया शुभहृत्सरोजे, मूर्त्यङ्कितं तेहृदयेऽपिराधा ।
परस्पर प्रेमरसाश्रयाभ्यां, नमोनमःश्रीहरिराधिकाभ्याम् ॥ ६ ॥

गोपीजनः सुहृदिमन्दिर वासकारी,
गोवर्द्धनाद्रिघरसर्वभयापहारिः ।
शक्रस्यगर्वशिखरस्य विनाशकारीः,
मोहान्धकार मनसिवसतां मुरारिः ॥ ७ ॥

हे कृष्णहेयदुपतेभुवनैक वन्धो,
हे माधव मृदुपदेकरूणैकसिन्धो ।
हे सच्चिदात्मसुख रूपसुधैकसिन्धो,
मां पाहि पाहि भगवन् प्रणमामिनित्यम् ॥८॥

कलाषोडषपूर्णाय सौन्दर्यस्य महार्णवे ।
ऐश्वर्यादिसमग्राय, कृष्णचन्द्रायते नमः ॥ ९ ॥

श्रीस्वामी उमेश्वरानन्दतीर्थं विरचितं श्रीकृष्णाष्टकम् सम्पूर्णम् ।

श्रीकृष्णाष्टकंस्तोत्रम्

नमोस्तु कृष्णाय सहाग्रजाय, देव्यै च तस्यै वृषभानु जायै।
नमोस्तुवृष्ण्यन्धक सात्वतेभ्यः, नमोनमस्ते यदुवंशजेभ्यः॥ १॥
श्रीसच्चिदानन्द सुश्यामलाय, राधादिगोपीजन सेविताय।
वृन्दावनेरासविहारकाय, नमोनमस्तेयदुनन्दनाय॥ २॥
श्रीकृष्णमूर्तिघनश्यामल शोभिताय,
दिव्याय प्रेमरससार सुशान्तिदाय।
आनन्द सागर सुशोभित मुक्तिदाय,
कृष्णाय शक्तिसहिताय नमामिनित्यम्॥३॥
आनन्द सिन्धु निजधाम निवासकाय,
स्वलोकवासीजन शान्ति सदाप्रदाय।
गोलोकमेव सततं समलंकृताय,
कृष्णायशक्तिसहिताय नमामिनित्यम्॥४॥
किरीटिनं कुण्डलिनं वनमालाविभूषितम्।
निर्भयमुद्रया युक्तं, करकंज सुशोभितम्॥ ५॥
प्रसन्नवदनदेवं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥
श्रीवासुदेवंवसुदेवपुत्रं, श्रीदेवकीनन्दन कृष्णचन्द्रम्।
श्रीरच्यूतं वंशीधरं मुरारिं, मां रक्षकं त्वां प्रणमामि नित्यम्॥ ६॥
बर्हावतंवधर सुन्दरबालरूपं, बिम्बाधरं सुमधुरं शिशुगोपवेषम्।
आनन्दकन्द मुरलीधर श्यामलं त्वां, वृन्दावनालयमहं प्रणमामिनित्यम्॥७॥
आनन्दमात्रञ्च सदैव निर्मलं, पापं विनाशाय सततपरं च तम्।
स्वभक्तत्राणाय सदा सुलग्नकं, नमामि कृष्णं सततं सुपूज्यम्॥ ८॥
इति श्रीस्वामी उमेश्वरानन्दतीर्थं विरचितं श्रीकृष्णाष्टकम् स्तोत्रम्।

श्रीकृष्ण लीला विंशतिकास्तोत्रम्

अरूप भूतोपि सुरूप धारिणे, भूभार संसार सुचारू कारिणे ।
भक्तान् सदानन्द रस प्रदायिने, नमोस्तु कृष्णाय सुवाल रूपिणे ॥ १ ॥

भूम्यां यदाभारविवर्धते महान्, भूदेवि दुःखेन प्रपीडिताऽसीत् ।
रूरोद धातुः निकटेव गत्वा, मां पाहि देवेश जगन्निवास ॥ २ ॥

तां रूदतीं दीनमतीत दुखितां, दृष्ट्वा च वेधा गतवान् पयोनिधिम् ।
तत्रातिदिव्यं पुरुषस्य सूक्तं, जपन् परम्ब्रह्म हरिं समीडितः ॥ ३ ॥

तदासुसूक्ष्मं गगनेरितं वचो, श्रुत्वाऽथवेधातमवर्णयच्च ।
श्रुतंमया ब्रह्ममयीं सुवाणीं, दुःखस्य नाशं भवतेव शीघ्रम् ॥ ४ ॥

ईशेन पूर्वं कृतवान्नुपायं, कृष्णावतारोहि ब्रजे भविष्यति ।
गृह्णान्तु जन्मान् ब्रजवासीनां गृहे, तत्रैव कृष्णस्य सुदर्शनं भवेत् ॥ ५ ॥

अजस्य वाक्यं श्रवणेन देवा, अति प्रसन्ना अगमन् व्रजं ते ।
देवाहि सर्वे व्रजवासीनोजनाः, जानिहि राजन् इति निश्चयंमे ॥ ६ ॥

तदैव सर्वे व्रजवासीनां गृहे, देवादि गोपाल सुवालकाऽभवन् ।
तेषां तु देवी व्रजगोपिका भवन्, ता तत्र कृष्णस्य-अनन्य दासिकाः ॥ ७ ॥

स्वभक्तवृन्दाय प्रमोदनार्थं, साक्षात् परब्रह्म सुजात गोकुले ।
तदावभूवातिसुमंगलामही, साक्षात् हि वैकुण्ठ समाधरित्री ॥ ८ ॥

सानन्द सर्वं व्रजमण्डलेऽभूत्, कंसस्य संताप सदाहि भूतले ।
जन्मर्क्षे योगे वसुदेव देवकी, समाश्रयित्वा भगवान् सुजायतः ॥ ९ ॥

सायोगमायाऽपि सदापरायणाः, कृष्णाय नेतुं कृतवान्नुपायम् ।
नीत्वाथतां गोकुलनन्दपत्न्यां, निधाय कृष्णं हि सुयोग माया ॥
नीतं गता कंसपुरे रुरोद ॥१०॥

दूतेन संदेश श्रुतेतु कंसः, भयात् अधावच्च विमुक्त केशः।
स्खन् पतन् वा गतवान् स्व स्वन्तिके, तां वालिकां योगमयीं सुमायाम् ॥१०॥

हस्तौ गृहीत्वा कृतवान् प्रताडनं,
सा तस्य हस्तात् समगाद्दिवाम्बरे।

जगाद कंसाय श्रृणुस्व दुर्मतेः,
पुरैव जातः तव मृत्यु बालकः ॥ ११ ॥

हिंसात्यजमाकुरु पाप दुष्टः, सादिव्यदेहाष्टभुजाभवानी।
गतासु विन्ध्याचलवासिनीऽभूत् ॥ १२ ॥

श्रीकृष्ण जन्मोत्सवनन्दगोकुले, वभूव सर्वत्र समस्त मण्डले।
तत्रैव गोपीजनगोपशंकुले, हर्षातिरेकेण सुगाम चक्रिरे ॥ १३ ॥

श्रीदेवकी पालित गर्भमध्ये, यशोदया लालित वाल्येक्रोडे।
श्रीराधिकाऽऽलिङ्गित यौवनेऽपि, गोपाङ्गनानां रमयञ्चकार ॥ १४ ॥

श्रीकृष्ण चन्द्रेण सुपालिते व्रजे, गावश्च गोपाश्च सदा प्रसन्नाः।
सुखं सदा स्वानुभवं विकुर्वन्, कृष्णं सदावाञ्छितदं प्रपन्नाः ॥ १५ ॥

कारागृहे जन्म व्रजे च वासः, गोचारणं याति करोति रासः।
कंसाय लोके महतः सुत्रासः, तथाऽपि कृष्णकुरुते सुहासः ॥ १६ ॥

दैत्यान् सदा हि प्रकरोति नाशः, भक्ताय सानन्द करोति वासः।
कालं विनाशाय प्रचण्ड हासः, वाञ्छामि मांदेहि स्वभक्तिदास्यः ॥ १७ ॥

माधुर्य राशीरसदः सदाऽसि, गोपीश विश्वेश व्रजेश कृष्णः।
जपामि नित्यं प्रणमामि नित्यं, मामुद्धराऽऽशु सततं नमामि ॥ १८ ॥

हे कृष्ण मामुद्धरदीनवन्धो ! भवाग्नितापेन सुदारूणेन।
लग्नोस्मि नित्यं शरणं विदेहि, नमामि नित्यं भवभुक्ति हेतुम् ॥ १९ ॥

वंशी वादन शीलाय कृष्णामपरमात्मने।
वृषभानु सुतास्कन्धे न्यस्त हस्तायते नमः ॥ २० ॥

स्वामी उमेश्वरानन्द तीर्थं विरचितं लीलाविंशतिकास्तोत्रम् सम्पूर्णम् !

बाल कृष्णाष्टकम्

तं वालमद्भुतंरूपमम्बुजाक्षं चतुर्भुजम् ।
किरीटिनं कुण्डलिनं वनमालाविभूषितम् ॥ १ ॥

शंख चक्र गदा पद्म, धारिणं दिव्यविग्रहम् ।
श्रीवत्सांकितवक्षञ्च गले कौस्तुमशोभितं ॥ २ ॥

श्यामाङ्गे पीतवस्त्रं च, शोभितम् वपुषंहरिम् ।
गोपालवालकानां हि सहक्रीडाकर विभुम् ॥ ३ ॥

गोपीनां कोमलाङ्गीनां क्रोडेषु समलं कृतम् ।
अत्यन्तं कोमलाङ्गञ्च विम्वोष्ठं तं हरिं भजे ॥ ४ ॥

कालिन्दी पुलिनेरम्ये क्रीडन्तं वालकः सह ।
आनन्दकन्दरूपं तं वालकृष्णमहं भजे ॥ ५ ॥

वीणाधारीनारदस्य दृष्टचाग्रेणपलायितम् ।
यशोदाऽङ्केरूरुक्षतं वालकृष्णमहं भजे ॥ ६ ॥

एकदा दधिचौराय यशोदोक्तं च किंकृतम् ।
सोऽवदत् कंकणदाह शान्तंकुर्मेतिमातरम् ॥ ७ ॥

क्रीडासक्ताय कृष्णाय माताआह्वयति यदा ।
नायाति वत्सः किं तुभ्यं ताडनाकरणीयमे ॥ ८ ॥

भयात् शीघ्रं समायाति पुनरालिङ्गच चुम्वितम् ।
वाललीला करं देवं तं वन्दे कृष्ण दुर्लभम् ॥ ९ ॥

इति वालकृष्णाष्टकम् ।

दामोदराष्टकम्

दामोदराय कृष्णाय करे वंशीधराय च ।
उदरे दामवद्धाय वालकृष्णाय ते नमः ॥ १ ॥

उलूखलेन सम्वद्ध उदरेऽपि च वन्धनम् ।
मुक्तिदाता स्वयं वद्ध अन्यान् लोकान् विमुक्तये ॥ २ ॥

यमलार्जुनयोत्पाटच नलकूवर मुक्तये।
मणिग्रीवाय मोक्षञ्च ददंतं तं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥

रिङ्गयञ्च समागच्छन्नंगणे यशोदाग्रतः।
पालायन परं देवं दामोदरं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥

उलूखलोपर्य्यारुह्य नवनीतञ्चभुञ्जयन्।
मर्कटान्नपि दत्तं तं वालकृष्णं नमाम्यहम् ॥ ५ ॥

दधिभाण्डं खण्डयित्वा पलायित्वा गतोऽन्यतः।
नवनीतंचौरकं तं दामोदरं नमाम्यहम् ॥ ६ ॥

दामोदरेति नामस्तु लोकान् मुक्ति प्रदायकम्।
तेन तं संस्मरेन्नित्यं भवबन्ध विमुक्तये ॥ ७ ॥

यशोदा यष्टिकां धृत्त्वा भीषयन्ती भयापहम्।
भयभीताय कृष्णाय दामोदरायते नमः ॥ ८ ॥

दामोदराष्टकं नित्यं ये पठन्ति नरा भुवि।
ते भववन्ध निर्मुक्ता यान्ति तं परमं पदम् ॥ ९ ॥

श्री स्वामी उमेश्वरानन्दतीर्थं विरचितं वालकृष्णाष्टकम्

भगवतः श्रीकृष्णस्य परिकरपरिचयविशंतिका स्तोत्रम्

दण्डके रामचन्द्रं हि, दृष्ट्वामुनिगणाश्चये।
मुग्धासन्तस्यसंस्पर्शं, कर्तुमिच्छन् सतत्पराः ॥ १ ॥

तान्नाह भगवान् सर्वान्, कृष्णरूपे भविष्यति।
परमानन्दरूपोहि, नन्दगोप इति स्मृतः ॥ २ ॥

श्रीकृष्णं पुत्ररूपेण, प्राप्य नन्दो सुनन्दितः।
मुक्तिदात्री यशोदात्री, ब्रह्मविद्याऽपि सापरा ॥ ३ ॥

नन्दस्य पत्निरूपेण, यशोदाऽभूत् व्रजेश्वरी।
(यो नन्दो परमानन्द यशोदा मुक्ति गेहिनी) श्रुति
ब्रह्मजा प्रणवा विद्या देवकी चेति विश्रुता ॥ ४ ॥

समष्टि निगमोवेदः वसुदेवश्च जायतः।
सर्वेवेदास्तुवन्ति यं नित्यमेव समादरात् ॥ ५ ॥

स एव भगवान् कृष्णः समुत्तीर्णं महीतले।
दिव्यगोपाङ्गनाभिश्च क्रीडन्तं स चचारह ॥ ६ ॥

नाना श्रुतिगणा सर्वे वनवासी मुनीश्वराः।
गावो गोप्यश्चते सर्वे, संजाताधरणी तले ॥ ७ ॥

गोकुलं वन वैकुण्ठं द्रुमासन्ति तपस्विनः।
उपासनाकाण्डरूपा श्रुतिद्वचेष्ट सहस्र का ॥ ८ ॥

सताधिक्यः ततोऽष्टौ च ऋचोपनिषदस्यह।
दया तु रोहिणी देवी सत्यभामाधराऽभवत् ॥ ९ ॥

सुदामा समता जातः सत्यऽक्रूरो बभूवह।
दमश्चोद्धव संजातः भुतलेति च सुश्रुमः ॥ १० ॥

शंखस्तु सोदरोलक्ष्या, लक्ष्मीरूपो न संशयः।
विष्णु रूपश्च तं प्राहुः, सिन्धौ घोष करोति सः ॥ ११ ॥

गोपीनां गृहमध्येतु, दधिभाण्डानि विखण्डिताः।
तौ जातौदधि सिन्धु क्षीरसिन्धुश्च कथ्यते ॥ १२ ॥

ईशनिर्मित लोकस्तु, चक्ररूपेण भ्राम्यते।
ईशोत्पन्नस्य लोकस्य, प्राणवायु सुचर्मकम् ॥ १३ ॥

अग्नितुल्यः महेशोहि, खड्गरूपेण वर्तते।
कश्यपोलूखलंभुत्वा, भगवन्तमवापह ॥ १४ ॥

अदिति देव माता तु, रज्जु रूपेण वर्तते।
सर्वशत्रु निहन्त्री सा, गदा काली बभूवह ॥ १५ ॥

माया शार्ङ्गधनुश्चैव, ईशहस्ते बभूवह।
मायाऽविद्या ऋतुकाल, तस्य देवस्य भोजनम् ॥ १६ ॥

ईशहस्ते जीव संघं, कमलमपि शोभितम् ।
गोपालो कृष्णरूपश्च, साक्षात् माया वपुंधरः ॥ १७ ॥

सुदुर्बोधं कुहकन्ते, मायया मोहितं जगत् ।
गरुडोवटभाण्डिर, सुदामा नारदोऽभवत् ॥ १८ ॥

वृन्दा भक्ति क्रिया बुद्धि, तस्यदेवस्य जायते ।
अघासुरस्तुपापोऽभूत्, क्रोधलोभादि राक्षसाः ॥ १९ ॥

मत्सर मुष्टिकश्चैव, द्वेषचाणूर एव च ।
दर्पकुवलयापीड, वकगर्वोनसंशयः ॥
कलिकंसोऽभवत् तत्र, अघस्तु व्याधिरेव च ॥ २० ॥

श्रीस्वामी उमेश्वरानन्द विरचितं लीला परिचय विशंतिका सम्पूर्णम्

जिन लोगों को इन तीन वस्तुओं पर प्रेम है उनमें और नरक में ज्यादा दूरी नहीं है । (१) स्वादिष्ट भोजन (२) सुन्दर वस्त्र (३) धनवानों का सहवास ।

—'सन्त वाणी'

जो मनुष्य ईश्वर पर विश्वास रखकर उसी की प्रीति के लिए धर्माचरण करता है वही निर्मय है उसे ही प्रभु अपनी सेवा में लेते हैं ।

सदा विनय और प्रेम पूर्वक ईश्वर का भजन करो, सेवा और सम्मान पूर्वक साधुजनों का सत्संग करो ।

साधुजनों के लिए भी सत्संग आवश्यक है जो सत्संग से दूर रहता है वह रोग रहित नहीं है ।

इन चार वातों से जीव का कल्याण होता है ईश्वर के प्रति दीनता, ईश्वर से भिन्न पदार्थों से निस्पृहता ईश्वर का ध्यान और विनय ।

एक प्रभु का सदैव स्मरण रखो मनुष्यों की बात रहने दो ।

मनुष्य से तो जितनी कम हो सके बात करो, ज्यादा बात करो उस ईश्वर से ।

श्रीराधाकृष्ण विवाह द्वादशाऽश्लोकी

एकदानन्द गोपस्तु, कृष्णं नीत्त्वा वनं ययौ ।
झंझावातमभूत् तत्र, तेन दुखेन पीडितः ॥ १ ॥
तस्मिन् कालेतु एकाकी, यूवति षोडष्यागता ।
साऽऽहतं तत्र पुत्रस्य, रक्षाकर्तुमिहागता ॥ २ ॥
देहिमांत्वं गृहं गच्छ, नीत्वाहन्ते व्रजेश्वरीम् ।
प्रदास्यामि न सन्देहः, तव पुत्रं सुवालकम् ॥ ३ ॥
तां दत्त्वानन्दगोपस्तु, निवर्त्य स्वगृहं ययौ ।
तदा सा राधिका देवि, स्वस्थानं काननं ययौ ॥ ४ ॥
तत्राद्‌भूतमभूत् शीघ्रं, दिव्यसिंहासनं महत् ।
मणिमाणिक्य रचितं, पूर्णशोभामयं शुभम् ॥ - ॥
आरुह्य राधयायुक्तो, कृष्णः षोडष वार्षिकः ।
सुशोभितौ च द्वौभूत्त्वा, तत्र क्रीडा सुतत्परौ ॥ ६ ॥
तस्मिन् कालेतु ब्रह्माऽपि, सर्वंज्ञात्त्वा समागतः ।
वरवध्वो सुमाङ्गल्यं कार्यंकर्तुं समारभत् ॥ ७ ॥
विवाहं विधिवत् कृत्त्वा, पुनर्ब्रह्मा स्वयं ययौ ।
तत्रानन्देन सम्पन्नौ, भूत्त्वापूर्ण स्वलकृतौ ॥ ८ ॥
परस्पर रमन्तौ च, बहुकाल मगात् यदा ।
रमणानन्तरे कृष्ण, राधा स्वाङ्के पुनः स्थितः ॥ ९ ॥
तदा श्रीकृष्णः वालोऽभूत्, राधा तु षोडषीशुभा ।
भूय सा राधिका कृष्णं, नीत्त्वागत्त्वा व्रजंप्रति ॥ १० ॥
नन्दपत्नीं ददात् शीघ्र, कथयन् व्यसनञ्चताम् ।
पुनराधा गता तत्र, वसतिस्म सदापुरा ॥ ११ ॥
तदन्ते नन्दगोपस्तु गृहं गत्त्वा ददर्शह ।
रहस्यं गोपनीयं हि, आसीत् सर्वञ्चमायया ॥ १२ ॥
श्रीस्वामी उमेश्वरानन्दतीर्थ विरचितं श्रीकृष्णविवाहद्वादशी सम्पूर्णम्

षोडषाक्षर मन्त्रजपमहात्म्यस्तोत्रम्

नारदंप्रति ब्रह्मोवाच श्रृणुनारदः तत्परः।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे-

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

इति षोडषकं नामः कलिकल्मष नाशकम्।
नातः परतरोपायं, सर्ववेदेषु दृश्यते ॥ १ ॥

षोडषःकलयायुक्तो, जीवस्त्वावरणं त्यजन्।
तदा प्राकाशते ब्रह्म, मेघापाये यथारविः ॥ २ ॥

पुनः प्रपच्छ देवर्षि, किं विधि जपतो जनैः।
ब्रह्माहह्यस्य मन्त्रस्य, विधिर्नास्त्येव नारदः ॥ ३ ॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वदा जापकोनरः।
सालोक्यञ्च शारुप्यञ्च, सामीप्यञ्चसायुज्यता ॥ ४ ॥

चतुर्विधार्गात प्राप्य, सच्चिदानन्द संयुतः।
पितृदेवमनुष्याणां, अपकारात् विमुच्यते ॥ ५ ॥

ब्रह्महत्यादि पापानि, तरत्येव न संशयः।
स्वर्णस्तेयात् धर्मत्यागात्, सर्वदोषात् विमुच्यते ॥ ६ ॥

वेदान्तवाक्यै कलिकल्मषघ्नं, अत्यन्तगुप्तं मतमुधृतञ्च।
तेधन्यभाग्या सततं स्मरन्ति, तरन्ति पारं भवसागरस्य ॥ ७ ॥

हरेति कृष्णेति हरेति कृष्णः, कृष्णेति कृष्णेति हरे हरेति।
हरेति रामेति हरेति रामः, रामेति रामेति हरे हरेति ॥ ८ ॥

इदं परं दुर्लभ नामकीर्तनं, कलौयुगे ये पुरुषाजपन्ति।
गायंन्ति नित्यं हृदिभावयुक्ता, श्रीकृष्णसायुज्यगतिलभन्ते ॥ ९ ॥

कोटीत्रयसार्द्धं जपन्तियेते, शुध्यन्ति पापात् कलिकल्मषाच्च।
साक्षात् प्रकुर्वन्ति परात्मतत्त्वं, संयान्ति दिव्यं परमात्मनः पदम् ॥ १० ॥

इदं सुपुण्यम् कलिकल्मषघ्नं, मन्त्रञ्च दिव्यं पुरुषा दिने दिने।
जपन्ति गायन्ती इह मर्त्यलोके, संयन्ति तं ब्रह्ममयं सु धामम् ॥ ११ ॥

येन केन प्रकारेण, जपमात्रेण सिध्यति।
जपन्तं सततं नामं, जीवन्मुक्तो भवेन्नर ॥ १२ ॥

श्री स्वामी उमेश्वरानन्दतीर्थ विरचितं षोडषाक्षर मन्त्र·जप
महात्म्यं सम्पूर्णम्।

"श्रीराम जय राम जय जय राम" मन्त्र महात्म्यम्

श्री पूर्वं जय पूर्वञ्च तद्विधं राम नामकम्।
त्रयो दशाक्षरो मन्त्रो, मुनि ब्रह्मा विराट् स्मृतः ॥ १ ॥

छन्दस्तु देवता प्रोक्तो राम पापौघ नाशनः ॥

नारद पुराण पू० ३ पा० ७६८७

श्रीराम नामा मृतमन्त्र बीज, संजीवनी चेन् मनसि प्रविष्टा।
हाला हलं वा प्रलयानलं वा, मृत्यों मुखे वा विशतां कुतोभी ॥ २ ॥
श्री शब्द पूर्वं जय शब्द मध्यं, जय द्वये नापि पुनः प्रयुक्तम्।
त्रिसप्त कृत्वा रघुनाथ नामः, जपन्नि हन्यान् द्विजकोटि हत्या ॥ ३ ॥

—आ० रामायण

श्री पूर्वकं राम जयश्च रामः, जयद्वयश्चापि पुनश्च रामः।
त्रिसप्त संख्या कृत रामनाम, जपात् विहन्यात् द्विजकोटि हत्याः ॥ ४ ॥

अस्य मन्त्रस्य सिद्धिस्तु, कोटी त्रयोदशं जपात्।
भवत्येव न सन्देहः प्रवदन्तिमनीषिणः ॥ ५ ॥

—स्व० उमेश्वरानन्द

इति स्तुति रत्नमाला समाप्तम्।
इति पूर्वार्द्धः समाप्तम्।

अथ उत्तरार्द्ध

गंगा स्नान की विधि तथा महात्म्य

आवाहनमन्त्र

विष्णुपाद प्रसूतासि, वैष्णवी विष्णुदेवता ।
त्राहि नस्त्वेन सस्मादावाजन्म मरणान्तिकात् ॥ १ ॥

तिस्त्रकोटयोर्ध कोटी च तीर्थानां वायुरब्रवीत् ।
दिविभूम्यन्तरिक्षेयातनानि ते सन्ति जाह्नवी ॥ २ ॥

नन्दिनी त्येव ते नाम, देवेषु नलिनीति च ।
दक्षापृथिवी च विहगा, विश्वकाय स्मृता शिवा ॥ ३ ॥

विद्याधरी सुप्रसन्ना, तथा विश्व प्रसादिनी ।
क्षमा च जाह्नवी चैव, शांता शांतिप्रदायिनी ॥ ४ ॥

एतानि पुण्यनामानि, स्नानकाले प्रकीर्तयेत् ।
भवेत् संनिहता तत्र गंगा त्रिपथगामिनी ॥ ५ ॥

मत्स्य पु० अ० १०२ श्लो० ३-८

गंगेति स्मरणादेव, क्षयंयाति च पातकम् ।
कीर्तनादतिपापानि, दर्शनाद्गुरूकल्मषम् ॥ १ ॥

स्नानात्पानाच्च जाह्नव्या, पितृणां तर्पणात्तथा ।
महापातकवृन्दानि, क्षयंयान्ति दिने दिने ॥ २ ॥

अग्निनादह्यतेतूलं, तृणं शुष्कं क्षणात् यथा ।
तथा गंगा जल स्पर्शात्, पुंसां पापं दहेत् क्षणात् ॥ ३ ॥

पद्म पुराण

सर्वत्र स्नान करने की विधि

स्नान किये बिना शरीर शुद्ध नहीं होता शरीर शुद्ध हुये बिना भावना शुद्ध नहीं होती अतः मन की शुद्धि के लिए सभी शुभ कार्यों में व्रतों में विधिपूर्वक स्नान करना आवश्यक है। कुँये में नदीतालाबों में या गंगा में स्नान करते समय मूल मन्त्र द्वारा तीर्थों की कल्पना करनी चाहिये। मूल मन्त्र 'ॐ नमो नारायणाय है' हाथ में कुश लिए हुये विधि पूर्वक आचमन करके जितेन्द्रिय होकर शुद्ध भाव से जल में चारों ओर चार हाथ का चौकोर मण्डल बनाकर उसमे तीर्थं की कल्पना करे उपरोक्त मन्त्रों से गंगा जी का आवाहन करे। मन्त्रार्थ–हे! देवी गंगे! तु भगवान् विष्णु के चरणों से प्रकट हुई हो वैष्णवी कही जाती हो विष्णु ही तुम्हारे देवता हैं अतः तूं जन्म से लेकर मरण पर्यन्त होने वाले पापों से हमारी रक्षा करो। हे जह्नु नन्दिनी! वायु देव ने स्वर्ग लोक मृत्यु लोक और अन्तरिक्ष लोक इन तीनों लोकों में जिन साढ़े तीन करोड़ तीर्थों को, बतलाया है। वे सभी तुम्हारे भीतर निवास करते हैं। देवों में आप नन्दिनी नलिनी, ये दो नामों से प्रसिद्ध हो। इसके अतिरिक्त दक्षा, पृथ्वी, विहगा, विश्वकाय, अमृता, शिवा, विद्याधरी, सुप्रशान्ता, विश्वप्रसादिनी, क्षेमा, जाह्नवी, शान्ता, और शान्तिप्रदायिनी, ये भी तुम्हारे ही नाम है। 'स्नान करते समय इन पुण्य मय नामों का कीर्तन करना चाहिये' इससे त्रिपथगामिनी गंगा वहाँ उपस्थित हो जाती है। हाथों को सम्पुटित करके सातबार नामों का जप करके २, ५, ७ बार शिर पर जल छोड़े। मिट्टी से स्नान करे। (मृतिका स्नानमन्त्र) "अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे। मृतिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्" इससे मिट्टी लगाकर स्नान करे और आचमन करे पुनः तर्पण सन्ध्यादि कर्म करे।

गंगा महात्म्य

श्री गंगाजी श्री विष्णु भगवान् के चरणों से प्रकट होकर तीनों लोकों को पवित्र करती हैं। जो प्राणी गंगा में स्नान करके जिस गति को पाता है उसे तपस्या, ब्रह्मचर्य, यज्ञ, त्याग के द्वारा भी नहीं पा सकता है। बड़े-बड़े पाप कर्मी भी अन्तिम अवस्था में गंगाजी के सेवन से परम गति को प्राप्त होते है। इस संसार में दुःख से व्याकुल प्राणी यदि उत्तम गति चाहता है तो उसके लिए गंगा से बढ़ कर दूसरी कोई गति नहीं है। गंगाजी नरक गामी नराधमो को भी शीघ्र पाप से मुक्त कर देती है। जड़, धनहीन, अन्ध, वधिरादि को भी शीघ्र पाप से गंगा पवित्र कर देती है। गंगाजी विशेष रूप से कृष्ण पक्ष के षष्ठी से लेकर अमावस्या तक दश दिन पृथवी में निवास करती है। शुक्ल पक्ष के प्रतिपदा से एकादशी तक दश दिन पाताल में निवास करती है। फिर शुक्लपक्ष की एकादशी से कृष्ण पक्ष की पञ्चमी तक दश दिन स्वर्ग लोक में निवास करती हैं इसलिए गंगाजी को त्रिपथगामिनी कहा जाता है।

कृतेतुसर्वंतीर्थानि, त्रेतायां पुष्करं परम्।
द्वापरे तु कुरूक्षेत्रं, कलौगंगाविशिष्यते ॥ नारद पु. उ. २०-११

कलौ तु सर्वंतीर्थानि, स्वंस्वंवीर्यं स्वभावतः।
गंगायां प्रति मुञ्चन्ति, सा तु देवी न कुत्रचित् ॥ ना० पु०

अर्थ—सत्ययुग में सबतीर्थ उत्तम हैं त्रेतामें पुष्कर, द्वापरमें कुरूक्षेत्र और कलियुग में गंगाजी से बढ़कर अन्य तीर्थं नहीं है। कलियुग में सभी तीर्थं स्वाभाविक अपने अपने शक्ति को गंगा जी में छोड़ते हैं। किन्तु गंगा जी अपनी शक्ति कहीं नहीं छोड़ती हैं। गंगा जल के स्पर्श से बहने वाली हवा के लगजाने पर भी पापी मनुष्य अच्छी गति को पाता है।

जो सर्वत्र व्यापक चिन्मय स्वरूप भगवान् जनार्दन विष्णु ही द्रवित होकर गंगा जल रूप में बहते हैं। गंगा जल अन्यत्र ले जाने पर भी

महत्त्वपूर्ण रहता है गर्म या ठण्डा होने पर भी सेवन करने पर आमरण किये पाप का नाश करती है। बासीजल बासीदल त्यागने योग्य है किन्तु गंगाजल तुलसीदल ये दोनों बासी होने पर भी त्याज्या नहीं हैं।

जो मनुष्य तीर्थ यात्रा में असमर्थ है। वह केवल गंगा जल के महात्म्य सुनने से भी उत्तम गति तथा उत्तम फल प्राता है। गंगा जी के जल से एक बार भक्ति पूर्वक कुल्ला करने पर मनुष्य स्वर्ग में जाता है और वहां पर काम धेनु गौ का दूध पीता है। जो मनुष्य शालिग्राम शिला पर गंगा जल चढाता है। पाप रूपी अन्धकार को मिटा देता है। और पुण्य को प्रकाशित करता है।

जो प्राणिमनवाणी और शरीर द्वारा किये हुए पापों से ग्रस्त है वह गंगा जी के दर्शन से पवित्र हो जाता है। जो गंगा जल से सिचा हुआ भिक्षान्न लेता है वह केंचुल के त्याग के भांति पापों से मुक्त हो जाता है।

गंगा में श्रद्धा भक्ति पूर्वक स्नान के लिए जो मनुष्य प्रवेश करता है उसके ब्रह्म हत्यादि बड़े-बड़े पाप भी चिल्लाने लगते हैं उसे छोड़कर भाग जाते हैं जो गंगा के तट पर रहकर सदा गंगा जल पीता है वह पूर्व सञ्चित पापों से मुक्त हो जाता है। जो गंगा ज़ी के आश्रित रहता है वह निर्भय रहता है। वह ऋषि, देवता, मनुष्य द्वारा पूजित होता है। जो दृढ़ निश्चय पूर्वक मोक्ष की इच्छा से गंगा जी के तट पर निवास करता है। वह अवश्य मुक्ति प्राप्त करता है। काशी में तो गंगाजल तत्काल मुक्ति प्रदान करता है। यदि जीवन भर प्रतिमास की चतुर्दशी और अष्टमी तिथि को सदा गंगा जी के तट पर निवास किया जाय तो उत्तम सिद्धि मिलती है। चान्द्रायण व्रत करने वाला कृच्छ आदि करके जो सुख पाता है वही फल गंगा जी के तट पर निवास करने से मिलता है।

गंगा जी के सेवा में रहने वाले मनुष्य को आधे दिन के सेवन से जो फल प्राप्त होता है वह सैकड़ों यज्ञों द्वारा भी नहीं मिल सकता है।

सम्पूर्ण यज्ञ द्वारा स्वाध्याय दानादि कर्म से जिस फल की प्राप्ति होती है वही फल गंगा जी के तट पर निवास करता है तो भी वह फल मिल जाता है। जो मनुष्य भक्ति भाव से गंगा जल का स्पर्श करता है जलपान करता है। वह निःसन्देह मोक्ष को प्राप्त करता है जिसके घर में सभी कर्म गंगा जल से होते हैं वह शरीर त्याग कर मोक्ष का भागी होता है। और शिव के समीप वास करता है भक्ति पूर्वक कन्या दान, गोदान, भूमिदान, अन्नदान, स्वर्णदान आदि करके जो फल पाता है उससे सौ गुना अधिक पुण्य चुल्लू भर गंगा जल पीने से होता हैं। चुल्लू भर गंगा जल पीने से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करता है। जो इच्छा-नुसार गंगा जल पीता है उनकी मुक्ति हो जाती है।

सरस्वती का जल तीन मासमें, यमुना जी का जल ७ मास में, नर्मदा का जल दस मास में तथा गंगा जी का जल १ वर्ष में पचता है। शरीर में उसी प्रकार विद्यमान रहता है जो कोई मनुष्य अज्ञात् अवस्था में मर गया हो उसका तर्पण न हुआ हो उसके हड्डी का संयोग गंगा में कर देने पर उत्तम गति पाता है। जो शरीर शुद्धि के लिए एक हजार चान्द्रायण व्रत कर चुका है और जो केवल इच्छा भर गंगा जल पीता है। गंगा जल पीने वाला ही श्रेष्ठ है। गंगा स्नान से चारो पुरुषार्थो को प्राप्त कर लेता है।

जो मनुष्य अविनाशी सनातन पद की प्राप्ति करना चाहता हो तो भक्ति पूर्वक बार बार गंगा जी की ओर देखे और बार बार गंगा जल का स्पर्श करे। परमात्मा का दर्शन करने के समान फल प्राप्त होता है। गंगा जी का भक्ति भाव से दर्शन करने पर भगवान् के दर्शन का फल प्राप्त होता है। नैमिषारण्य, कुरूक्षेत्र, नर्मदा, पुष्कर आदि तीर्थों के स्नान का फल कलि में गंगा जी के दर्शन मात्र से मिलता है। वह जीते ही जीवन मुक्त है मरने पर विष्णु धाम को जाता है।

गंगा में मध्याह्न काल में स्नान करने से प्रातःकाल की अपेक्षा १० गुणा पुण्य अधिक होता है, सायंकाल में सौ गुणाधिक और शिव जी के

समीप अनन्त गुणा अधिक फल होता है। करोड़ो कापिला गौ का दान करने से भी बढकर गंगा स्नान है। जहां कहीं भी हो गंगा स्नान करे तो कुरूक्षेत्र के तुल्य है।

हरिद्वार, प्रयाग, और गंगा सागर में अधिक फल देने वाला है। सूर्यदेव ने कहा है कि, हे गंगा देवी ! मेरे किरणों से तपे हुए तुम्हारे जल से जो स्नान करते हैं वे मेरा मण्डल भेदकर मोक्ष को प्राप्त करते हैं। घर में रहकर भी गंगा का नाम लेकर स्नान करते हैं वे भी वैंकुठ में जाते हैं। जो सम्पूर्ण संक्रान्ति में स्नान करते हैं वे तेजस्वी विमानों पर चढ़कर वैकुंठ लोक को जाते हैं।

वैशाख में अक्षय तृतीया को गंगा स्नान करने से साल भर गंगा स्नान करने का फल मिलता है। द्वादशी, अष्टमी, पुण्य नक्षत्र, चतुर्दशी, अमावस्या, संक्रान्ति को गंगा में स्नान करने से महान् पुण्य होता है। श्री कृष्ण जन्माष्टमी को स्नान करे तो और दिन की अपेक्षा सहस्त्र गुणा फल ज्यादा होता है। माघ कृष्ण अष्टमी और अमावस्या को भी सहस्त्र गुणा पुण्य अधिक होता है। उपरोक्त दिनों में आधा सूर्य उदय काल में गंगा स्नान का फल लाख गुणा अधिक होता है। सूर्योदय के यह नहीं कुछ वाद का फल सहस्त्र गुणा कहा है। फाल्गुन तथा आषाढ में सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण में किया हुआ गंगा स्नान ३ माह स्नान का फल देता है। अपने जन्म नक्षत्र में, किया गया गंगा स्नान का फल जन्म भर किये गये पाप को नष्ट करदेता है। जो मनुष्य पूरे माघ विधि पूर्वक अरुणोदय में गंगा स्नान करते हैं वे जाति स्मर (पूर्व जन्म की वात जानते हैं) तथा इतना ही नहीं सम्पूर्ण शास्त्र के अर्थ को जानने वाले होते हैं। ज्ञानी भी और निरोग भी होते हैं। संक्रान्ति अमावस्या पूर्णिमा तथा सूर्य ग्रहण चन्द्रग्रहण में स्नान करने वाला पुरुष ब्रह्मलोक को जाता है। चन्द्र ग्रहण का फल लाख गुणा सूर्य ग्रहण का फल १० लाख गुणा अधिक होता है। वारुणिपर्व, शतभिषा नक्षत्र से

युक्त चैत्र कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को गंगा स्नान करने से सौ सूर्य ग्रहण के समान फल देने वाला होता है, ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष के दशमी तिथि को मंगलवार हस्तनक्षत्र का योग हो तो गंगा जो इस मर्त्य लोक में उतरी थी इस दिन गंगा स्नान करे तो दश गुणा फल अधिक होता है, पाप राशि को नाश कर देता है और अश्वमेध यज्ञ का सौ गुणा फल देता है।

हरिद्वार में कुशावर्त तीर्थ के भींतर गंगा स्नान करने से सौ राजसूय यज्ञ का फल और दो अश्वमेध यज्ञ का फल होता है। उस तीर्थ में १५ दिन निवास करने से विश्वजित् नामक यज्ञ का फल प्राप्त होता है और एक लाख गो-दान का फल प्राप्त होता है। हरिद्वार में कपिला तीर्थ है वहाँ स्नान करने से ८० हजार कपिला गौदान का फल प्राप्त होता है।

गंगाद्वार कुशावर्त कनखल विल्वतीर्थ नील पर्वत इन स्थानों में स्नान करने पर पापों सेमुक्त हो जाता है। भगवान् विष्णु के दाहिने चरण से गंगा प्रकट हुई और बायाँ चरण से मानस पुत्री सरयू नदी प्रकट हुई हैं उस तीर्थ में शिव और विष्णु का पूजन करने से मानव विष्णु रूप हो जाता है। वहाँ का स्नान पाँच अश्वमेध यज्ञ का फल देता है। जह्नु कुण्ड में स्नान करने से निश्चय ही मनुष्य अपने इक्कीस पीढियों का उद्धार करता है।

गंगाजी के तट पर सन्ध्योपासन करने से लाख गुणा अधिक पुण्य होता है। जो मनुष्य मर कर दुर्गति में पड़ा हो उनके लिए तिल और कुश के द्वारा गंगा जल से तर्पण करने से बैकुण्ठ को जाता है। स्वर्ग में रहने वाले पितरों को गंगा जल से तर्पण करे तो वे मोक्ष को प्राप्त होते हैं। जो मनुष्य गंगा स्नान करके गंगा जल से शंकर जी की पूजा करते हैं वे एक ही जन्म में मुक्त हो जाते हैं। गंगा के तट पर शंकर जी के लिङ्ग की पूजा करे तो करोड़ो गुना अधिक फल प्राप्त होता है। गंगा के

तट पर विष्णु सूर्य दुर्गाआदि के मन्दिर बनाते हैं अन्यत्र की अपेक्षा कोटि गुना फल होता है। जो मनुष्य प्रतिदिन गंगा के तट पर के मिट्टी से यथाशक्ति उत्तम लक्षण युक्त शिवलिङ्ग बनाकर उनकी प्रतिष्ठा करके मन्त्र तथा पत्र पुष्प आदि से पूजा करता है फिर मूर्ति को गंगा में विसर्जन करता है (गंगा में डाल देता है) उसे अनन्त पुण्य की प्राप्ति होती है।

गंगा में स्नान कर 'नमो नारायणाय' इस मन्त्र का जप करता है उसे निःसन्देह मुक्ति प्राप्त होती है। नियम पूर्वक गंगा स्नान करके छः माह तक गंगा में 'ॐ नमो नारायणाय' का जप करता है उसे सर्वत्र सब प्रकार की सिद्धियाँ भी प्राप्त होती हैं। (जल दूध कुशाग्र का जल दही मधु लाल कनेर के फूल लाल चन्दन सूर्यार्घ्य में योग्य माने जाते हैं।

जो गंगा जी के समीप प्रणव सहित 'ॐ नमः शिवाय' का जप करता है। कम से कम २४ लाख जप करे तो वह साक्षात् शंकर के समान होता है। यह पञ्चाक्षर विद्या सिद्ध है इसको जपने वाला साक्षात् शिव ही है। "अपवित्रः पवित्रो वा....." इसका जप करने वाला पुरुष पाप-रहित हो जाता है। गंगा जी के पूजन करने से सब देवता का पूजन हो जाता है। प्रयत्न से उनका पूजन करे। जो मनुष्य पाप कर्म के कारण घोर नरक में डूबने वाला हो यदि दूर से ही गंगा जी का स्मरण करे तो भी उसका उद्धार कर देती है। चलते सोते ध्यान करते खाते पीते हँसते रोते हमेशा गंगा जी का चिन्तन करता है वह बन्धन से मुक्त हो जाता है। विचित्र भवन आभूषणों से विभूषित स्त्रियाँ आरोग्य धन और सम्पत्ति सब ये गंगाजी के स्मरण के पुण्य का फल है। गंगा, स्नान और जलपान करने वालों के सात पीढ़ी को तार देती है। सम्पूर्ण तीर्थों का स्नान करने से और समस्त इष्टदेव मन्दिर में पूजा करने से जो पुण्य होता है वही पुण्य केवल गंगा स्नान करने मात्र से हो जाता है।

श्री गंगाजी का ध्यान

श्री गंगा भगवती के चार भुजायें हैं तीन नेत्र हैं वे सम्पूर्ण अंगों से सुशोभित हैं उनके एक हाथ में रत्नमय कलश दूसरे में श्वेत कमल तीसरे

में वर चौथे में अभय मुद्रा है। उनके श्री अंगो पर श्वेत वस्त्र सुशोभित है, मोती और मणियों के हार उनके आभूषण हैं उनका मुखारविन्द परम सुन्दर है। वे सदा प्रसन्न रहती हैं। उनका हृदय कमल-करुणा रस से सदा भरा रहता है। उन्होंने वसुधा पर सुधा धारा बहा रक्खा है। तीनों लोक सदा उनके चरणों में नमस्कार करते हैं।

इस प्रकार जलमयी गंगा का ध्यान करके उनका पूजन करने वाला मनुष्य महान् पुण्य का भागी होता है। जो इस प्रकार १५ दिन भी पूजा करते हैं वे देवता के तुल्य होते हैं। पूर्वकाल में वैशाख शुक्ल सप्तमी को क्रोध पूर्वक जन्हु ने गंगाजी को पी लिया था और अपने दाहिने कान के छिद्र से निकाल दिया था।

जो अक्षयतृतीया को गंगा के तट पर घृतमयीधेनु का दान करता है वह पुरुष दस सहस्त्रों सूर्य के सामान तेजस्वी हो सम्पूर्ण भोगें से सम्पन्न हंस के विमान पर चढ़कर अपने पूर्वजों के साथ वैकुण्ठ धाम में वास करता है। एकाग्र चित्त होकर विधि पूर्वक गंगा जी की पूजा करके दिव्य स्वरूप ग़ंगा जी का ध्यान करके एक सेर अगहनी धान के चावलों को दो सेर गोदुग्ध में पकाकर खीर तैयार करके उसमें मधु घृत मिला दे १ तोला घी १ तोला मधु होनी चाहिये। भक्ति पूर्वक खीर, पुआ, लड्डू, जलेबी आधा गुञ्जा सुवर्ण कुछ चाँदी और चन्दन अगर कपूर कुमकुम गुग्गुल विल्वपत्र रोचना श्वेतचन्दन कमल तथा अन्य सुगन्धित पुष्प गंगा जी में छोड़ देवे और अत्यन्त भक्ति से ये मन्त्रों का उच्चारण प्रेम पूर्वक करता रहे।

ॐगंगायै नमः ॐनारायण्यै नमः ॐशिवाय नमः, प्रति मास की पूर्णिमा तथा अमावस्या को प्रातः काल एकाग्र चित्त होकर इसी विधि से गंगा जी की पूजा करना चाहिये। जो मनुष्य एक वर्ष तक हविष्यान्न भोजी मिताहारी तथा ब्रह्मचारी रहकर दिन में अथवा रात्रि के समय में भक्ति पूर्वक प्रसन्नता से एक वर्ष पर्यन्त शक्ति के अनुसार पूजा करता है उसे वर्ष के अन्त में श्री गंगा देवि प्रसन्न होकर दर्शन देती हैं और वर

देने के लिए उसके सामने खड़ी हो जाती है। इस प्रकार दिव्याति दिव्य गंगा देवी के दर्शन होने पर मानव कृत कृत्य हो जाता है। वह जो जो इच्छा करता है वही-वही वस्तु प्राप्त हो जाता है।

जो ब्राह्मण निष्काम भाव से गंगा जी की आराधना करता है वह उसी जन्म में मोक्ष प्राप्त करता है। यह सम्वत् सर व्रत भगवान् विष्णु का प्रेम प्रदान करता है मोक्ष प्रद है। गंगा जी के महात्म्य श्रवण करने से बड़े-बड़े पातक दूर हो जाते हैं।

जेष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी तिथि को हस्त नक्षत्र हो तो स्त्री या पुरुष भक्ति भाव से गंगा जी के तट पर रात्रि में जागरण करे १० प्रकार के फूलों से १० प्रकार के गन्ध से १० प्रकार के नैवेद्य से १० ताम्बूल एवं १० दीप आदि से श्रद्धा पूर्वक गंगा जी की पूजा करके १० गोता लगाकर स्नान करे इसी प्रकार १० पसर तिल घी में मिलाकर गंगा में डाल दे। उक्त दशहरा में स्नान करने से दश प्रकार के पापों का नाश हो जाता है। दस प्रकार के दस जन्म के पाप दूर होते हैं।

दस प्रकार के पाप—१. विना दिए किसी की वस्तु लेना, २. हिंसा, ३. परायी स्त्री से सम्बन्ध करना, ४. शारीरिक पाप ५. कठोर वचन बोलना, ६. असत्य भाषण, ७. चुगली, ८. मिथ्या व्यवहार व्यर्थ विवाद वाचिक पाप दूसरे का धन लेना, ९. मन से किसी का अनिष्ट चिन्तन, १०. झूठा अभिनिवेश (मरणभय करना) ये मानस पाप है। ये दस प्रकार के पाप करोड़ों जन्मों से सञ्चित हो तो भी नष्ट होते हैं और भगवान् के रथयात्रा करने पर भी उन पापों से मुक्त होता है :

गंगा दशहरा में गंगाजी की स्तुति करने का मन्त्र–ॐ नमो दशहरायै, नारायण्यै, गंगायैनमः, गङ्गा दशहरा के दिन रात्रि में और दिन में भी कथित मन्त्र का पाँच हजार जप करता है। वह मनु के बतायें १० धर्म का फल पाता है।

दस धर्म ये हैं—धृतिक्षमादमोस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह। धीर्विद्यासत्यमक्रोधोदशकं धर्म लक्षणम् ॥

अथ गंगा स्तोत्रम्

नमो शिवायै गंगायै, शिवदायै नमोऽस्तुते ।
नमोस्तु विष्णु रूपिण्यै, गंगायैते नमोनमः ॥ १ ॥

सर्ववेदस्वरूपिण्यै, नमो भेषजमूर्तये ।
सर्वस्य सर्वव्याधीनां, भिषक् श्रेष्ठ्यै नमोनमः ॥ २ ॥

स्थाणुजङ्गम सम्भूत, विषहन्त्र्यै नमोनमः ।
संसार विष नाशिन्यै, जीवनायै नमोनमः ॥ ३ ॥

तापत्रितयहन्त्र्यै च, प्राणेश्वर्यै नमोनमः ।
शान्त्यै सन्तापहारिण्यै, नमस्ते सर्वमूर्तये ॥ ४ ॥

सर्वं संशुद्धि कारिण्यै, नमः पाप विमुक्तये ।
भुक्ति मुक्ति प्रदायिन्यै, भोगवत्यै नमोनमः ॥ ५ ॥

मन्दाकिन्यै नमस्तेस्तु, स्वर्गदायै नमोनमः ।
नमस्त्रैलोक्य मूर्तायै, त्रिदशायै नमोनमः ॥ ६ ॥

नमस्ते शुक्ल संस्थायै, क्षमावत्यै नमोनमः ।
नन्दायै लिङ्गधारिण्यै, नारायण्यै नमोनमः ॥ ७ ॥

नमस्ते विश्वमित्रायै, रेवत्यै ते नमोनमः ।
वृहत्यै ते नमो नित्यं, लोक धात्रै नमोनयः ॥ ८ ॥

नमस्ते विश्व मुख्यायै, नन्दिन्यै ते नमोनमः ।
पृथ्व्यै शिवामृतायै च, विरजायै नमोनमः ॥ ९ ॥

परावरगताद्यायै, तारायै ते नमोनमः ।
नमस्ते स्वर्ग संस्थायै, अभिन्नायै नमोनमः ॥ १० ॥

शान्तायै ते प्रतिष्ठायै, वरदायै नमोनमः ।
उग्रायैमुख जल्पायै, संजीविन्यै नमोनमः ॥ ११ ॥

ब्रह्मगायै ब्रह्मदायै दुरितघ्न्यै नमोनमः।
प्रणतार्तिप्रभञ्जिन्यै जगन्मात्रे नमोनमः ॥ १२ ॥
विप्लुषायै दुर्गहन्त्यै, दक्षायै ते नमोनमः।
सर्वापत्प्रतिपक्षायै, मंङ्गलायै नमोनमः ॥ १३ ॥
परापरे परेतुभ्यं, नमोमोक्षप्रदे सदा।
गंगाममाग्रतोभूयात्, त्वयिगंगेऽस्तु मे स्थिति ॥ १४ ॥
आदौत्वामन्तेमध्ये च, सर्वा त्वं गाङ्गतेशिवे।
त्वमेव मूल प्रकृति, त्वंहि नारायण प्रभुः ॥ १५ ॥
गंगेत्वं परमात्मा च, शिवस्तुभ्यं नमोनमः।

इति श्री नारद पुराणोक्त गंगास्तुति सम्पूर्णम्

जो प्राणि भक्ति पूर्वक इस स्त्रोत्र का पाठ करता है या सुनता है वह मन वाणी शरीर द्वारा होने वाले दस प्रकार के पापों से तथा सभी दोषों से छूट जाता है रोगी रोग से और विपत् ग्रस्त पुरुष विपत्ती से छूट जाता है। शत्रु भय से बन्धन से सव प्रकार के भय से मुक्त हो जाता है। इस लोक में सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर मृत्यु के पश्चात् पर ब्रह्म पर मात्मा में लीन हो जाता है।

जिसके घर में गंगा स्तोत्र को लिखकर पूजा की जाती है। वहाँ अग्नि भय चोर भय नहीं होता है। गंगा दशहरा को गंगा में खड़ा होकर इसका दस वार पाठ करता है। वह दरिद्र असमंथ होने पर भी पूर्ण फल पाता है। उसका गंगा में मरने का फल प्राप्त होता है। वह ब्रह्म लोक से फिर नहीं लौटता है। गंगा जी के बहते मुख्य धारा के स्वामी विष्णु हैं। कंठ गत प्राण आने पर भी वहाँ प्रतिग्रह नहीं लेना चाहिये भाद्र पद शुक्ल चतुंदशी को गंगा जहांतक बहती हैं वहां तक गंगा का गर्भ जानना चाहिये, साधारण स्थिति में जहां तक जल रहता है उससे डेढ सौ हाथ दूर तक गर्भ की सीमा है। तीर को छोड़ कर क्षेत्र वास करे, तीर वास अभीष्ट नहीं है। एक योजन भूमि गंगा जी के

क्षेत्र की सीमा है जितने पाप हैं गंगा की सीमा को नहीं लांघते। गंगाजी में तीर्थं में देव मन्दिर में प्रतिग्रह का दान न ले। ग्रहण का दान भी नले। उक्त स्थान में प्रति ग्रह लेने से प्रति ग्रह का धन जब तक उसके पास रहता है तव तक उसका किया हुआ तीर्थं व्रतादि निष्फल होते हैं। गंगा में प्रति ग्रह लेना मानों गंगा जी को बेंचना है, गंगा को बेंचने से भगवान् विष्णु की भी विक्रीय हो जाती है।

जो गंगाजी के तीर की मिट्टी को लेकर शिर पर धारण करते हैं। वे मानों सूर्यं के समान होते हैं। गंगा के तीर पर की मिट्टी हटा कर पितर को पिंडा देते हैं स्वर्गं पहुँचाते हैं। जो मनुष्य गंगा के महात्म्य को सुनता है पढ़ता है दूसरे को सुनाता है विष्णुपद को जाता है। शिवलोक में जाना चाहे तो भी गंगा महात्म्य सुनने से प्राप्त होता है। (नारद पुराण गंगा महात्म से)

जिन श्रेष्ठ मनुष्यों ने एक बार भी भक्तिपूर्वक गंगा में स्नान किया है कल्याणमयी गंगा में स्नान किया है कल्याणमयी गंगा उनकी लाखों पीढ़ियों को भवसागर से उद्धार कर देती है। परस्त्री और पर धन हरण करने तथा सबसे द्रोह करने वाले पापी मनुष्यों को उत्तमगति प्रदान करने का साधन एकमात्र गंगाजो ही हैं। वेदशास्त्र के ज्ञान से रहित गुरु निन्दा परायण सदाचार शून्य मनुष्य के लिए गंगाजी ही गति हैं। गंगाजी पृथ्वी पर मनुष्यों को, पाताल में नागों को, स्वर्गं में देवताओं को, तारने वाली हैं। जानकर या अनजान में इच्छा से या अनिच्छा से गंगा में मरने वाला मनुष्य स्वर्गं और मोक्ष प्राप्त करता है। योगी और सत्वगुण सम्पन्न पुरुष को जो गति मिलती है वही गति गंगा में प्राण त्यागने वाले जीव को मिलती है। हजार चान्द्रायण व्रत करने वाला और गंगाजल पीने वाला दोनों में गंगाजल पीने वाला श्रेष्ठ है।

श्री गंगाजी का मूलमन्त्र—जिसको एकबार भी जप करने पर मनुष्य पवित्र हो जाता है। और विष्णु के अङ्ग में प्रतिष्ठित होता है।

(मन्त्र—ॐ नमोगङ्गायै विश्वरूपिण्यै नारायण्यै नमोनमः) भगवान् श्री नारायण से प्रकट हुई विश्वरुपिणी गंगा को बारंबार नमस्कार है।

जो मानव अपने पितरों के हड्डियों के टुकड़े इकट्ठा कर गंगा में डालने जाता है वह पग-पग पर अश्वमेध यज्ञ का फल पाता है। गंगा स्नान करने वाले यात्री को रास्ता बताने वाले को गंगा स्नान का फल मिलता है। गंगा स्नान या तीर्थयात्रा के लिए जो दूसरे को राह का खर्चा देते हैं वे उससे दुगुने ज्यादा फल प्राप्त करते हैं।

(ना० पु०)

इति गंगामहात्म्य

अथ गंगाजी का परिचय

ब्रह्मा ने सृष्टि का आरम्भ करतेसमय मूर्तिमती प्रकृति से कहा हे देवि ! तुम सम्पूर्णं लोकों का आदि कारण बनो। मैं तुमसे ही सृष्टि का आरम्भ करूँगा। यह सुनकर पराप्रकृति सात रूपों में अभिव्यक्त हो गयी। (१) गायत्री, (२) वाग्देवी (सरस्वती), (३) लक्ष्मी, (४) उमा देवी, (५) शक्ति बीजा, (६) तपस्विनो, (७) धर्मंद्रवा (गंगा)। पहली शक्ति गायत्री से सम्पूर्णं वेद प्रकट हुए। वेद से सारे जगत् की स्थिति है। स्वस्ति स्वाहा स्वधा और दीक्षा भी गायत्री से उत्पन्न हुई हैं। (यज्ञ में मातृका सहित गायत्री का उच्चारण करें। (२) वाग्देवी (भारती सरस्वती) सबके मुख और हृदय में स्थित हैं। वे ही समस्त शास्त्रों में धर्मं का उपदेश करती हैं।

३—तीसरी प्रकृति लक्ष्मी हैं जिनसे वस्त्र और आभूषण की राशि प्रकट होती है त्रिभुवन का राज्य तथा सुख समृद्धि भी उन्हीं की देन है।

४—चौथी प्रकृति है 'उमा' उनके द्वारा ही संसार में भगवान् शंकर के स्वरूप का ज्ञान होता है, अतः उमा को ज्ञान की जननी ब्रह्म विद्या जानें।

५—बीजा शक्ति नाम की जो पाँचवी प्रकृति है वह अत्यन्त उग्र है। समूचे विश्व को मोह में डालने वाली है। समस्तलोकों का वही पालन और संहार करती हैं।

६—तपस्विनी नाम की छठी शक्ति है, वह तपस्या की अधिष्ठात्री देवी है।

७—सातवीं प्रकृति धर्मद्रवा है, जो सब धर्मों में प्रतिष्ठित हैं। उसे सबसे श्रेष्ठ देखकर मैंने अपने कमण्डलु में धारण कर लिया फिर प्रभावशाली श्रीविष्णु ने बलि के यज्ञ के समय प्रकट किया उनके चरणयुगल सारे भूतल में व्याप्त हुए। एक चरण आकाश और ब्रह्माण्ड को भेद कर मेरे सम्मुख ब्रह्मलोक में स्थित हुआ। उस समय मैंने कमण्डलु के जल से चरण धोया और पूजन किया, तब उस समय वह जल हेमकूट पर्वत पर जा गिरा। वहाँ से भगवान्शंकर के पास पहुँच कर वह गंगा के रूप में उनकी जटा में स्थित हुआ। गंगाजी बहुत काल तक शंकर के जटा में भ्रमण करती रही तत्पश्चात् महाराज भगीरथ ने शिव की आराधना करके गंगा को पृथ्वी पर उतारा। वे गंगाजी तीन धाराओं में प्रकट होकर तीनों लोकों में गईं। इसलिए संसार में त्रिस्रोता के (त्रिपथगा) नाम से विख्यात हुई, तीनों देवताओं के संयोग से पवित्र होकर वे त्रिभुवन को पवित्र करती हैं। भगवती भागीरथी का आश्रय लेकर मानव सम्पूर्ण धर्मों का फल प्राप्त करता है, जीव को समस्त शुभकर्म से जो गति दुर्लभ है, वह गंगा सेवन से ही मिल जाती है।

पद्मपुराण

श्री गंगा जी की उत्पत्ति इस प्रकार भी है—

एक इक्ष्वांकुवंशी सगर नाम के राजा थे। उनकी दो रानियाँ थी। एक विदर्भपुत्री केशिनी दूसरी कश्यप पुत्री सुमति। राजा के कोई सन्तान नहीं थे। राजा दोनों पत्नियों को लेकर हिमालय में जाकर तप

करने लगें। सौ वर्ष के बाद भृगु मुनि से पुत्र प्राप्ति के लिए वरदान पाया। केशिनी नाम की रानी केलिए एक सन्तान और सुमति से साठहजार पुत्रों को वरदान में पाया था।

केशिनी के पुत्र का नाम था असमञ्जस। छोटी रानी सुमति को एक तूँवी के आकार का गर्भ पिण्ड पैदा हुआ। जिसमें से साठ हजार बालक निकल आये। अशुंमान् योग भ्रष्ट था। इस लिए नगर के बालकों को कुए में फेंक देता था, उनके पिता ने उसको नगर से निकाल दिया। उसने एकांत में सिद्धि पाया। असमञ्जस का पुत्र अंशुमान् बड़ा पराक्रमी था। राजा सगर ने यज्ञ करने के लिए घोड़ा छोड़ा। इन्द्र ने उसे चूरा लिया। अंशुमान् अश्व की रक्षा करता था। राक्षस रूप धारी इन्द्र घोड़ा लेकर अन्तरध्यान हो गया। सगर के साठ हजार पुत्रों ने अश्व का अन्वेषण किया। पर कही भी अश्व न मिला। सारी पृथ्वी को सगर पुत्रों ने छान डाला। दक्षिण दिशा में पृथ्वी को खोदकर पाताल में प्रविष्ट हुए वहाँ पर कपिल मुनि के आश्रम में घोड़ा बाँधकर इन्द्र भग गया। सगर पुत्रों ने कपिलमुनि को चोर समझ कर तंग करने लगे।

कपिल मुनि ने धीरे-धीरै आंख खोला तो उनके क्रोधाग्नि के ज्वालाओं ने साठ हजार सगर पुत्रों को जलाकर भस्म कर डाला।

इधर सगर अपने पुत्रों को गये बहुत दिन हुए तो, अंशुमान् को अपने चाचाओं को ढूँढ़ने के लिए भेजा। वह ढूँढ़ते हुए सागर में कपिल मुनि के आश्रम पर पहुँचा। वहाँ घोड़ा बँधा हुआ था। अंशुमान् ने कपिल मुनि को प्रणाम किया और अपने चाचाओं का उद्धार किस प्रकार होगा 'उपाय' पुछा। कपिलमुनि ने उपाय बतलाया कि श्री गंगाजो को पृथ्वी तल पर ले आने से उनके स्पर्श से उनका उद्धार हो जायेगा। घोड़ा लेकर अंशुमान् वापस आया, यज्ञ सम्पन्न हुआ। अंशुमान् का पुत्र था दिलीप। उसने अपने पूर्वजों के उद्धार का प्रयत्न किया पर सफलता नहीं मिली। उसका पुत्र हुआ भगीरथ। वह राज्य छोड़कर गंगा को भूतल

पर लाने के लिए घोर तपस्या करने लगा। उसके तपस्या से प्रसन्न होकर गंगाजी ने उसको दर्शन दिया। दर्शन पाकर भगीरथ परम प्रसन्न हुआ और गंगा से भूतल पर पधारने की प्रार्थना करने लगा। गंगाजी ने कहा मैं पृथ्वी पर चलूँगी पर मुझे कौन रोकेगा।

पृथ्वी को विदिर्ण करके रसातल में चली जाउँगी तो तुम्हारे पूर्वजों का उद्धार कैसे होगा। भगीरथ जी ने माँ गंगा से पूछा, आपको कौन धारण कर सकता है, उसे बताइये। तब गंगाजी ने कहा शंकर जी सम्भवतः रोक सकते है।

उन्होंने शंकर को तप द्वारा प्रसन्न कर लिया। जटाधारी शंकरजी ने गंगाजी को रोकना स्वीकार किया।

भगीरथ ने श्रीगंगाजी का आह्वान किया। गंगाजी वेग से शंकरजी के जटा में उतरी। गंगा का अभिमान दूर करने केलिए अपनी जटा जाल में गंगाजी को रोक दिया। प्रयास करने पर भी गङ्गाजी शंकर के जटा से बाहर न जा सकी। जटा शंकरी गङ्गा को शंकर के जटा में अन्तरहित देखकर राजा भगीरथजी दुखित हुए। आशुतोष शंकरजी की स्तुति करने लगे। शंकरजी ने प्रसन्न होकर गङ्गाजी को अपनी जटाबन्धन से मुक्त करदिया। गङ्गाजी बिन्दुसरोवर में जा गिरी। वहाँ से गोमुख होती हुई सात धाराओं में विभक्त हुई। ह्लादिनी, पावनी, नलिनी, तीन धारायें पूर्व की ओर सुचक्षु, सीता, महानदी ये पश्चिम की ओर तथा सातवीं धारा भगीरथ के दिव्य रथ के पीछे-पीछे चली। रथ के पहिया के पीछे-पीछे होती हुए प्रवाहित हुई। मार्ग में ऋषि, मुनि, महात्मागण स्नान, जलपान, आचमन करके दिव्यलोक में प्रस्थान करने लगे। गङ्गाजी तीव्रगति से प्रवाहित हो रही थी। मार्ग में राजर्षि जन्हु यज्ञ कर रहे थे। उनका यज्ञस्थल बहने लगा, तो उन्होंने गङ्गाजी को पान कर लिया। देवता, ऋषि तथा मुनियों के प्रार्थना करने से जह्नु ने कान के रास्ते से बाहर कर दिया, तब से

गङ्गाजी को जाह्नवी कहाँ जाता है। तदनन्तर गङ्गाजी आगे बढ़ी। अनेक स्थानों को पवित्र तीर्थभूमि बनाती हुई त्रिवेणी संगम तीर्थराज प्रयाग में पहुँची।

वहाँ से आगे अनेक स्थानों को पवित्र संगम बनाती हुई गङ्गाजी सागर में जा मिली। गंगा और सागर का संगम होने से गंगासागर संगम तीर्थ कहलाया। वहीं पर कपिल मुनि का आश्रम विद्यमान था। वहां राजा सगर के साठ हजार पुत्र कपिल मुनि के क्रोधाग्नि से जल कर मर चुके थे। उनको मुक्त करके श्री गंगाजी ने सगरपुत्रों को स्वर्गलोक में भेज दिया।

इति गंगा परिचय।

जो ईश्वर से डरता है, उसे दुनिया भी डरती है, और जो प्रभु से नहीं डरता उससे दुनिया भी नहीं डरती।

जब साधक अधिक खाने लगता है, तो देवता रोने लगते हैं। आहार में जिसकी लालसा बढ़ती है वह साधना के मार्ग से जल्दी ही दूर हो जाता है।

जो मनुष्य दुःख में प्रभु का भजन करता है वह महान् होता है।

अधम कौन है ? जो ईश्वर के मार्ग का अनुसरण नहीं करता।

प्रायश्चित की तीन सीढ़ियाँ हैं आत्मग्लानि दूसरी बार पाप न करने का निश्चय आत्म शुद्धि।

वैराग्य ईश्वर प्राप्ति का गूढ उपाय है उसे तो गुप्त रखने में ही कल्याण है जो अपना वैराग्य प्रकट करते हैं उनका वैराग्य उनसे दूर भागता है।

—'सन्त वाणी'

इति पूर्वार्द्धं सम्पूर्णम्।

श्रीगणेशायनमः

अथ श्रीकृष्ण का

प्रातः कालीन ध्यान

समुद्धूसरोरःस्थलेधेनुधूल्या,
सुपुष्टाङ्गमष्टापदाकल्पदीप्तम् ।
कटीरस्थले चारु जंघान्तयुग्मं,
पिनद्धं क्वणत् किङ्किणोजालदाम्ना ॥ १ ॥
हसन्तं हसत् बन्धु जीव प्रसून,
प्रभापाणि पादाम्बुजोदार कान्त्या ।
दधानं करे दक्षिणे पायसान्नं,
सुहैयंगवीनं तथा वाम हस्ते ॥ २ ॥
लसत् गोपगोपी गवां वृन्द मध्ये,
सितं वास वाद्यैः सुरैर्चितांघ्रिम् ।
महीभार भूता मराराति यूथां,
स्ततः पूतनादीन् निहन्तुं प्रवृत्तम् ॥ ३ ॥
(नारदपुराण ८०-७५-८०)

अर्थ—(एक सुन्दर उद्यान से घिरी हुई सुवर्णमयी भूमि पर रत्नमय मण्डप बना हुआ है। वहाँ पर शोभायमान कल्पवृक्ष के नीचे स्थित रत्न निर्मित कमल युक्त पीठ पर एक सुन्दर शिशु विराजमान है, जिनकी अङ्ग कान्ति इन्द्रनीलमणि के समान श्याम है। उनके काले-काले घुँघराले चिकने केश हैं, उनके दोनों गाल हिलते हुए स्वर्णमय कुण्डलों से अत्यन्त सुन्दर लगते हैं, उनकी नाशिका बड़ी सुघर है, उस सुन्दर बालक के मुखारविन्द पर मन्द मुस्कान की अद्भुत छटा छिटक

रही है। वह सोने के तारों में गुँथा और सोने से ही मढ़ा हुआ सुन्दर वधनखा, धारण करते हैं, जिसमें परम उज्ज्वल चमकीले रत्न जड़े हुए हैं। गोधूलि से धूसरित वक्षः स्थल में धारण किए हुए स्वर्णमय आभूषणों से उसकी दीप्ति बहुत बढ़ी हुई है, उनका एक-एक अंग अत्यन्त पुष्ट है, 'उनकी दोनों पिण्डलियों का अन्तिम भाग अत्यन्त मनोहर है। उसने अपने कटिभाग से घुंघरूदार करधनी की लड़ी बाँध रक्खी है' जिससे सुमधुर झनकार होती रहती है, खिले हुए (दुपहरिया) के फूल की अरुण प्रभा से युक्त करारविन्द और चरणारबिन्दों की उदार कान्ति से सुशोभित वह शिशु मन्द-मन्द हँस रहा है। उसने दाहिने हाथ में खीर और बायें हाथ में तुरन्त का निकाला हुआ माखन ले रक्खा है। ग्वालों गोप-सुन्दरियों और गौओं की मण्डली में स्थित होकर वह बड़ी शोभा पा रहा है। इन्द्र आदि देवता उसके चरणों की आराधना करते हैं वह पृथ्वी के भार भूत दैत्य समुदाय पूतना आदि का संहार करने में लगा है।

इस प्रकार ध्यान करके एकाग्र चित्त हो भगवान् का पूजन करे, दही और गुड़ का नैवेद्य अर्पण करे, एक हजार मन्त्र का जप करे। मन्त्र— ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।

इसी प्रकार मध्याह्नकाल में नारदादि मुनिगणों और देवताओं से पूजित विशिष्ठ रूपधारी भगवान् श्रीकृष्ण का पूजन करे। मध्यान कालीन ध्यान इस प्रकार करे।

मध्याह्नकालीन ध्यान

लसत् गोपगोपी गवांवृन्दमध्ये,
स्थितंसान्द्र मेघप्रभं सुन्दराङ्गम्।
शिखण्डीच्छदापोडमब्जायताक्षं,
लसच्चिल्लिकं पूर्णचन्द्राननं च॥ १॥

चलत् कुण्डलोल्लासि गण्डस्थल श्री,
भरं सुन्दरं मन्दहासं सुनासम्।
सुकातंस्वराभाम्बरं दिव्यभूषं,
क्वणत् किंकिणीजालमात्तानुलेपम्।
वेणुंधमन्तं स्वकरेदधानं,
सव्येदरयष्टिमुदारवेषम्।
दक्षे तथैवेप्सितदानदक्षं,
ध्यात्त्वार्चयन्नन्दजमिन्दिराप्यैः॥
(ना० प्र० ८०-८३-८५)

अर्थ—भगवान् श्रीकृष्ण मेघ के समान श्याम तथा नीलमणि के तुल्य सुन्दर अङ्ग शोभा से युक्त हैं, शिर पर मोर मुकुट धारण किए हैं, कमल के सदृश नेत्र सुशोभित हो रहे हैं, गौ गोपी और गोपों के मध्य में सुशोभित हैं, उनका मुख कमल के समान चिकना और पूर्णचन्द्र के समान सुन्दर है। भौंहों का मध्यभाग शोभायुक्त है, उनके कानों में मकराकृत कमनीय कुण्डलों से कपोलों की शोभा राशि को धारण करते हैं, सुन्दर नासिका है, सुन्दर हास्य हँस रहे हैं, तपाये हुए सोने के सामान पीला पीताम्बर धारण किए हैं, पैरों में घुंघरू धारण किये है, बजाते हुए चलते हैं। अङ्ग-अङ्ग में अनुलेपन किया है, दाहिने हाथ में बंशी लेकर बजा रहे हैं, बायें हाथ में छड़ी लिए हैं, अत्यन्त मनोहर वेष है, दाहिने हाथ से भक्तों को मनोवाञ्छित वस्तुओं को प्रदान करते हैं। लक्ष्मीपति भगवान् नन्दनन्दन श्रीकृष्ण का ध्यान करके पूजा करें।

सायं कालीन ध्यान

सायह्ने द्वारवत्यां तु, चित्रोद्यानोपशोभिते।
द्वयष्टसाहस्रसंख्यातैः, भवनैरूपमण्डिते॥ १॥
हंससारससंकीर्णं, कमलोत्पल शालिभिः।
सरोभिर्निर्मलाम्भोभिः, परीते भवनोत्तमे॥ २॥

उद्यत्प्रद्योतनोद्योत, द्युतौ श्रीमणिमण्डपे ।
हेमाम्भोजसमासीनं, कृष्णं त्रैलोक्य मोहनम् ॥ ३ ॥
तेभ्यो मुनिभ्यः स्वंधाम, दिशंन्तं परमक्षरम् ।
मुनिवृन्दैः परिवृतमात्मतत्त्व विनिर्णये ॥ ४ ॥
उन्निन्द्रेन्दिवर श्यामं, पद्मपत्रायतेक्षणम् ।
स्निग्धकुन्तल सम्भिन्न किरीटवनमालिनम् ॥ ५ ॥
चारूप्रसन्नवदनं, स्फुरन्मकरकुण्डलम् ।
श्रीवत्सवक्षसंभ्राजत्कौस्तुभं सुमनोहरम् ॥ ६ ॥
काश्मीरकपिशोरस्कंपीतकौशेयवाससम् ।
हारकेयूरकटककटि, सूत्रैरलंकृतम् ॥ ७ ॥
हृतविश्वम्भराभूरि भारंमुदितमानसम् ।
शङ्खचक्रगदापद्म, राजद्भुजचतुष्टयम् ॥ ८ ॥

(ना० पु० ५०-८०-९२)

अर्थ—इस प्रकार सायं काल में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारिकापुरी में एक सुन्दर भवन के भीतर विराजमान हैं। वह श्रेष्ठ भवन सोलह हजार गृहों से अलंकृत हैं। उसके चारोंओर निर्मल जल वाले सरोवर सुशोभित हैं। हंस सारस आदि पक्षियों से व्याप्त कमल और उत्पल आदि पुष्प उन सरोवरों की शोभा बढ़ाते हैं उक्त भवनों में एक शोभा सम्पन्न मणिमय मण्डप है। जो उदय कालीन सूर्यदेव के समान अरुण प्रकाश से प्रकाशित हो रहा है। उस मण्डप के भीतर सुवर्णमय कमल की आकृति का सुन्दर सिंहासन है। जिस पर त्रिभुवनमोहन श्रीकृष्ण बैठे हैं। उनसे आत्मतत्त्व का निर्णय कराने के लिए मुनियों के समुदाय ने उन्हें सब ओर से घेर रखा है। भगवान् श्यामसुन्दर उन मुनियों को अपने अविनाशी परमधाम का उपदेश दे रहे हैं।

उनकी अङ्गकान्ति विकसित नीलकमल के समान श्याम हैं। दोनों नेत्र प्रफुल्ल कमल दल के समान विशाल है। सिर पर स्निग्ध

अलकावलियों से संयुक्त सुन्दर किरीट सुशोभित है। गले में वनमाला शोभा पा रही है। प्रसन्न मुखारविन्द मनको मोह लेता है, कपोलों पर मकराकृत कुण्डल झिलमिला रहे हैं। वक्षस्थल में श्रीवत्सका चिह्न है, वहीं कौस्तुममणि अपनी प्रभाविखेररही है, उनका स्वरूप अत्यन्त मनोहर हैं, उनका वक्षस्थल केसर के अनुलेपन से सुनहली प्रभा धारण करता है।

वेरेशमी पीताम्बर पहने हुए हैं विभिन्न अङ्गों में हार, वाजूवंद, कड़े और करधनी आदि आभूषण उन्हें अलंकृत कर रहे हैं। उन्होंने पृथ्वी का भारी भार उतार दिया है उनका हृदय परमानन्द से परिपूर्ण है, तथा उनके चारों हाथ शंख, चक्र, गदा, और पद्म से सुशोभित है।

इस प्रकार ध्यान करे और पूजन करे, आवरणों की भी पूजा करे। विधि पूर्वक पूजन करके खीर का भोग लगावे दुग्ध में शक्कर मिश्रित जल को भावितकर तर्पण करे। उसके बाद मूल मन्त्र का १०८ बार जप करे दिन में एकबार होम करे, तत्पश्चात् स्तुति, नमस्कार, आत्म समर्पण, करे। समर्पण कर पुनः अपने हृदय कमल में स्थापित करे इस प्रकार प्रतिदिन करने से सम्पूर्ण कामना प्राप्त कर अन्त में परमगति को प्राप्त करता है। मूल मन्त्र–'ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा' यह है।

विद्याप्रदमन्त्रसाधना

ॐ कृष्ण-कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञः त्वं प्रसीद मे।
रमारमणविद्येश विद्यामाशु प्रयच्छ मे॥

हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाकृष्ण आप सर्वज्ञ हैं मुझ पर प्रसन्न होइये हे! रमारमण हे! विद्येश्वर मुझे शीघ्र विद्या दोजिये। यह ३२ अक्षर वाला मन्त्र महाविद्या प्रद हैं। अनुष्टुपछन्द में है, कृष्ण देवता हैं, मन्त्र के चारों चरणों और कृष्ण देवता और सम्पूर्ण मन्त्रों से पञ्चाङ्ग न्यास करे। और साथ ही श्री हरि का ध्यान करे निम्नलिखित स्तुति भी करे।

दिव्योद्यानेविवस्वत् प्रतिमणिमये मण्डपे योगपीठे।
मध्ये य सर्ववेदान्तमय सुरतरोः सन्निविष्ठो मुकुन्द ॥

वेदै कल्पद्रुमरूपैः शिखरि सतं समालम्बिकोशैश्चतुर्भिः।
न्यायै तर्कै पुराणैः स्मृतिभिरभिवृत्त स्ताद्दशैश्चामराद्यैः ॥

दद्याद्विभ्रत्कराग्रैरपिदरमुरलीपुष्पवाणेक्षुचापाः।
नक्षस्पृक् पूर्णकुम्भो स्मरललितवपुः दिव्यभूषाम्बराङ्गः ॥

व्याख्यां वामे वितन्वन् स्फुर रुचिर पदो वेणुना विश्वमात्रे।
शब्दब्रह्मोद्भवेनश्रियमरुणरूचिर्वल्लवीवल्लवोनः ॥

ना० पु० ८१।३४-३५

उपरोक्त ध्यान करे मन्त्र जप करे। मन्त्र–"ऐंक्लीं कृष्णाय ह्रीं गोविन्दाय श्रीं गोपीजन वल्लभाय स्वाहा ह्रसों।"

यह २२ अक्षर का मन्त्र वागीशत्व प्रदान करने वाला है (विद्या प्राप्ति करने का) है। इस मन्त्र के नारद ऋषि है। गायत्री छन्द है, विद्या दाता गोपाल देवता हैं। क्लीं बीज है ऐं शक्ति है विद्या प्राप्ति के लिए इसका विनियोग किया जाता है।

इसका ध्यान इस प्रकार है—जो वाम भाग के ऊपर वाले हाथ में उत्तम विद्या की पुस्तक और दाहिने भाग के ऊपर वाले हाथ में स्फटिक मणि की मातृ का मयी अक्षमाला धारण करते हैं, इसी प्रकार नीचे के दोनों हाथों में शब्द ब्रह्ममणी वंशी लेकर वजाते हैं। जिनके अङ्गो में गायत्री छन्द मयी पीताम्बर सुशोभित हैं, जो श्याम वर्ण कोमल कान्तिमान मयूर पिच्छमय मुकुट धारण करने वाले सर्वज्ञ तथा मुनिवरों द्वारा सेवित हैं। उन श्री कृष्णभगवान् का चिन्तन करे।

इस प्रकार लीला करनेवाले भुवनेश्वर कृष्ण का ध्यान करके ४ लाख मन्त्र का जप करे और पलास के फूलों से दशांश आहुति देकर मन्त्रों पासक २० अक्षर वाले मन्त्र के लिए कहे हुए विधान के अनुसार पूजा करे, इस प्रकार जो मन्त्र की उपासना करता है वह वागीश्वर हो जाता है, उसके बिना देखे हुए शास्त्र भी गंगा के लहरों के समान स्वतः प्रस्तुत हो जाते हैं।

शालिग्राम में मणि में मन्त्र में मण्डल में तथा प्रतिमाओं में ही सदा श्री हरि का पूजन करे (भूमि पर नहीं) आसन से आवाहन आभूषण तक भगवान को अर्पण करे।

श्रीकृष्ण सम्बन्धि मोक्षप्रद साधना

अब मैं एक उत्तम रहस्य का वर्णन करता हूं जो कि मनुष्यों को मोक्ष प्रदान करने वाला है। साधक अपने हृदय कमल में भगवान देवकी नन्दन का इस प्रकार ध्यान करे—

मूल—श्रीमत्कुन्देन्दुगौरं सरसिजनयनं शंखचक्रे गदाब्जे।
विभ्राणं हस्त पद्मै नवनलिन लसन् मालया दीप्य मानः ॥
वन्दे वेद्यं मुनिन्द्रैः कणिक मणि लसद्दिव्यभूषाम्भराभम्।
दिव्यांङ्ग लेप भासं सकल भय हरं पीत वस्त्रं मुरारीम् ॥

(ना० पु० ५०।८०-१५०)

अर्थ—जो कुन्द और चन्द्र के समान सुन्दर गौर वर्ण है, जिनके नेत्र कमल की शोभा को लज्जित कर रहे हैं, जो अपने करारविन्दों में शंख, चक्र, गदा, पद्म, धारण करते हैं, नूतन कमलों की माला से सुशोभित हैं, छोटी-छोटी मणियों से जड़ित सुन्दर दिव्य आभूषण जिनके अनुपम

सौन्दर्य, माधुर्य, बढ़ा रहे हैं। तथा जिनके श्री अंगो पर दिव्य अङ्गराग शोभा पा रहा हैं, उन मुनीन्द्र वन्द्य सकल भयहारी पीताम्बरधारी मुरारी की मैं वन्दना करता हूँ।

इस प्रकार ध्यान करके आदि पुरुष श्रीकृष्ण को अपने विकसित हृदय कमल के आसन पर विराज मान देखे। और यह भावना करे कि वे घनीभूत मेघों की श्याम घटा तथा अद्भुत सुवर्ण किसी नील एवं पीत प्रभा धारण करते हैं। इसी चिन्तन के साथ-साथ १२ लाख मन्त्र का जप करे, दो प्रकार के मन्त्रों में से एक प्रकार का जो प्रणव सम्पुटित है।

मन्त्र–१. "ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपी जन वल्लभाय स्वाहा।"

२. "नमो भगवते नन्द पुत्राय आनन्दवपुषेगोपीजनवल्लभाय स्वाहा,"

फिर दूधवाले वृक्षों के समिधाओं से १२ हज्जार आहुति दे अथवा मधु, घृत, एवं मिश्री मिश्रित खीर से होम करे। इस प्रकार मन्त्रोपासक अपने हृदय कमल में लोकेश्वरों के भी आराध्य देव भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान करते हुए प्रतिदिन तीन हजार मन्त्र का जप करे, फिर सायंकाल के लिए बताई हुई विधि से भली भांति पूजन करके साधक भगवत् चिन्तन में संलग्न हो, पुनः पूर्वोक्त रीतिसेहवन करे। जो इस प्रकार गोपालनन्दन श्री कृष्ण का नित्य भजन करता है, वह भव सागर से पार हो जाता है। और परमपद को प्राप्त कर लेता है, इस प्रकार भगवान कृष्ण का नित्य भजन करते हैं, उनके लिए कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं है।

अवगोपाल यन्त्र का वर्णन करते हैं—

जो अमोघ है, इसकी महती शक्ति अवर्णनीय है—इस यन्त्र को सोने के पत्रों पर सोने के ही सलाके से गोरोचन द्वारा लिख कर उसकी गुटिका (तवीज) बना ले इसी को गोपाल यन्त्र कहते हैं। यह सम्पूर्ण

मनोरथों को देने वाला है। जो कि रक्षा यश, पुत्र, पृथ्वी, धन, धान्य, लक्ष्मी और सौभाग्य की इच्छा रखने वाले हैं, उन श्रेष्ठ पुरुषों को निरन्तर इस यन्त्र को धारण करना चाहिये।
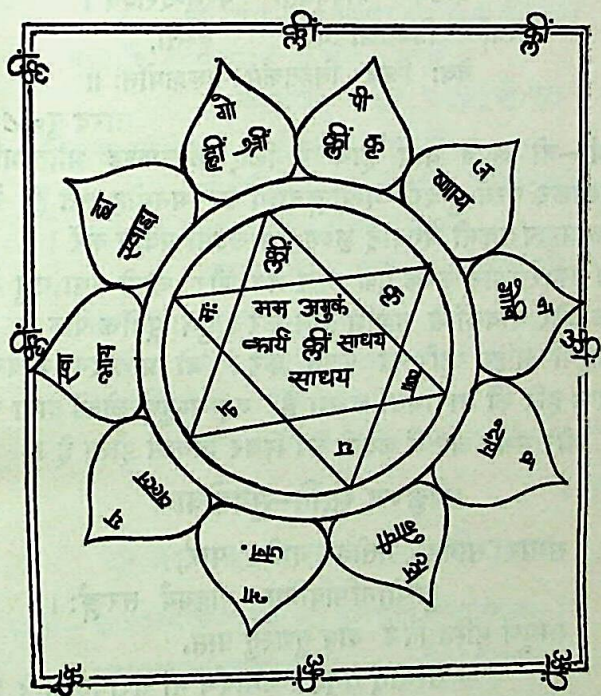
इसका अभिषेक करके मन्त्र जप पूर्वक धारण करना चाहिये। यह तीनों लोकों को वस में करने के लिए अमोघ अस्त्र है।

लक्ष्मी और ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए विधि और मन्त्र

मन्त्र—ॐ लीला दण्ड गोपीजन संसक्त दोर्दण्ड बाल रूप मेघ श्याम-भगवान् विष्णो स्वाहा - यह उन्तीस अक्षरों का मन्त्र है, इसके नारद

ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द और लीला दण्ड हरि देवता हैं, चौदह चार-चार तीन तथा चार मन्त्राक्षरों द्वारा क्रमशः अंङ्गन्यास करे।

ध्यान – सम्मोहयञ्वनिजवामकरस्थ लीला,
दण्डेन गोपयुवती परसुन्दरीश्च।
दिश्यन्निजप्रियसखांसगदक्ष हस्तो,
देवः श्रियं निहतकंस उरूक्रमोनः॥

नारद पु० ८१-८५

अर्थ—जो अपने वायें हाथ में लिए लीलादण्ड भाँति-भाँति के खेल दिखाकर परम सुन्दरी गोपाङ्गनाओं का मनमोह लेते हैं, वे कंस विनासक महापराक्रमी भगवान् कृष्ण हमें लक्ष्मी प्रदान करें।

इस प्रकार ध्यान करके एक लाख जप और चीनी तथा मधु में सने हुए तिल और चावलों से दशांश होम करे। पुनः पूर्वोक्त पीठ पर अंङ्ग-तथा आयुधों सहित हरि का पूजन करे। जो प्रतिदिन आदरपूर्वक लीला दण्ड हरि की आराधना करता है, वह सम्पूर्ण लोकों द्वारा पूजित होता है, और उसके घर में लक्ष्मी का स्थिर निवास होता है।

श्रीकृष्ण स्तुति–सुव्रतोवाच

संसार सागर मतीव गभीर पारं,
दुःखोर्मिभिविविध मोहमयै तरङ्गैः।
सम्पूर्णं मस्ति निज दोष गुणैस्तु प्राप्तं,
तस्मात् समुद्धर जनार्दन मां सुदीनम्॥ १॥
कर्माम्बुदे महति गर्जति वर्षतीव,
विद्युल्लताल्लसति पातकसञ्चयैर्मे।
मोहान्धकार पटलैर्ममनष्टदृष्टे,
दीनस्य तस्य मधुसूदनदेहिहस्तम्॥ २॥
संसार कानन वरं बहुदुःख वृक्षैः,
संसेव्यमान मपि मोह मयैश्च सिंहै।

संदीप्त मस्ति करुणा बहु वह्नि तेजः,
संतप्त मान मनसं परिपाहि कृष्णः ॥ ३ ॥

संसार वृक्षमतिजीर्णमपीह उच्चं,
मायासु कन्द करुणा बहु दुःख शाखम्।
जायादि सङ्घच्छदनं फलितं मुरारे,
तं चाधिरूढ़ पतितं भगवन् हि रक्ष ॥ ४ ॥

दुःखानलैर्विविध मोहमयैः सुधूमैः,
शोकैर्वियोग मरणान्तक संनिभैश्च।
दग्धोऽस्मि कृष्ण सततं ममदेहि मोक्षम्,
ज्ञानाम्बु नाथ परिषिञ्च सदैवमांत्वम् ॥ ५ ॥

मोहान्धकारपटले महतीवगर्ते,
संसारनाम्नि सततं पतितं हि कृष्ण।
कृत्वातरींमयहि दीनभयातुरस्य,
तस्मात् विकृष्य शरणंनयमामतिस्त्वम् ॥ ६ ॥

(पद्म० पु०)

श्री भगवान् राम सम्बन्धी मन्त्रोपासना

ध्यान—कालाम्भोधरकान्तं च, वीरासन समास्थितम्।
ज्ञानमुद्रादक्षहस्तेदधन्तं जानुनीत्तरम् ॥ १ ॥
सरोरुह करां सीतां विद्युदामां च पार्श्वगाम्।
पश्यन्तीं राम वक्त्राब्जं विविधाकल्प भूषितम् ॥ २ ॥

अर्थ—भगवान् श्रीराम की अङ्ग कान्ति मेघ की काली घटा के समान श्याम है, वे वीरासन लगा कर बैठे हैं, दाहिने हाथ में ज्ञान मुद्रा धारण करके उन्होंने अपने हाथ को वायें घुटने पर रख छोड़ा है, उनके वाम भाग में विद्युत के समान कान्तिमती और नाना प्रकार के वस्त्राभूषणों

से विभूषित सीता जी विराज मान है, उनके हाथ में कमल है और वे अपने प्राण वल्लभ राम चन्द्र जी का मुखारविन्द निहार रही हैं।

इस प्रकार ध्यान करके राम मन्त्र का छ लाख जप करे। मन्त्र इस प्रकार है 'ॐ रां रामायनमः' तदन्तर कमल के पुष्पों से दशांश हवन करे। श्री सीता देवी की पूजा उन्हीं के मन्त्रों द्वारा करे (मन्त्र श्री सीतायै स्वाहा) यह जानकी मन्त्र कहलाता है, रामजी के परिवार (परिकर) सभी का विधि पूर्वक पूजन करे। राम मन्त्र से हवन करने से सब प्रकार के मनोरथ पूर्ण होते हैं, घृताप्त सतपर्वी कमल से हवन करने पर मनुष्य दीर्घायु प्राप्त करता है निरोग होता है। लाल कमलों से हवन करने से मनोवाञ्छित धन प्राप्त करता है। पलास के फूलों से हवन करे तो मेधावी होता है।

पुनश्च—जो मनुष्य एक वर्ष में (रां रामाय नमः) इस षडाक्षर मन्त्र से अभिमान्त्रित जल प्रातः काल प्रति दिन पीता है वह कवि सम्राट् होता है। राम मन्त्र से अभिमन्त्रित अन्न का भोजन करे तो बड़े बड़े रोग नष्ट हो जाते हैं। जिस रोग के लिए जो औषधि बताई गई हो उस औषधि से राम मन्त्र द्वारा हवन करे तो तत्काल वह प्राणी रोग से मुक्ति पाता है। प्रतिदिन गो दुग्ध पीकर नदी तटपर या गो शाला में १ लाख मन्त्र जाप करे और घी मिले खीर से आहुति करे तो वह मनुष्य विद्या निधि होता है।

पुनश्च जो मनुष्य पदच्युत हो गया हो वह शाका हारी होकर जल के भीतर १ लाख जप करे और वेल के फूलों से दशांश होम करे तो वह प्राणी अपने खोये हुए अधिकार को प्राप्त करता है। गंगा के तट प्रान्त में एक लाख राम मन्त्र का जप करे और (त्रि मधु) युक्त कमलों के या बिल्व के फूलों से दशांश आहुति करे तो राज्य लक्ष्मी को प्राप्त करता है।

पुनश्च—मार्गं शीर्षं मास में कन्द मूल फलाहार करते हुए जल में खड़े होकर १ लाख मन्त्र का जप करे। प्रज्वलित अग्नि में खीर का दशांश हवन करे तो भगवान राम के समान पुत्र और नाती प्राप्त होते हैं।

पुनश्च—भगवान के राम मन्त्रों में एक यह भी है (ॐ रां श्री राम भद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम। दशास्यान्तक मां रक्ष देहि मे परमां श्रियम्) यह मन्त्र अभीष्ट फल देने वाला है। यह बीज सहित पैंतिस अक्षर का मन्त्र है। इसके विश्वामित्र ऋषि, हैं अनुष्टुप छन्द है, राम भद्र देवता हैं, रां बीज है श्री शक्ति, है, मन्त्र के चार पदों के आदि में तीनों बीज लगाकर ३ पादों तथा सम्पूर्ण मन्त्र के द्वारा मन्त्र, यज्ञपुरुष षडङ्ग न्यास करके मन्त्र के एक एक अक्षर का क्रमशः समस्त अङ्गों मे न्यास करे इसके ध्यान और पूजन आदि सब कार्यं पूर्ववत करे इस मन्त्र का पुरश्चरण तीन लाख का है, इसमें खीर से हवन करने का विधान है, पीत वर्णं वाले श्री राम का ध्यान करके एकाग्रचित्त होकर एकलाख जप करे, फिर कमल के फूलों से दशांश हवन करके मनुष्य धन पाकर अत्यन्त धनवान होता है। इति।

अथ हनुमान से सम्बन्धित मन्त्र साधनायें।

श्री हनुमान जी का मन्त्र—'ॐ ह्रौं हस्फ्रें स्फ्रें हस्रौं हस्ख्फ्रें हसौं मनुमते नमः, यह बारह अक्षरों का महामन्त्र है' इसके श्री राम चन्द्र ऋषि हैं, जगती छन्द है, इसके देवता हनुमान जी है, हस्रौं बीज है हस्फ्रें शक्ति हैं, छ बीजों से षडङ्ग न्यास करे।

पुनश्च—अब हम तत्त्व प्रदान करने वाला हनुमान जी के अन्य मन्त्रों का वर्णन करेगें। मन्त्र—'ॐ नमो हनुमते मम मदनक्षोभं संहर सहरं आत्मतत्त्वं प्रकाशय प्रकाशय हुं फट् स्वाहा।' यह साढे ३६ अक्षर का मन्त्र है, इसके वसिष्ठ ऋषि है। अनुष्टुप छन्द हनुमान देवता

है। सात, छ, चार आठ, तथा चार मन्त्रों से षडङ्ग न्यास करके कपीश्वर हनुमान जी का ध्यान करे।

जानुस्थवामबाहुं च ज्ञानमुद्रापरंहृदि।
अध्यात्म चित्त मासीनं कदलीवनमध्येगम्।
वालार्कं कोटि प्रमितं ध्यायेत् ज्ञानप्रदं हरिम्॥

नारद पु० ७५-९५-९६

हनुमान जी का वांया हाथ घुटने पर और दायां हाथ ज्ञान मुद्रा में स्थित है, हृदयमें लगाया है, वे अध्यात्म तत्त्व का चिन्तन करते हुये कदली बन में बैठे हुए हैं। उनकी कान्ति उदय कालीन कोटि, कोटि सूर्य के समान है, ऐसे ज्ञान दाता श्री हनुमान जी का ध्यान करना चाहिये। इस प्रकार ध्यान करके १ लाख मन्त्र का जप करे, और घृत सहित तिल की दशांश आहुति दे। फिर पूर्वोक्त पीठ पर पूर्ववत प्रभु श्री हनुमान जी का पूजन करे। यह मन्त्र का जाप किए जाने पर निश्चय ही काम विकार का नाश करता है, और साधक कपीश्वर हनुमान जी के प्रसाद से तत्त्वज्ञान प्राप्त करता है।

भूत भगानेवाला उत्कृष्ट मन्त्र

पुनश्च—'ॐ श्री महाञ्जनेय पवन पुत्रावेशया वेशय ॐ श्री हनुमते फट्।' यह पच्चीस अक्षर का मन्त्र है, इस मन्त्र के ब्रह्मा ऋषि हैं गायत्री छन्द है हनुमान देवता हैं। श्रीं बीज है और फट् शक्ति कही गयी है, छ दीर्घ स्वरों से युक्त बीज द्वारा षडङ्ग न्यास करे।

आञ्जनेय पाटलास्य स्वर्णाद्रिसम विग्रहम्।
पारिजातद्रुमूलस्थं चिन्तयेत् साधकोत्तमम्॥

जिसका मुख लाल और शरीर सुवर्ण गिरि के समान कान्तिमान है, जो पारिजात, कल्पवृक्ष, के नीचे उसके भूभाग में बैठे हुए हैं, उन अञ्जनी नन्दन हनुमानजी का चिन्तन करे। इस प्रकार ध्यान करके १ लाख

मन्त्र का जप करे और मधु, घी, शक्कर मिले हुए तिलों से दशांश हवन करे, विद्वान पुरुष पूर्वोक्त पीठ पर पूर्वोक्त रीति से पूजन करे। मन्त्रोपासक इस मन्त्र के द्वारा वह ग्रह ग्रस्त पुरुष को झाड़े तो वह ग्रह ग्रस्त पुरुष को चीखता, चिल्लाता हुआ छोड़ कर भाग जाता है। इस मन्त्र को सदा गुप्त रखे जहाँ तहाँ सबके सामने प्रकाश में नहीं लाना चाहिये। खूब जाँच बूझ कर शिष्य को या अपने पुत्र को ही इसे बताना चाहिये।

पुनश्च-कारागार से मुक्ति पाने के लिये साधना और मन्त्र

मन्त्र—ॐ "नमोभगवते आञ्जनेयाय अमुकस्य शृंखला त्रोटय त्रोटय बन्ध मोक्ष कुरु कुरु स्वाहा"—इस मन्त्र के ईश्वर ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द शृंखला मोचक पवन पुत्र श्री हनुमान जीं देवता हैं, हंवीज और स्वाहा शक्ति है, बन्धन छूटने के लिए इसका विनियोग होता है, छ दीर्घ स्वर तथा उपरोक्त बीज मन्त्र से षडङ्ग न्यास करे।

ध्यान—वामेशैल वैरिभिदं विशुद्धटंकमन्यतः।
दधानं स्वर्णं वर्णं च ध्यायेत् कुण्डलिनं हरिम्॥ (नारद पुराण)

बायें हाथ में बैरियों को विदीर्ण करने वाला पर्वत तथा दायें हाथ में विशुद्ध टंक धारण करने वाले, सुवर्ण के समान कान्ति मान कुण्डल मण्डित बानर राज हनुमान जी का ध्यान करे। इस प्रकार ध्यान करके १ लाख मन्त्र का जप करे, तथा आम्रपल्लव से दशांश हवन करे। विद्वानों ने इसके पूजन आदि की विधि पूर्ववत्त बतायी है, महान कारा गृह से मुक्त हो जाता है।

पुनश्च—अब बन्धन से छुड़ाने का दूसरा हनुमान्‌जी का मन्त्र बताते हैं। अष्टदल कमल के भीतर षटकोण बनावे उसकी कर्णिकाओं में साध्य पुरुष का नाम लिखे। छः कोठे में ॐ आञ्जनेय इसका उल्लेख करें आठों दलों में ॐ बात-बात लिखे, गोरोचन कुंकुम से इस मन्त्र को लिखकर मस्तक पर धारण करें। बन्धन से छूटने के लिए उक्त मन्त्र का

दस हज़ार जप करे, इस मन्त्र को प्रतिदिन मिट्टी पर लिखकर दाहिने हाथ से मिटावे बारह बार मिटाने और लिखने से मन्त्राराधक महान् कारागृह से छूट जाता है। अथवा यह मन्त्र—हरि मर्कंट-मर्कंट वाम करे परि मुञ्चति शृङ्खलाम्। "यह २४ अक्षर का मन्त्र है, इस मन्त्र को दायें हाथ में बायें हाथ से लिखकर" मिटा दें, और १०८ बार इसका जप करें तो, कैदी ३ सप्ताह में छूट जाता है। इस मन्त्र का एक लाख जप दशांश हवन करने से मनोवाञ्छित वस्तु प्राप्त होती है इसके ऋषि आदि पूर्ववत् हैं।

हनुमान्‌जी के लिए दीपदान विधि

(१) सुगन्ध तैल में दिया हुआ दीपदान सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है। (२) किसी पथिक (अतिथि) के सेवा में तिल का तेल द्वारा दीपदान करे तो लक्ष्मी प्राप्ति कराता है। (३) सरसों का तेल रोगों से मुक्ति पाने के लिए है। (४) गेहूं, तिल, उड़द, मूंग, चावल, ये पञ्चधान्य कहे जाते हैं। हनुमान्‌जी को दीपदान इनके आटे से बने दिया में देने से सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। (५) सन्धि में ३ प्रकार के आटे के दीप दे। (६) लक्ष्मी प्राप्ति के लिए कस्तूरी का दीप दें। (७) इन सबके अभाव में पञ्चधान्य श्रेष्ठ हैं। (८) सोमवार को पञ्चधान्य लेकर जल में भिगोदे, शुद्धता से कुंवारी कन्या के द्वारा पिसवा कर शुद्ध पात्र में शुद्ध नदी के जल से उसकी पीठी का दिया बनाना चाहिये। दिया जलाते समय हनुमान कवच का पाठ करे, मंगलवार को शुद्ध भूमि पर दीप दान करे। (९) भयंकर विष तथा बात व्याधि का भय होने पर हनुमान जी के समीप दीप दान करे। ग्रह व्याधि नाश के लिये चौराहे में दीप दे। सम्पूर्ण कार्य के लिये पीपल के नीचे दीप दे। (१०, भय निवारण, विवाद, शान्ति, शंकर युद्ध, शंकर विष, व्याधि, ज्वर उतारने ग्रह, भूत कृत्या से छूटने के लिए कटे हुए कर जोड़ने के लिए दुर्गम वन में व्याघ्र, सिंह, हाथी,

सम्पूर्णं जीव के आक्रमण से छुटकारा पाने के लिए बन्धन से छूटने के लिए पथिक के आगमन के लिए राज मार्गं में दीपदान करे। दीप दान के समय दूध, दही, माखन, अथवा गोवर से हनुमान जी की मूर्ति बनावे। हनुमान जी के शिर में मुकुट हो दक्षिण मुख बैठे हों पैर रीछ के पीठ पर रखा हो दाप दान में द्वादश अक्षर मन्त्र का प्रयोग करे। इति

अथ परिशिष्ट-दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति

दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति यह शिव का तादात्म्य (एक रूपता) देती है, और आध्यात्मिक तीनों दोषों को क्षीण करती है, इसलिए दीक्षा तत्त्वार्थ वेत्ताओं ने इसे दीक्षा कहा है। यह अत्यन्त ज्ञान देती है, पाप परम्परा का क्षय करती है, यह अत्यधिक ज्ञान देती है, पाश बन्धन को क्षीण करती है, अतः दीक्षा कहलाती है।

दीक्षा से बढ़कर कोई ज्ञाननहीं न तप न संयम, अतः दीक्षा सर्वं श्रेष्ठ है। (दीक्षा का भेद) दीक्षा तीन प्रकार की होती है। (१) आणवी (२) शाक्तयी (३) शाम्भवी-पहली आणवी, शास्त्र के कथनानुसार मन्त्र अर्चंन आसन ध्यान स्थापना से युक्त है।

(२) शाक्तेयी—सिद्धि के लिए अपनी शक्ति का अवलोकन कर उपायन्तर न करके शिशु अवस्था में ली हुई दीक्षा शाक्तयी कहलाती है।

(३) शाम्भवी—आचार्य और शिष्य दोनों में परस्पर फलाभि संधि के विना ही गुरू के अनुग्रह मात्र से शिवज्ञा से शिव स्वरूप को व्यक्त करने वाली जो दीक्षा होती है, उसे शाम्भवी दीक्षा कहते हैं।

गुरू के दर्शन स्पर्श और सम्भाषण मात्र से जो जीव को तत्काल बोध होता है, उसे ही शाम्भवी दीक्षा कहलाती है।

गुरू ज्ञान मार्गं से शिष्य के देह में प्रविष्ट होकर ज्ञान नेत्र द्वारा जो उपदेश करता है, उसे शाक्ती दीक्षा कहा गया है। मण्डल के अन्दर कलश स्थापन आदि करके जो क्रियावती दीक्षा होती है, वही मान्त्री दीक्षा कहलाती है। (इति तन्त्र ग्रन्थे)।

कुमारी निरूपण

एक वर्ष की बालिका सन्ध्या। दो वर्ष सरस्वती ३—त्रीमूर्ति ४—कालिका ५—सुभगा ६—उमा ७—मालिनी ८—कुब्जा ९—काल सन्दर्भा १०—अपराजिता ११—रूद्राणी १२—भैरवी १३—महालक्ष्मी १४—पीठ नायिका १५—क्षेत्रज्ञा १६—अम्बिका इस प्रकार रजोधर्म के पूर्व प्रति पदा से लेकर पूर्णिमातक १६—कुमारी पूजा करे।

अन्य मत से २ वर्ष कुमारी ३—त्रिमूर्ति ४—कल्याणी ५—रोहिणी ६—कालिका ७—चण्डिका ८—शम्भवी ९—दुर्गा १०—सुभद्रा कही गयी है। एक वर्ष से ऊपर ११—वर्ष से नीचे की कुमारी का पूजन करे।

कुमारी पूजा का फल

६ वर्ष ९ वर्ष तक की कुमारी, साधक का अभीष्ट साधन करती है, आठ से लेकर १३ तक की कुलजा है। सोलह वर्ष तक पूजा का भी विधान है। कुमारी को अन्न, वस्त्र, जल, देता है, वह सुमेरू पर्वत के समान है। जल समुद्र के समान फल देता है, उसे शिव लोक मिलता है। जो कुमारी को पूजा के उपकरण देता है, उसके यहाँ देवता लोक पुत्र रूप में आते हैं सभी जाति की कुमारी का पूजन किया जाता है।

सभी बड़े बड़े पर्वों में पुण्य तिथि 'महानवमी' में कुमारी पूजा करे, फल, फूल बालक को प्रिय वस्तु दे कुलीन पण्डित कन्याओं को पुष्पादि से पूजन करके मेरूके तुल्य सुवर्ण दान का फल पाता है, जिसने कुमारी को भोजन कराया उसने त्रिभुवन को तृप्त किया। कुमारी पूजन से लक्ष्मी, धन, पृथ्वी, सरस्वती, तेज, पाता है, उसके ऊपर दश महाविद्यायें और देव गण प्रसन्न होते हैं।

शरीर मीमांसा (कलेवर के कार्य का निरूपण)

शरीर भी जैसा ब्रह्माण्ड है, वैसा ही (पिण्ड) है। पैर के तल पाताल ऊपरी भाग रसातल है, दोनों गुल्फ तलातल, दोनों पिण्डलियों को महा-

तल, दोनों घुटने सुतल, दोनों जांघ तथा कटि भाग अतल, लोक है। नाभि को भूलोक, उदर को भुवर्लोक, वक्षस्थल को स्वर्ग लोक, कण्ठ को महर्लोक, मुख को जन लोक, दोनों नेत्र तप लोक, तथा मस्तक को सत्य लोक कहा गया है। पृथ्वी में जैसे सात द्वीप होते हैं, उसी प्रकार शरीर में भी सात धातुऐ हैं। त्वचा,रक्त, मांस, मेदा, हड्डी, मज्जा, और वीर्य। शरीर में तीन सौ साठ हड्डीयां है। तीस लाख छप्पन हजार नौ नाडियां बतायी गयी हैं। ये पृथ्वी में नदी के समान व्याप्त है। शरीर में साढे तीन करोड़ छोटे बड़े रोयें बताये जाते हैं।

शरीर में छ अंग प्रधान बताये जाते हैं। दो बांह, दो जांघ, मस्तक, उदर, आतें, येसब तीन व्याम की होती है। हृदय में एक मस्न है, जिसकी नाल ऊपर, मुख नीचे है। हृदय के वायें प्लिहा है, दक्षिण में यकृत्त है, शरीर में मज्जा, मेदा, वसा, मूत्र, पित्त, कफ, विष्ठा, रक्त और रस के गड्ढे हैं। इनके नाप २ अञ्जली का है। उन्ही गढ्ढों से होकर ये मज्जा, मेदा आदि धातु इस शरीर को धारण करते हैं, इन गढ्ढों के सिवा शरीर में सात शीवनी विशेष नाड़ी हैं, इनमें पांच तो मस्तक की ओर गयी हैं, एक नाड़ी लिङ्ग की ओर एक जिहा तक गयी है, सब नाड़ियां नाभि से ही सब ओर गयी हैं। इनमें मस्तक की ओर गयी ३ नाडी प्रधान हैं। इडा, पिङ्गला, सुसुम्ना हैं। इडा और पिङ्गला नासिका तक गयी हैं। ये दो शरीर की वृद्धि और पुष्टी करती हैं।

शरीर में वायु, अग्नि, चन्द्रमा, ये पांच पांच भागों में विभक्त होकर स्थित हैं। प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, ये पांच भेद माने गये हैं। स्वांस लेना स्वांस छोड़ना अन्न, जल को शरीर के भीतर पहुँचाना ये तीन प्राण वायु के कर्म हैं। कण्ठ से मस्तक तक यह रहता है, मल, मूत्र, वीर्य का त्याग और गर्भ को योनि से बाहर करना यह अपान वायु का कर्म है। यह गुदा के ऊपर स्थित है। समान वायु खाये हुए अन्न को धारण करता है। उस प्रत्येक अंशो को अलग-अलग करता है, और सम्पूर्ण शरीर में सञ्चार करता हुआ बे रोक टोक विचरता है।

वाक्य बोलना, डकार निकलना, कर्म के लिए सब प्रकार के प्रयत्न करना, यह उदान वायु का कर्म है। इसका स्थान कण्ठ से लेकर मुख तक है। व्यान वायु सदा हृदय में स्थित रहता है। सम्पूर्ण देह का भरण पोषण करता है, धातु को बढाना, पसीना, लार आदि को निकालना, आखें खुलने, मीचने, की क्रिया करना व्यान वायु का कर्म है।

पाचक, रञ्जक, साधक, आलोचक तथा भ्राजक इन पांच रूप में अग्नि शरीर के भीतर स्थित है। १—पाचक अग्नि पक्वाशय में स्थित होकर खाये हुए अन्न को पचाता है २—रञ्जक अग्नि आमाशय में अन्न के रस को रंगकर रक्त बनाता है। ३—साधक अग्नि हृदय में रहकर बुद्धि और उत्साह को बढ़ाता है। ४—आलोचक अग्नि नेत्रों में निवास करके रूप देखने की शक्ति बढाता है। ५—भ्राजक अग्नि त्वचा में स्थित होकर शरीर में निर्मलता और कान्ति को बढ़ाता है। क्लेदक, बोधक, तर्पण, श्लेषण, तथा अलम्पक इन पांच रूपों में शरीर के भीतर चन्द्रमा का निवास है। १—क्लेदक चन्द्रमा पाकस्थली में स्थितहोकर खाये अन्न को गलाता है। २—बोधक—जिह्वा में रहकर रसों का अनुभव कराता है। ३—तर्पण चन्द्रमा मस्तक में स्थित होकर नेत्रादि इन्द्रियों की तृप्ति और पुष्टी करता है। ४—श्लेषण—सब सन्धियों में व्याप्त होकर उन्हे परस्पर मिलाये रखता है। ५—आलाम्वक चन्द्रमा हृदय में स्थित होकर शरीर के सब अंङ्गो को परस्पर अवलम्बित रखता है। इस प्रकार वायु, अग्नि, चन्द्रमा, ने इस शरीर को धारण कररखा है।

इन्द्रियों के छिद्र रोम कूप तथा उदर का अवकाश ये सब आकाश तत्त्व जनित है। नासिका केश, नख, हड्डी, धीरता, भारीपन, त्वचा, मांस, हृदय, गुदा, नाभि, मेधा, यकृत, मज्जा, आंत, आमाशय, शिश्न तथा पक्वाशय ये सब पृथ्वी तत्त्व के अंश हैं। नेत्र में जो श्वेत भाग है, वह कफ से उत्पन्न होता है, और काला भाग वायु से पैदा होता है। काला भाग माता का औरश्वेत भाग पिता का अंश है। नेत्र में पाच मंडल होते

हैं। १—पहला पलक २—दूसरा चर्म मण्डल ३—शुक्ल मण्डल ४—कृष्ण मण्डल ५—दिक मण्डल है। नेत्रों के दो भाग और है। १—उपाङ्ग २—अपाङ्ग, नेत्रों का अन्तिम किनारा है, उसे अपांङ्ग और नासिका के मूल भाग से मिला हुआ अंश अपांङ्ग कहा जाता है। दोनों अण्डकोश, मेदा, रक्त, कफ, मांस ये चार धातुओं से युक्त बताये गये हैं। समस्त प्राणियों की जिह्वा रक्त, मांस मयी है दोनों हाथ दोनो ओष्ठ लिङ्ग और गला इन छः स्थानों में चर्म प्रधान मांस और रक्त होते हैं। इस प्रकार इन समस्त सात धातुओं के बने हुए पच्चीसतत्त्व युक्त शरीर में जीव निवास करता है। त्वचा, रक्त और मांस ये तीनों माता के अंश से तथा मेदा, मज्जा, अस्थि ये पिता के अंश से उत्पन्न कहा गया है, इन छहों कोषों से इस शरीर का संगठन बताया है।

यह पाञ्चभौतिक शरीर पांच भूतों से उत्पन्न अन्नादि से पुष्ट होता है। खाये हुए अन्न को प्राण वायु पहले, स्थूलाशय में एकत्र करता है, फिर उस अन्न में प्रवेश करके अन्न और जल को अलग करता है। जल को अग्नि के ऊपर रखकर अन्न को उसके ऊपर पुनः स्वयं जल के नीचे स्थित होकर, धीरे-धीरेअग्नि को उद्दीप्त करता है, वायु से उद्दीप्त हुई अग्नि को अत्यन्त गरम कर देता है। फिर उस गरम जल से वह अन्न भली भांति पकने लगता है, पकने पर उसके दो भाग होते हैं, मैल अलग छंट जाता है रस अलग हो जाता है। छंटा हुआ मल अपान मार्ग से शरीर से बाहर निकल जाता है। आँख, नासाछिद्र, जिह्वा, दाँत, लिङ्ग, गुदा, नख, और रोमकूप ये दस मल के स्थान हैं। शरीर की सब नाड़ियाँ सब ओर से हृदय कमल में बंधी हुई है। व्यान वायु अन्न के रसों को उन नाड़ियों के मुख में रख देता है। समान वायु सभी नाड़ियों को उस रस से परिपूर्ण करता है, तत्पश्चात वे सम्पूर्ण नाड़ियाँ देह में सब ओर उस रस को पहुचा देतीं हैं। नाड़ियों में स्थित हुआ वह रस रञ्जक अग्नि की उष्णता से पकने लगता है, और पकते-पकते रुधिररूप में परिणित हो जाता है। तदन्तर त्वचा रोम, केश, मांस, स्नायु, शिरा,

अस्थि, नख, मज्जा, इन्द्रियों की शुद्धि तथा वीर्य की वृद्धि ये कर्म, क्रमशः होते हैं, इस प्रकार अन्न का बारह रूप में परिणाम बताया जाता है। इन सबसे बना हुआ यह शरीर पुण्य अर्जन के लिए प्राप्त हुआ है।

जैसे सुन्दर रथ भार ढोने केलिए ही होता है। यदि वह भार न ढो सके तो केवल तेल लगाने आदि नाना प्रकार के यत्नों द्वारा रथ की रक्षा करने से क्या कार्यसिद्ध हो सकता है, इसी प्रकार उत्तम-उत्तम भोजन से पुष्ट किए हुए इस शरीर के द्वारा पुण्य सम्पादन के सिवा, और क्या लाभ है, यदि यह पुण्य नहीं करता है तो पशु के तुल्य है।

जिस समय जिस देश में और जिस आयु से शुभ तथा अशुभ कर्म किए जाते हैं, उसी देशकाल और आयु में कर्ता को उसका फल भोगना पड़ता है, इसलिए अक्षय सुख की इच्छा रखने वाले पुरुषों को सदा शुभकर्म करना चाहिए। अन्यथा गर्मी में सूख जाने वाली छोटी-छोटी नदियों की भाँति समस्त सुख भोग छिन्न-भिन्न हो जाते हैं, क्योंकि पाप से बहुत कठिन (तीव्र) दुःख भोगना पड़ता है। अतः पाप कर्म का आचरण कदापि नहीं करना चाहिए। वे पाप कर्म सदा अपने को पीड़ा देते हैं।

इति शरीर मीमांसा

(स्क० पु०)

गर्ग संहिता—गोपी गीत—'गोप्य उचु'

अधरविम्ब विडम्बित विद्रुमं-
मधुरवेणुनिनादित नोदितम् ।
कमलकोमल नीलमुखाम्बुजं-
तमपिगोपकुमारमुपास्महे ॥ १ ॥

श्यामलं विपिन केलिलम्पटं-
कोमलं कमलपत्र लोचनम् ।
कामदं व्रजविलासिनीदृशां-
शीतलं मतिहरं भजामहे ॥ २ ॥

तंविसञ्चलित लोचनाञ्चलं-
साभि कुड्मलित कोमलाधरम् ।
वंशवलितकराङ्गुलीमुखं-
वेणुनादरसिकं व्रजामहे ॥ ३ ॥

इषदङ्कुरित दन्तकुड्मलं-
भूषणं भुवनमंगलश्रियम् ।
घोषसौरभमनोहरं हरें
वर्षं मेवमृगयामहे वयम् ॥ ४ ॥

अस्तुनित्यमरविन्दलोचनः-
श्रेयसेहि तु सुरार्चिता कृतिः ।
यस्यपादसरसीरूहामृतं-
सेव्यमानमनिशं मुनिश्वरैः ॥ ५ ॥

गोपकैरचित मल्लसंगरं-
संगरे जितविदग्ध यौवनम् ।

चिन्तयामि मनसा सदैवतं-
दैवतं निखिलयोगीनामपि ॥ ६ ॥
उल्लसं नवपयोदमेवतं-
फुल्लतामरस लोचनाञ्चलम् ।
वल्लवीहृदय पश्यतोहरं-
पल्लवाधर मुपास्महे वयम् ॥ ७ ॥
यद्धनञ्जयरथस्यमण्डनं-
खण्डनं तदपि सञ्चितैनसम् ।
जीवनं श्रुतिगिरां सदामलं-
श्यामलं मनसिमेऽस्तुतन्महः ॥ ८ ॥
गोपिकास्तन विलोललोचनं-
प्रान्तलोचनपरम्परा वृतम् ।
वालकेलिरसलालसम्भ्रमं-
माधवं तमनिसं विभावये ॥ ९ ॥
नीलकण्ठकृतपिच्छशेखरं-
नीलमेघतुलिताङ्गवैभवम् ।
नीलपंकजपलासलोचनं-
नीलकुन्तलधरं भजामहे ॥ १० ॥
घोषयोषिदनुगीतवैभवं-
कोमलं स्वरितवेणुनिःस्वनम् ।
सारभूतमभिरामसम्पदां-
धामतामरस लोचनंभजे ॥ ११ ॥
मोहनं मनसि सार्ङ्गिणंपरं-
निर्गतं किल विहायभामिनीः ।
नारदादिमुनिभिश्च सेवितं-
नन्दगोप तनयं भजामहे ॥ १२ ॥

श्रीहरिस्तु रमणीभिरावृतो-
यस्तुवैजयतु रासमण्डले।
राधयासह वने च दुखिता-
तं प्रियं हि मृगयामहे वयम् ॥ १३ ॥

देव देव व्रजराजनन्दनो-
देहि दर्शनमलं च नो हरे।
सर्वदुःखहरणं च पूर्ववत्-
संनिरिक्ष तव शुल्कदासिका ॥ १४ ॥

क्षितितलोद्धरणायदधार यः-
सकलयज्ञवराहवपुः परम्।
दितिसुताञ्च ददार द्रंष्ट्रया-
स तु सदोद्धरणाय क्षमोस्तु नः ॥ १५ ॥

मनुमपाद्शुचिजोदिविजैःसह-
वसुदुदोह धरामपि यः पृथुः।
श्रुतिमपाद्धतमत्स्यवपुः पर-
स शरणं किलनोऽस्तु शुभेक्षणे ॥ १६ ॥

अवहदब्धिमहे गिरिमूर्जितं-
कमठरूपधर परमस्तु यः।
असुहरं नृहरिः सम दण्डयत्-
स च हरिः परमं शरणंञ्चनः ॥ १७ ॥

नृपबलिं छलयन् दलयन्नरीन्-
मुनिजना ननु गृह्य चचार यः।
कुरु पुरञ्च हलेनविकर्षयन्-
यदुवरः सगतिं मम सर्वथा ॥ १८ ॥

व्रजपशून् गिरिराजमथोद्धरन्
व्रजपगोप जनं च जुगोप यः।

द्रुपदराज सुतां कुरु कश्मलात्-

भवतु तच्चरणाब्ज रतिश्च नः ॥ १९ ॥

विषमहाग्निमहास्त्रविपत् गणात्-

सकलपाण्डुसुताःपरिरक्षिताः ।

यदुवरेण परेण च येन वै

भवतु तच्चरणशरणञ्च नः ॥ २० ॥

मालांबर्हिमनोज्ञकुन्तलभरांवन्यप्रसूनोषितां,
शैलेयगुरुकल्पप्तचित्रतिलकां शश्वन्मनो हारिणीम् ।
लीलावेणुरवामृतैक रसिकां लावण्य लक्ष्मीमयीं,
बालावाल तमालनीलवपुषं वन्दामहे दैवतम् ॥

●

"श्रीकृष्णस्य छविवर्णनम्"

परिकरिकृत पीतपटं हरिं
शिखिकिरीट नतीकृत कन्धरम् ।
लकुटवेणुकरं चलकुण्डलं
पटुतरं नटवेषधरं भजे ॥ १ ॥

श्याम किरीटी नवकञ्जनेत्रो-
नवार्ककोटि द्युतिमादधानः ।
कौमोदकीशंखरथाङ्गपद्मः
कोदण्डवाणैर्नियुतोऽसिधारी ॥ २ ॥

श्रीवत्सचिन्हेन च कौस्तुभेन-
पीताम्बरेणापि च मालया ढच-
नीलालकैर्कुण्डलकंकणाद्यैं
र्विभूषितं कोटिमनोज तुल्य ॥ ३ ॥

समुदिलङ्घि सितफेनशीकरान्
मुक्ताफलानीव च राज हंसकैः ।
सुग्रीवमुख्यैरतिवेगवत्तरैः
हयैर्युतः सुन्दरसामगयनैः ॥ ४ ॥

रागान्ध गोपीजनचुम्बिताभ्यां
योगीन्द्र भोगीन्द्रनिसेविताभ्याम् ।
आताम्रपंकेरुहकोमलाभ्यां,
ताभ्यां पदाभ्यामयमञ्जलिर्मे ॥ ५ ॥

वालार्कमौलीविमलाङ्गदहारमुद्यत-
विद्युत्क्षिपत् मकरकुण्डलमादधानः ।

पीताम्बरेण जयति द्युतिमण्डलोसौ
भूमण्डलेश धनुषेव घनोदिविस्थः ॥ ६ ॥
कृष्णमुकुन्दमरविन्द दलायताक्षं-
शखेन्दुकुन्ददशनं नरनाथवेषम् ।
इन्द्रादिदेपगण वन्दितपादपद्मं-
प्राण प्रयाणसमये हरि संस्मरामि ॥ ७ ॥
जयतु जयतुदेवो देवकीनन्दनोयं-
जयतु जयतु कृष्णो वृष्णि वंशप्रदीपः ।
जयतु जयतु मेघश्यामल कोमलाङ्ग
जयतु जयतु पृथ्वि भारनाशोमुकुन्दः ॥ ८ ॥
श्री पद्मराग नखदीप्ति पदारविन्दं-
झंकार नूपुरधरंस्फुरदङ्गदेशम् ।
कुर्वन्तमेव तु पदारुणभूमिदेशं
श्रीपद्मराग सुरुचालमितस्तत स्तु ॥ ९ ॥
लक्ष्मीकराब्जपरिलालितजानुदेशं-
रम्भोरुपीतवसनं तु कृशोदराभम् ।
रोमावलिभ्रमरनाभिसरस्त्रिरेखं
काञ्चि धरं भृगुपदंमणिकौस्तुभाढ्यम् ॥ १० ॥
श्रीवत्सहाररुचिरंनवमेघनीलं-
पीतम्वरं करिकरस्फुर वाहुदण्डम् ।
रत्नाङ्गदञ्चमणिकङ्कण पद्म हस्तं-
श्रीराज हंस वर कन्धर शोभमानम् ॥ ११ ॥
श्री कम्बुकण्ठललितं विलसत्कपोलं-
मध्यन्तुनिम्नचिवुकं किल कुन्ददन्तम् ।

विम्बाधरं स्मितलसत् शुकचञ्चु नासं-
पीयूषकल्पवचनं प्रचलत्कटाक्षम् ॥ १२ ॥
श्रीपुण्डरीकदल नेत्रमनङ्गलीलं-
भ्रूमण्डलं स्मितगुणावृत कामचापम् ।
विद्युच्छटोच्छलितरत्न किरीट कोटि-
मार्तण्डमण्डलविकुण्डल मण्डिताभ्याम् ॥ १३ ॥
वंशीधरंर्त्वर्हिविलोलगुडालकाढ्यं-
राधापतिसजलपद्ममुखं चलन्तम् ।
कन्दर्प कोटिघनमानहरं कृशाङ्गं-
वंशीवटे नटवरं भजसर्वथात्वम् ॥ १४ ॥
अनादिमाद्यंपुरुषोत्तमोत्तमं-
श्री कृष्णचन्द्रं निजभक्त वत्सलम् ।
स्वयं त्वसंख्याण्डपतिं परात्परं-
राधापतिं त्वां शरणं व्रजाम्यहम् ॥ १५ ॥

•

श्रीराधायासौन्दर्यवर्णनम् 'गर्ग उवाच'

आरक्त रक्त नखचन्द्र पदाब्ज शोभां-
मञ्जीर नूपुररणत्कटिकिंकिणीकाम् ।
श्रीघण्टिका कनक कंकणशब्द युक्तां
राधांदधामि तरु पुञ्जनिकुञ्जमध्ये ॥ १ ॥

नीलाम्बरैः कनकरश्मि तटस्फुरद्भिः
श्रीभानुजातट मरुद्गति चञ्चलाङ्गैः ।
सूक्ष्मस्वरूपललितैरति गौरवर्णां-
राशेश्वरीं भजमनोहर मन्दहासाम् ॥ २ ॥

वालार्कमण्डलमहाङ्गदरत्नहारां-
ताटङ्क तोरण मणीन्द्र मनोहराभाम् ।
श्रीकण्ठमाल सुमनो नवचम्पदाम्नीं-
रत्नाङ्गुलीय ललितांव्रजराजपत्नीम् ॥ ३ ॥

चूड़ामणिद्युतिलसत् स्फुरदर्धचन्द्रं-
ग्रैवेय कालपनपत्र विचित्र रूपांम् ।
श्रीपट्टसूत्र मणिपट्ट चलद्द्विम्नीं-
स्फूर्जत् सहस्रदलपद्मधरां भजस्वः ॥ ४ ॥

श्रीवाहु कंकण लसत् कुचरत्नदीप्तिं-
श्रीनासिकाभरणभूषित गण्डदेशम् ।

सद्यौवनालसगतिं कलसर्पवेणीं-

सन्ध्येन्दुकोटिवदनांस्फुटचम्पदानीम् ॥ ५ ॥

सत्भाव भावसहितां नवपद्मनेत्रां

स्फूर्जत् स्मितद्युतिकलांप्रचलत् कटाक्षाम् ।

कृष्णप्रियां ललितकुन्तल पुन्तलाभां-

मन्दरहारमधुरभ्रमरीरवाढचाम् ॥ ६ ॥

श्रीखण्डकुंकुममृदागुरुवारिसिक्ता-

श्रीविन्दुको रुचिर पत्रविचित्र चित्राम् ।

सन्तानपत्ररुचिरामलमञ्जनाभां-

राशेश्वरी गजगतिं भजपद्मिनींताम् ॥ ७ ॥

इति गर्गं

यमुना स्तोत्रम्

मार्तण्कन्यका यास्तु स्तवंश्रृणुमहामते ।
सर्वसिद्धिकरंभूमौ चातुर्वर्ग्यफलप्रदम् ॥ १ ॥

यःपाप पङ्काम्बुकलङ्ककुत्सितः, कामीकुधीः सत्सुकलि करोति ।
वृन्दावनंधामददातितस्मै, नन्दन्मिलिन्दादिकलिन्दनन्दिनी ॥२॥

कृष्णेसाक्षत्कृष्णरूपात्वमेव, वेगावर्तेवर्ततेमत्स्यरुपी ।
ऊर्माभूमौकूर्मरूपीसदा ते, विन्दौविन्दौभातिगोविन्ददेव ॥ ३ ॥

वन्देलीलावतीत्वां सघन घनन, निभां, कृष्णवामांशभूताम् ।
वेगं वै वैरजाख्यं सकलजलचयं, खण्डयन्तीं वलात्स्वात् ॥
छित्वाब्रह्माण्डमारात् सुनकरनगान्गण्डशैलादिदुर्गान् ।
भित्वा भूखण्डमध्येतटिनिधृतवतीमूर्मिमालांप्रयान्तीम् ॥४॥

दिव्यङ्कौनामध्येयंश्रुतमथयमुने, दण्डयत्यद्रितुल्यं-
पापब्यूहं त्वखण्डं वसतुममगिरामण्डले तु क्षणंतत् ।
दण्ड्यांश्चाकार्यंदण्ड्यान् सकृदपिवचसा, खण्डितंयतगृहीतं-
भ्रातुर्मार्तण्ड सूनोरटतिपुरिदृढस्ते प्रचण्डेतिदण्ड ॥ ५ ॥

श्यामामम्भोजनेत्रांसघनघनरुचिरमञ्जिरकुञ्जत्
काञ्चीकेयूरयुक्ता मणिमये, विभ्रती कुण्ड ले द्वे ।
भ्राजत् श्रीपीतवस्त्रंस्फुरदिभजचलत् हार भारांमनोज्ञां
ध्यायेमार्तण्डपुत्रीं ननु किरणचयोद्दीप्तदीपाभिरामाम् ॥ ६ ॥

रज्जूर्वापिषयन्धकूपतरणे पापाखुदार्वीकरी
वेण्युष्णिक्चविराजमूर्ति शिरसो, मालाति वासुन्दरी ।
धन्यंभाग्यमतपरं भुविनृणांयत्रादिकृत् वल्लभा
गोलोकेऽप्यतिदुर्लभातिसुभगांभात्याद्वितीयानदी ॥ ७ ॥
गोपीगोकुलगोप केलिकलिते, कालिन्दी कृष्णप्रिये
त्वत्कूले जललोलगोलविचलत्, कल्लोलकोलाहला ।
त्वत्कान्तारकुतूहलालिकुलकृत्, झंकार केला कुलः
कूजत् कोकिलसत्कुले व्रजलता, लंकारभूत् पातुमाम् ॥ ८ ॥
भवन्तिजिह्वातनुरोम तुल्या, गोरोयदाभूसिकताइवास्युः
तदप्यलंयान्तिन तेगुणान्तं सन्तोमहान्तकिल शेषतुल्याः ।
कृष्ण, वामांशभुतायै कृष्णायै सततं नमः
नमः कृष्णस्वरूपिण्यै कृष्णे तुभ्यं नमोनमः ॥ १० ॥
॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु इति यमुनास्तोत्रम् ॥

"श्री कृष्ण वन्दना"

वंशी वादन तत्परञ्च शुभदं कान्त्या लसद्विग्रहम् ।
केकी कण्ठमयं च श्यामल तनुं गोवंश संघा वृतम् ॥
भालस्यो परि शोभितं सु मुकुटं वर्हाङ्गपर्णाङ्कितम् ।
माणिक्यादिगणैर्सुसज्जितवपुं प्रकाश आभायुतम् ॥
कण्ठे सुन्दरदाम कौस्तुभमणिहस्तेशुभं कंकणम् ।
अङ्गुल्यामपि मुद्रिका मणियुता वंशी करे शोभिता ॥
विम्बाभे सुमुखे प्रयुज्यरणयन् आनन्द दानेरतम् ।
शोभाधामनमामि कृष्णमनिशं शान्तिप्रदं तं हरिम् ॥
स्वा० उ० र०

इति स्तोत्राणि

अथ औषधिक प्रकरण

१—पौस्टिक दवा-स्याह मुसली, सफेद मुसली, मरुली, सोंठ, लौङ, पीपरी, जायफल, जावित्री, नागकेशर ये सब दवा सम भाग व मिश्री दुगुना लेकर दवा २ तोला लेकर ऊपर से गर्म दूध ले।

२—वहुमूत्र पर-मिसरी ३ तोला, सोंठ ४ तोला, कालीमीर्च ३ तोला लेकर चूर्ण कर ४ मासा चूर्ण जल के साथ ले—

३—पेट दर्द की दवा-नमक, जवाइन, जीरा, चीनी सम भाग लेकर वारिक पीस कर नीबू निचोड़ ले और गर्म जल से ले।

४—दांत दर्द की दवा-२-४ लवङ् पीसकर नीबू निचोड़कर दांतों पर मले। खाने का सोड़ा भी मुफिद हैं।

५—चेहरा साफ के लिये १ तोला मलाई में चौथाई नीबू निचोड़ कर प्रतिदिन चेहरे पर मालिस करें।

६—चक्कर आने पर-पेट के गैस से चक्कर होता हो तो एक गिलास गर्म जल में आधा नीबू नीचोड़ कर ८ दिन तक पिवे।

७—सौन्दर्य के लिये-नीबू का रस २ तोला गुलाब जल २ तोला एक में मीला-कर शीशी में रख दे रात में चेहरे में मलकर सो जाय यह काम २० दिन तक करे।

८—दाद के लिए- नौसादर को नीबू के रस में पीसकर लगावे।

९—खूनी ववासीर-नीबू को दो फारा करके ६ मासा कत्था पीस कर नीबू में लेप करे और रात को छतपर रख दें सबेरे उठकर दोनों नीबू के टुकड़ों को चूस ले।

१०-मुख के दुर्गन्ध में-गुलवका अर्क १ छटाक आधा नीबू निचोड़ कर कुल्लाकरे मसुड़े मजवूत होय।

११–पेट के रोग के लिए–त्रिफला अजवाईन काला नमक १–१ छटाक कालीमीर्च १ तोला सौंफ ३ तोला ढेकवार आधार सेर को टुकड़ा करके उन टुकड़ो को दवा में मीला कर एक दिन धूप में रखे। तब खाय।

पेट दर्द, कब्ज भूख न लगना आदि रोग में—

भोजन के बाद गर्म पानी से लेवें।

स्त्री रोग महवारी के दर्द पर—

(१) नागकेसर ६ मांसा मट्ठे में पीसकर पिये। मट्ठा भात खावे। (२) अशोक के छाल दूध में पकाकर पिये। (३) काले तिल २ तोला अजवाइन २ तोला १ सेर जल में काढ़ा बनाकर ६ छटांक रहने पर पुराना गुण मिलाकर पिये, महवारी का दर्द दूर होता है।

श्वेत प्रदर—

(१) आम के बौंर को छाया में सुखाकर चूर्ण करें इसके बराबर खांड़ मिला दे। ७–७ ग्राम मात्रा में दूध के साथ या जल के साथ कुछ दिनों तक निरन्त सेवन करें।

(२) स्त्रियो को महवारी खुलकर न आता हो, दर्द होता हो तो, पीसी हुई राई को गर्म पानी में मिला दे। एक बड़े बर्तन में रखकर उसको बैठा दे तो दर्द दूर हो और खुलकर महवारी होता है।

स्त्रियों का अधिक दूध बढ़े—

तिलों को पीसकर गर्म करके पीने से स्त्रियों को अधिक दूध बढ़ता है।

सुगर की दवा—

(१) जामुन के हरे-हरे नरम पत्ते १० बारीक पीसकर सुबह ताजा पानी से १० दिन खाये (२) बेल के पत्ते १ तोला सुबह खाये। (३) गुड़मार बूंटी सवा दो तोला हल्दी २ तोला बहेड़ा १ तोला, २ तोला जामून की गुठली सबको वारीक पीसकर ३ मास तक सुबह शाम ताजा पानी से लें। (४) अंग्रेजी दवा रेस्टीनोन एक गोली ले।

इस रोग में चावल, शक्कर, गुड़, खटा, तीता, तेल वगैरह न खाय।

रक्तचाप [ब्लड पेशर]—

छोटी लाची, तवाया बुरादा, सन्दल सफेद कुजा, मिसरी, सब २–२ तोला कुश्तामाजाका, चारमांसा, कुस्ताहकीम तीन मांसा दवा को बारीक पीसकर एक में मिलाकर खुराक तीन मांसा ताजा पानी से सुबह-शाम ले।

दोहा

१. सिर पीड़ा की दवा—

नाश दीजे घी में, सैन्धवनून पिसाय।
अर्द्धसिरा की पीड़ाअति या औषधि तेजाय ॥

पुनश्च—जड़ एरन्ड की कायफल कूट मिर्च जल संग।
गर्म करी शिर लेपिये दुख त्रिदोष नशाय ॥

पुनश्च—चन्दन शिवा कचूर लै हाउसवेर उशीर।
दूव कमल के बीजसमलेपतनाशै पीर ॥

२. आँख की दवा—

त्रिफलाचूर्ण शहद घृत नयन रोग को खाय।
कै जल पीवै नाक सो, अतिदृग ज्योति बढ़ाय ॥

पुनश्च—सोंठ नीम के पत्र पुनि सैन्धव जल मे वाटि।
गरमकरि दृग लेपिये सब पीड़ा के नाश ॥

पुनश्च—सैन्धव गेरु फिटकिरी अभया जलमह पीस।
नयनन मे लेपत ही नाश करै क्षणमीस ॥

पुनश्च—मिगी बहेड़े आम की जलघिसि अंजन देय।
निशी अंधियारो रोगको कै दधि मिर्च हरेय ॥

३. कान रोग की दवा—

आकपत्र तिलपत्र पुनि ल्हसुन घृत संग।
मिजि निचौरे कान में पीर बधिरता भंग॥

पुनश्च—तुम्बी शुण्ठी हिंगु सो वाटे सरसो तेल।
जरि बधिरता शूल दुःख हरै शब्द अनमेल॥

४. नाक रोग—

शुण्ठी गुड़ पिपरी मिरचगोल नित ही खाय।
शीरपीर पीनस दुःख सो हरि जाय विलाय॥

पुनश्च—कुरा कलौंजी पिपरे वच लै सरिस बटाय।
पुटरी सुधें जो सदा तौ पिनास मिटि जाय॥

५. मुख रोग—

रालनैनुघृत डारिके गुड़ मिलि लेप बनाय।
ओठ दरिको कठिनता मुख पाक मिटि जाय॥

पुनश्च—कारोजीरो इन्द्रयव कूटि तीन दीन पिस।
वदनपाक दुर्गन्धव्रण दूर करे यह मीस॥

६. दाँत रोग की दवा—

तुतिया एला फिटकरी जबसम तीन बटवाय।
चौदहदिन दन्तननि मलै बहु पीर मिटाय॥

पुनश्च—सरसो सैन्धव लोद वच जलसंग वारि बनाय।
वदन प्रात नित लेपिये कीला रोग पराय॥

७. उदर रोग की दवा—

जवाखार और कूट वच चित्रक जीरो लेइ।
अजमोदा दात्यूनि लै हिंगु चाय पुनि देय॥

पुनश्च—तीनो नोन साजी बहुरि पाद सोठ पिसाय।
तातो जल से खाइयें उदर रोग सब जाय ॥

पुनश्च—जवाखार सैन्धव त्रिकटु हींग सहित पिसवाय।
बीजपुर सरसो रस खातहि पिलीही जाय ॥

८. संग्रहणी (पतले दस्त की दवा)—

सोंठि वेल चित्रा धना चाव वांटि करचूर।
पानी तक्र संगही करि संग्रहणी दूर ॥

९. अर्श रोग की दवा (बवासीर)

देवदारु सैन्धव अरु दधि नीर में वाटि।
बीज गुदअंकूरे लेपकरे असं रोग निवारु ॥

पुनश्च—पैसाभरि लाइची तजि दुई पैसा डारि।
पत्रज पैसा तीन भरि गजकेशर पुनि चारि ॥
मिरच पांच पैसा भरि पीपरी छः भरि आन।
सोंठ सात पैसा भरि वाटि औषधि छान ॥
सवसम मिसरी डारि के देय रोगी को खान।
असं अरुचि हिय रोग पुनि गुलमशूल की हानि ॥

१०. अजीर्ण की दवा—

जवाखार सम सोंठि पुनि प्रात घीउ सो खाय।
भूख लगे अतिरुचि बढ़े अन्न तुरत पचि जाय ॥

पुनश्च—अभया सोंचर सोंठी पुनि पीपरी वायविडंग।
हिंगु शतावरि लिजिए अरू अजमोदा संग ॥
मोथा डारिमजीठ पुनि करि चूरन नित खाय। शीतल जल सो
टंक दो अन्तशूल पचि जाय ॥

मृगी रोग की दवा—

ब्राह्मी सोठ चिरयता पुष्कर मूल कचूर।
दारु हल्दी देवदारु वच मोथा पीपरामूल॥
अभयारोहिस शिरसफल कूट क्वाथ सन जानि।
अपसमार उन्माद भ्रम रोग विसूचि हानि॥

पुनश्च—सहद संग वच लीजिए खुरासन दो टंक।
दूध भात पथ दीजिए, मृगी न रहे अंग॥

पुनश्च—वचरस ब्राह्मी कूटीसम शंखपुष्पी के संग।
गाय घी संग खाइये मृगी रोग को भंग॥

बवासीर नासक मन्त्र—

ॐ काली कराली महाकाली मातरोवहुभिगंच्छ
यत्किंचिद्विहितंतत्कुरु स्वाहा

इस मन्त्र को ७ बार पढ़कर प्रातः काल जल पीवे तो बवासीर दूर हो।

बिच्छू की दवा—

इन्द्रायिण की जड़, जायफल, हरताल तीनो सम्भाग घिस करके लगावें।

सर्व रोग नाशक दवा—

सोंठ, सुहागा, सैन्धवनमक, सिंगरप, वायविडन, हल्दी, मिर्च, हिंगु, चित्रक, जमालगोटा, सभी दवाये बराबर लेकर चूर्ण करके २ रती की गोली बना ले, सुबह शाम ठंडे जल से ले। कफ खाँसी ८४ प्रकार के बात रोग १५ दिन में समाप्त हो जायेगा।

चौपाई—

पुष्य नक्षत्र जहि दिन आवे।
तिथि अष्ठमी बार रवि भावे।
कण्टकारी जड़ ले मंगाय।
पुनंनवाके जड़ ताहि मिलावे।
सफेद मुंजा मूल सो आन।
धूप दीप दै के आन।
बछावियानी गाय जो होय।
ताके दूध मे पिये कोई।
स्नान दिवस पीवे नारी, हरे रोग सब गर्भ को धारी
होय पुत्र महा अलवेल, भाषे भक्त सन्त वचन।

गण्डमाल (घेघा) की दवा—

सफेद घुघुची की जड़ या फल को पानी में महिन बांटकर चौगुने सरसों के तेल मे पकाकर तेल सिद्धकरके मालिस करें। पुनश्च–विष्णु क्रान्ता की जड़ या इन्द्रायिण की जड़ (नारून) गोमूत्र मे पीसकर छ, मासा पीवे तो पुरानी गण्ड-माला नाश हो जाती है। अथवा तुम्बीकास्वरस या लजावन्ती का रस २ तोला पीवें तो गण्डमाल, गलगण्ड, अंडवृद्धि, गाँठ इन सब रोग को नाशै।

नाक से खून गिरने की दवा—

मीठे अंगूर के रस नाक मे डालने से खून बन्द हो जाता है। या धनिया के पत्ते मलकर नाक मे डालें।

गण्डमाल की पुन दवा—

सफेद विष्णुकान्ता की जड़ को छमासा १ तोला घी के साथ ले। अथवा जलकुम्भी सेंधा नमक पीपरी सम्भाग लेकर १ तोला १ महिने तक खाय।

सफेद दाग—

बाकुची १ तोला हरताल ४ तोला लेकर गोमूत्र मे पीसकर लेप करें या आँवला और कत्था दोनों को सम्भाग लेकर २ तोला का काढ़ा बना करके शहद मिलाकर पीयें।

२—अर्कमूल, गन्धक, हरताल, कुटकी, रजनि, सम्भाग लेकर गोमूत्र में ७ दिन तक लेप करें।

३—खैर, आँवले क्वाथ करि डारिवावची देय एक मे मिलाकर लेप करें।

अमृत प्रयोग प्रदरादि रोगों पर—

गन्धापिरोजा का शत ९ तोला, राल ५ तोला, मस्तकी ४, तो वबूर के गोंद ३ तोला इसवगोल की भूसी २ तोला बड़ी इलाइची १ तोला। मिसरी २४ तोला, सबको कूटकरके चूर्ण करके दूध से खाये। सुजाक, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, पत्थरी, खून गिरना, चिल्क, अतितृखा पित्तज्वर हैजा प्रदर १८ सोमरोग नाश होय।

पागल कुत्ते के काटने पर दवा—

पागल कुत्ते के काटे घाव में प्याज नमक अखरोट समभाग लेकर पीस ले शहद में मिलाकर लेप करे। कपड़े की पट्टी बांध दे पागल कुत्ते का विष दूर होगा।

लकवा की दवा—

अखरोट के तेल के बूंदे नाक मे डालने से लकवा में रोगी को लाभ होता है।

२—राई ६ मासे अकरकरा ५ मांसे शहद ६ मासे एक मे मिलाकर दिन में ४-५ बार जीभ पर मलें। गर्म दूध पीवें या लहसुन १ तोला २ तोलातिल के तेल में पका कर खावें गर्म दूध पीवें।

बदहजमी—

६ ग्राम पुदीना ३ ग्राम छोटी लाची दोनों को आधा किलो पानी में उबाल कर थोड़ा-थोड़ा पीलाने से अपाचन पेट दर्द हैजा अधिक प्यास मिचली आदि दूर हो।

चेहरे का धब्बा—

पुदीनाको पीसकर लगावे। आँख के नीचे का काला घेरा ठीक होता है। तील के फूल या पेठे का फूल मले।

विच्छू के डसने पर

विच्छू या विषैले जीव के डंक पर लाभ होता हैं, घाव के कीढ़े में पुदिना अर्क निकालकर टपकावे। पित्त में—हरा पोदीना १० ग्राम, लाल शक्कर २० ग्राम दोनों पानी में उबालकर पीवेतो पित्त दूर होता है।

हृदय रोग की दवा

पीपर, सोठ, अनारदाना, काला नमक, भुनिहींग समभाग लेकर नीबू के रस में खरल कर वेर के समान गोली बाध छाया में सूखा दे। १ गोली गर्म जल से ले, बहुत फायदा होगा।

श्वेत दाग—

आक के जड़, आँवलासार गन्धक, हरताल कुटकी हल्दी, समभाग लेकर पीसकर गोमूत्र में लेप करे।

बाल काला करें

१. नीबू का रस और आँवला पानी में घिसकर मलें। तिल का तेल मले और धोवे।
२. काला दाना पाती में पीसकर लगावें।
३. हाथी दाँत का चूर्ण, राख या भस्म बनाकर बकरी के दूध में मीलाकर मले।

स्त्रि के गर्भ रहने की दवा

गाजर के बीज २ तोला नागवेली १० तोला दोनों को चूर्ग बनाकर बछड़े वाली गाय के दूध के साथ खाय, परहेज-खट्टा, तीता, गुड़ तेल बर्जित है।

प्रदर रोग

मुलेठी ३ तोला नागकेसर ५ तोला, राल २ तोला, मिश्री १० तोला सबको चूर्ण करके सात मासा, गाय के दूध के साथ खाय।

शरीर के सूजन पर—

अन्नास का एक फल प्रतिदिन खाय १५–२० दिन में पूरा लाभ होता है।

दन्त रोग—

अमरुद के नरम पत्ते चबावें कुछ देर में थूकता जाय।

गठिया का दर्द—

राई का तेल मालिस करे तो गठिया पसलियों का दर्द लकवा दूर हो।

कान का दर्द—

अजवाइन को तिल के तेल में पकाकर छान ले गुनगुनाकर २–३ बूंद कान मे टपका दे। कान का दर्द ठीक हो जायेगा।

वमन—

धनियाँ के हरे पत्ते का रस थोड़ी-थोड़ी देर में एक-एक घूंट पिलावें।

अपस्मार मृगी की दवा—

इसमें स्मरण कम होता है, बात, पीत, कफ तीनों दोष से होता है। १५ दिन में होगा तो बात का १२ दिन में कफ का महिना दिन में पीत का।

दवा—

(१) ब्राह्मी बूटी का सोरस १ तोला शहद १ तोला मिलाकर ३ दिन पीवें।

(२) सरसों ६ मासा पीसकर खाय और ६ मासा गोमूत्र में पीसकर मालिस करें।

(३) कड़वी तूंबी पीसकर ४–५ बूंद नाक में टपकावें।

(४) रीठा बारिक पीसकर छान करके नाक में नस ले।

(५) अकरकरा ५ तोला, गन्ने का सिरका ५ तोला, शहद में मिलाकर कढ़ाई में डालकर आग पर गर्म करके गाढ़ा हो जाय तो, शीशी में भर दें। प्रतिदिन गर्म जल से ६ मांसा लें।

(६) २१ जायफल का माला बनाकर गले में धारण करें।

(७) असली हींग की पोटली बनाकर गले में धारण करें।

बात पन्नग बटी—

धतूरे के फल एक सेर, आधा सेर अजवाइन, मिट्टी की कढ़ाई में डाल दें। उसमें पहले धतूरें की आधा सेर फल रखें। फिर से सोंठ आधा सेर रखें। सोंठ के ऊपर अजवाइन आधा सेर रखें, फिर धतूरे का फल आधा सेर रखें। कढ़ाई का मुंह बन्द करके मन्द-मन्द आच में दोपहर तक चुरावें, फिर कढ़ाई से सोंठ निकालकर रख ले और सब सोंठ को छाया में सुखा दें बारीक पीस ले। सइजन के रस में घोटकर चने बराबर गोली बना ले। एक गोली प्रतिदिन सबेरे खाय। ८४ प्रकार के वायु विकार दूर होता है।

सिर दर्द—

एक मीठा सेव लेकर काट कर नमक मिलाकर सुबह में १५ दिन खाने से सिर दर्द ठीक हो जाता है।

दिमाग की कमजोरी—

भोजन के १० मिनट पहले १ मीठा सेव छिलका सहित खाय।

गैस के लिये—

एक मीठा सेव लेकर १ तोला लौंग चुभा ले। १० दिन बाद निकाला ले, ३ लौंग रोज खाय। साथ में चार मीठा सेव लेकर खाय।

पेट के कीड़े के लिए—

मीठा सेव रात्रि में खाकर सो जावें। कीड़े मर जायेंगे।

ताकत के लिए—

१ पका हुए सेव में पूरा लौंग चुका दे। चीनी के बर्तन में ८ दिन रख दें। फिर लवंग को निकालकर शीशी में रख लें। बारीक पीसकर सुबह शाम दूध के साथ ले बल अधिक बढ़ेगा।

दिल की कमजोरी—

१ छटांक सेव का मुरब्बा, चाँदी का वर्क लगाकर सुबह-शाम खाय।

इति औषधि विवरण।